18-01-2005

सेकण्ड में देहभान से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो और मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बनो

आज बापदादा चारों ओर के लक्की और लवली बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा स्नेह में समाया हुआ है। यह परमात्म स्नेह अलौकिक स्नेह है। इस स्नेह ने ही बच्चों को बाप का बनाया है। स्नेह ने ही सहज विजयी बनाया है। आज अमृतवेले से चारों ओर के हर बच्चे ने अपने स्नेह की माला बाप को पहनाई क्योंकि हर बच्चा जानता है कि यह परमात्म स्नेह क्या से क्या बना देता है। स्नेह की अनुभूति अनेक परमात्म खजाने के मालिक बनाने वाली है और सर्व परमात्म खजानों की गोल्डन चाबी बाप ने सर्व बच्चों को दी है। जानते हो ना! वह गोल्डन चाबी क्या है? वह गोल्डन चाबी है –''मेरा बाबा''। मेरा बाबा कहा और सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न बन गये, सर्व शक्तियों से समर्थ बन गये, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें बन गये। ऐसे सम्पन्न आत्माओं के दिल से क्या गीत निकलता? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु हम ब्राह्मणों के खजाने में।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हो, आज सभी बच्चों को विशेष आदि देव ब्रह्मा बाप ज्यादा स्मृति में आ रहा है। ब्रह्मा बाप आप ब्राह्मण बच्चों को देख हर्षित होते हैं, क्यों? हर ब्राह्मण बच्चा कोटों में कोई भाग्यवान बच्चा है। अपने भाग्य को जानते हो ना! बापदादा हर बच्चे के मस्तक में चमकता हुआ भाग्य का सितारा देख हर्षित होते हैं। आज का स्मृति दिवस विशेष बापदादा ने विश्व सेवा की जिम्मेवारी का ताज बच्चों को

अर्पण किया। तो यह स्मृति दिवस आप बच्चों के राज्य तिलक का दिवस है। बच्चों के विशेष साकार स्वरूप में विल पावर्स विल करने का दिन है। सन शोज़ फ़ादर इस कहावत को साकार करने का दिवस है। बापदादा बच्चों के निमित्त बन नि:स्वार्थ विश्व सेवा को देख खुश होते हैं। बापदादा करावनहार हो, करनहार बच्चों के हर कदम को देख खुश होते हैं क्योंकि सेवा की सफलता का विशेष आधार ही है – **करावनहार बाप मुझ करनहार आत्मा द्वारा करा रहा है।** मैं आत्मा निमित्त हूँ क्योंकि निमित्त भाव से निर्मान स्थिति स्वत: हो जाती है। मैं पन जो देहभान में लाता है वह स्वत: ही निर्मान भाव से समाप्त हो जाता है। इस ब्राह्मण जीवन में सबसे ज्यादा विघ्न रूप बनता है तो देहभान का मैं-पन। करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहा हूँ, तो सहज देह-अभिमान मुक्त बन जाते हैं और जीवनमुक्ति का मज़ा अनुभव करते हैं। भविष्य में जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी है लेकिन अब संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अलौकिक आनंद और ही अलौकिक है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - कर्म करते कर्म के बंधन से न्यारे। जीवन में होते कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे। इतने बड़े परिवार की जिम्मेवारी, जीवन की जिम्मेवारी, योगी बनाने की जिम्मेवारी, फरिश्ता सो देवता बनाने की जिम्मेवारी होते हुए भी बेफिकर बादशाह। इसी को ही जीवनमुक्त स्थिति कहा जाता है। इसीलिए भक्ति मार्ग में भी ब्रह्मा का आसन कमल पुष्प दिखाते हैं। कमल आसनधारी दिखाते हैं। तो आप सभी बच्चों को भी संगम पर ही जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही है। बापदादा से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है। इस समय ही मास्टर मुक्ति जीवनमुक्ति दाता बनना है। बने हैं और बनना है। **मुक्ति जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकण्ड में देह-भान मुक्त बन जायें।** इस अभ्यास की अभी आवश्यकता है। मन के ऊपर ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो, जैसे यह स्थूल कर्मेन्द्रियां हाथ हैं,

पांव हैं, उसको जब चाहो जैसे चाहो वैसे कर सकते हो, टाइम लगता है क्या! अभी सोचो हाथ को ऊपर करना है, टाइम लगेगा? कर सकते हो ना! अभी बापदादा कहे हाथ ऊपर करो, तो कर लेंगे ना! करो नहीं, कर सकते हो। ऐसे मन के ऊपर इतना कन्ट्रोल हो, जहाँ एकाग्र करने चाहो, वहाँ एकाग्र हो जाए। मन चाहे हाथ, पांव से सूक्ष्म है लेकिन है तो आपका ना! मेरा मन कहते हो ना, तेरा मन तो नहीं कहते हो ना! तो जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियां कन्ट्रोल में रहती हैं, ऐसे ही मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हों तब कहेंगे नम्बरवन विजयी। साइन्स वाले तो राकेट द्वारा वा अपने साधनों द्वारा इसी लोक तक पहुंचते हैं, ज्यादा में ज्यादा ग्रह तक पहुंचते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें तीनों लोक तक पहुंच सकते हो। सेकण्ड में सूक्ष्म लोक, निराकारी लोक और स्थूल में मधुबन तक तो पहुंच सकते हो ना! अगर मन को आर्डर करो मधुबन में पहुंचना है तो सेकण्ड में पहुंच सकते हो? तन से नहीं, मन से। आर्डर करो सूक्ष्मवतन जाना है, निराकारी वतन में जाना है तो तीनों लोकों में जब चाहे मन को पहुंचा सकते हो? है प्रैक्टिस? अभी इस अभ्यास की आवश्यकता ज्यादा है। बापदादा ने देखा है अभ्यास तो करते हो लेकिन जब चाहे, जितना समय चाहे एकाग्र हो जाए, अचल हो जाए, हलचल में नहीं आये, इसके ऊपर और अटेन्शन। जो गायन है मन जीत जगत जीत, अभी कभी-कभी मन धोखा भी दे देता है।

तो बापदादा आज के समर्थ दिवस पर यही समर्थी विशेष अटेन्शन में दे रहे हैं। हे स्वराज्य अधिकारी बच्चे, अभी इस विशेष अभ्यास को चलते-फिरते चेक करो क्योंकि समय प्रमाण अभी अचानक के खेल बहुत देखेंगे। इसके लिए एकाग्रता की शक्ति आवश्यक है। एकाग्रता की शक्ति से दृढ़ता की शक्ति भी सहज आ जाती है और दृढ़ता सफलता स्वत: प्राप्त कराती है। तो विशेष समर्थ दिवस पर इस समर्थी का अभ्यास विशेष

अटेन्शन में रखो। इसीलिए भक्ति मार्ग में भी कहते हैं मन के हारे हार, मन के जीते जीत। तो जब मेरा मन कहते हो, तो मेरे के मालिक बन शक्तियों की लगाम से विजय प्राप्त करो। इस नये वर्ष में इस होमवर्क पर विशेष अटेन्शन! इसी को ही कहा जाता है योगी तो हो लेकिन अभी प्रयोगी बनो।

बाकी आज के दिन की स्नेह की रूहरिहान, स्नेह के उल्हनें और समान बनने के उमंग-उत्साह तीनों प्रकार की रूहरिहान बापदादा के पास पहुंची है। चारों ओर के बच्चों की स्नेह भरी यादें, स्नेह भरा प्यार बापदादा के पास पहुंचा। पत्र भी पहुंचे तो रूहरिहान भी पहुंची, सन्देश भी पहुंचे, बापदादा ने बच्चों का स्नेह स्वीकार किया। दिल से रिटर्न में यादप्यार भी दिया। दिल की दुआयें भी दी। एक-एक का नाम तो नहीं ले सकते हैं ना। बहुत हैं। लेकिन कोने-कोने, गांव-गांव, शहर-शहर सब तरफ के बच्चों का, बांधेलियों का, विलाप करने वालों का सबका यादप्यार पहुंचा, अब बापदादा यही कहते – **स्नेह के रिटर्न में अब अपने आपको टर्न करो, परिवर्तन करो। अब स्टेज पर अपना सम्पन्न स्वरूप प्रत्यक्ष करो।** आपकी सम्पन्नता से दु:ख और अशान्ति की समाप्ति होनी है। अभी अपने भाई-बहिनों को ज्यादा दु:ख देखने नहीं दो। इस दु:ख, अशान्ति से मुक्ति दिलाओ। बहुत भयभीत हैं। क्या करें, क्या होगा..., इस अंधकार में भटक रहे हैं। अब आत्माओं को रोशनी का रास्ता दिखाओ। उमंग आता है? रहम आता है? अभी बेहद को देखो। बेहद में दृष्टि डालो। अच्छा। होमवर्क तो याद रहेगा ना! भूल नहीं जाना। प्राइज़ देंगे। जो एक मास में मन को बिल्कुल कन्ट्रोलिंग पावर से पूरा मास जहाँ चाहे, जब चाहे वहाँ एकाग्र कर सके, इस चार्ट की रिजल्ट में इनाम देंगे। ठीक है? कौन इनाम लेंगे? पाण्डव, पाण्डव पहले। मुबारक हो पाण्डवों को और शक्तियां? ए वन। पाण्डव नम्बरवन तो शक्तियां ए वन। शक्तियां ए वन नहीं होंगी तो

पाण्डव ए वन। अभी थोड़ी रफ्तार तीव्र करो। आराम वाली नहीं। तीव्र गति से ही आत्माओं का दु:ख दर्द समाप्त होगा। रहम की छत्रछाया आत्माओं के ऊपर डालो। अच्छा।

सेवा का टर्न – तामिलनाडु, ईस्टर्न और नेपाल

जिनका टर्न है वह सब उठो। बहुत बड़ा ग्रुप है (5000 हैं) 5 हजार सेवा का गोल्डन चांस लेने वाले। अच्छी चतुराई की है। 15 दिन सेवा करेंगे और 21 जन्म पुण्य का खाता जमा करेंगे। होशियार हो गये ना! अच्छा है। ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्षता की भूमि तो कलकत्ता ही है ना! तो कलकत्ता वाले हाथ उठाओ। अच्छा - कलकत्ता वालों की विशेष जिम्मेवारी है, बतायें। अच्छा - ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि कलकत्ता है, तो बापदादा के प्रत्यक्ष होने की भूमि कौन सी होगी? कलकत्ता होगी? क्या करेंगे? बड़ा प्रोग्राम तो कर लिया। अभी क्या करेंगे? कोई कमाल करके दिखाओ। जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो। सभी कलकत्ता की भूमि को प्रणाम करें, वाह! कलकत्ता निवासी वाह! ऐसा कोई कमाल का प्रोग्राम बनाओ। नया कुछ बनाओ। मेगा प्रोग्राम अभी बहुत हो गये। अभी कोई नया प्रोग्राम बनाओ। अच्छा है, बापदादा बच्चों को पुण्य का खाता जमा करने की विधि देख करके खुश होते हैं। यह भी गोल्डन चांस है। अच्छा है। नेपाल और तामिलनाडु भी है, देखो कलकत्ता में जब प्रवेशता हुई तो नेपाल का कनेक्शन तो पहले ही था। इसलिए नेपाल को भी कमाल करनी पड़ेगी। नेपाल वाले उठो। नेपाल वालों को राज्य अधिकारी, राजवंशी आत्माओं का कल्याण ज्यादा करना है। कोई पुराने राज वंशावली से मधुबन तक आये हैं? अभी उन्हों को और ज्यादा नजदीक लाओ। कनेक्शन तो अच्छा है लेकिन अभी रिलेशन में लाओ। अच्छा है। नेपाल भी सेवा तो अच्छी कर रहे हैं। अच्छा। नेपाल वालों को मुबारक है और सेवा

बढ़ायेंगे। राज वंशावली को मधुबन तक लायेंगे। अच्छा। तामिलनाडु वाले उठो – बहुत पीछे बैठे हैं। हाथ हिलाओ। तामिलनाडु क्या करेगा? सेवा का विस्तार तो अच्छा किया है। रोजी बच्ची को याद तो करते हैं ना! फाउण्डेशन अच्छा डाला है। अभी उसको आप सभी निमित्त बन और बढ़ा रहे हैं। बढ़ा रहे हो ना! क्या नहीं कर सकते हो। जो चाहो शुभ संकल्प करो, सब कर सकते हो। हिम्मत आपकी और मदद बाप की। हिम्मत वाले तो हैं। हिम्मत अच्छी है, मदद भी बाप की है और हिम्मत करेंगे तो और मदद मिलती रहेगी। बाकी रोजी बच्ची के बाद अच्छा सम्भाल लिया और आगे भी आपस में मिलकर रोजी बच्ची को रिटर्न देंगे। अच्छा फाउण्डेशन डाला है। सब खुश हैं? जो सदा खुश हैं, वह हाथ उठाओ। खुश नहीं, सदा खुश? अच्छा है। खुश रहना और खुशी बांटना। अच्छा। आसाम है, उड़ीसा है, बिहार भी है, बंगला देश भी है, तो इतने सब इकट्ठे हो। उड़ीसा वाले भी अच्छी सेवा कर रहे हैं, बिहार वाले भी कर रहे हैं तो इस ज़ोन को नम्बरवन जाना है। कितने हैण्ड्स होंगे। 6-7 स्थान के हैण्ड्स, तो कितने हैण्ड्स हो गये। तो बापदादा राइट हैण्ड्स को देख करके खुश हैं। जितना बड़ा ज़ोन है, इतनी बड़ी कमाल करके दिखाना। आप तो 6-7 जगह पर आवाज फैला दो तो आवाज आपेही फैल जायेगा। बंगाल से भी आवाज हो, उड़ीसा से भी आवाज हो, नेपाल से भी आवाज हो, आसाम से भी आवाज हो, तो सब कोने से आवाज आये, तो कितना बड़ा आवाज हो जायेगा। कमाल करो कुछ। सबसे बड़े ते बड़ा ज़ोन, इसमें इतने स्टेट इकट्ठे हैं। महाराष्ट्र, गुजरात में भी हैं, तीनों ही स्थान बड़े हैं, अभी कमाल करके दिखाओ।

एज्युकेशन विंग

एज्युकेशन वालों ने नये प्लैन कोई बनाये हैं? नया कुछ बनाया है?

अच्छा है। एज्युकेशन तो विशेष है। एज्युकेशन में अगर आपने कोई भी स्थान में कोई भी एक क्लास का क्लास परिवर्तन करके दिखाया तो गवर्मेन्ट को कितनी खुशी होगी। जैसे गांव वाले कोई गांव को अपनाते हैं ना, वैसे आप किसी भी युनिवर्सिटी में या कालेज में, स्कूल में क्लास, पूरे क्लास को चेंज करके दिखाओ, मैजारिटी। चलो कुछ थोड़े रह जाएं, वह बात दूसरी है लेकिन कोई क्लास प्रैक्टिकल में परिवर्तन करके दिखाओ तो गवर्मेन्ट तक आवाज जायेगा। बहुत अच्छा किया है, मुबारक हो। (प्लैन सुनाया)

बहुत अच्छा इनएडवांस मुबारक। अच्छा है देखो (साउथ गुजरात के वाइसचांसलर से) यह एक निमित्त बना, अनेक आत्माओं के प्रति तो आपको कितनी दुआयें मिलेंगी। जो स्टूडेन्ट परिवर्तन होंगे उसकी दुआयें आपको शेयर में मिलेंगी। तो आप शेयर होल्डर हो गये। परमात्मा के शेयर होल्डर, वह शेयर नहीं, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। अच्छा निमित्त बना है। अभी कमाल करके दिखाओ। कोई क्लास का क्लास मैजारिटी परिवर्तन करके दिखाओ। अच्छा है, आपस में राय करते आगे बढ़ते चलो। जो भी कोई सैलवेशन चाहिए, आपस में मीटिंग करके कर लो। होगा, करना ही है, बढ़ना ही है। अच्छा।

डबल विदेशी

बापदादा कहते हैं डबल विदेशी अर्थात् डबल पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वाले। जैसे डबल विदेशी टाइटल है ना, निशानी है ना आपकी। ऐसे ही डबल विदेशी नम्बरवन लेने में भी डबल रफ्तार से आगे बढ़ने वाले। अच्छा है, हर ग्रुप में बापदादा डबल विदेशियों को देख करके खुश होते हैं क्योंकि भारतवासी आप सबको देख करके खुश होते हैं। बापदादा भी विश्व कल्याणकारी टाइटल को देख करके खुश होते हैं। अभी डबल विदेशी

क्या प्लैन बना रहे हो? बापदादा को खुशी हुई, अफ्रीका वाले तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो आप सभी भी आस-पास जो आपके भाई बहन रह गये हैं, उन्हों को सन्देश देने का उमंग-उत्साह रखो। उल्हना नहीं रह जाए। वृद्धि हो रही है और होती भी रहेगी लेकिन अभी उल्हना पूरा करना है। यह विशेषता तो डबल विदेशियों की सुनाते ही हैं कि भोले बाप को राज़ी करने का जो साधन है – सच्ची दिल पर साहेब राजी, वह डबल विदेशियों की विशेषता है। बाप को राज़ी करना बहुत होशियारी से आता है। सच्ची दिल बाप को क्यों प्रिय लगती है? क्योंकि बाप को कहते ही हैं सत्य। गॉड इज ट्रुथ कहते हैं ना! तो बापदादा को साफ दिल, सच्ची दिल वाले बहुत प्रिय हैं। ऐसे है ना! साफ दिल है, सच्ची दिल है। सत्यता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। इसलिए डबल विदेशियों को बापदादा सदा याद करते हैं। भिन्न-भिन्न देश में आत्माओं को सन्देश देने के निमित्त बन गये। देखो कितने देशों के आते हैं? तो इन सभी देशों का कल्याण तो हुआ है ना! तो बापदादा, यहाँ तो आप निमित्त आये हुए हैं लेकिन चारों ओर के डबल विदेशी बच्चों को, निमित्त बने हुए बच्चों को मुबारक दे रहे हैं, बधाई दे रहे हैं, उड़ते रहो और उड़ाते रहो। उड़ती कला सर्व का भला हो ही जाना है। सभी रिफ्रेश हो रहे हैं? रिफ्रेश हुए? सदा अमर रहेगी या मधुबन में ही आधा छोड़कर जायेंगे? साथ रहेगी, सदा रहेगी? अमर भव का वरदान है ना! तो जो परिवर्तन किया है वह सदा बढ़ता रहेगा। अमर रहेगा। अच्छा। बापदादा खुश है और आप भी खुश हैं औरों को भी खुशी देना। अच्छा।

ज्ञान सरोवर को 10 साल हुआ है

अच्छा। अच्छा है, ज्ञान सरोवर ने एक विशेषता आरम्भ की, जबसे ज्ञान सरोवर शुरू हुआ है तो वी.आई.पी., आई.पी. के विशेष विधि पूर्वक प्रोग्राम्स शुरू हुए हैं। हर वर्ग के प्रोग्राम्स एक दो के पीछे चलते रहते हैं।

और देखा गया है कि ज्ञान सरोवर में आने वाली आत्माओं की स्थूल सेवा और अलौकिक सेवा बहुत अच्छी रुचि से करते हैं। इसलिए ज्ञान सरोवर वालों को बापदादा विशेष मुबारक देते हैं कि सेवा की रिजल्ट से सब खुश होकर जाते हैं और खुशी खुशी से और साथियों को साथ ले आते हैं। चारों ओर आवाज फैलाने के निमित्त ज्ञान सरोवर बना है। तो मुबारक है और सदा मुबारक लेते रहना। अच्छा।

अभी एक सेकण्ड में मन को एकाग्र कर सकते हो? सब एक सेकण्ड में बिन्दु रूप में स्थित हो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा – ऐसा अभ्यास चलते फिरते करते रहो।

चारों ओर के स्नेही, लवलीन आत्माओं को, सदा रहमदिल बन हर आत्मा को दु:ख अशान्ति से मुक्त करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा अपने मन, बुद्धि, संस्कार को कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा कन्ट्रोल में रखने वाले महावीर आत्माओं को, सदा संगमयुग के जीवनमुक्त स्थिति को अनुभव करने वाले बाप समान आत्माओं को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

मोहिनी बहन से

यह भी अपने शरीर को चलाना सीख गई है। चलता रहेगा।

शान्तामणि दादी से

यह भी बहुत अच्छा चला रही है।

सभी दादियों को देखते हुए

आप आदि रत्नों की शोभा है। हाज़िर होना ही शोभा है। अगर कोई आप में से हाज़िर नहीं होता तो खाली-खाली लगता है। आदि रत्नों की

यह विशेषता है। जहाँ भी जायेंगे, सबको खुशी हो जाती है। बोलो, नहीं बोलो सिर्फ हाजिर होना ही खुशी है। तबियत को तो चलाना आ गया है। आ गया है ना? सभी की तबियतें तो थोड़ा बहुत खिटखिट करती हैं। फिर भी चलाना आ गया है।

दादी जी से

बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। बापदादा देखते हैं शरीर का नॉलेज भी आ गया है। कैसा भी शरीर हो लेकिन चलाना आ गया है, यह बापदादा देखते खुश होते हैं। आदि रत्न कम नहीं हैं। आदि रत्न हैं ना तो एक एक आदि रत्न की विशेषता है।

निर्मलशान्ता दादी से

बहुत ही अच्छा पार्ट बजा रही है। दर्द तो नहीं पड़ता ना। (बाबा को मिलकर दर्द होगा तो भी चला जायेगा) आपका नाम सुनकर सभी खुश हो जाते हैं, परदादी। तो परदादी का नाम सुनके खुश हो जाते हैं। बहुत अच्छा। अच्छा ठीक है ना, तबियत अच्छी है। बहुत अच्छा। अभी तो ठण्डी को जीत लिया। विजयी बन गई। बहुत अच्छा। ओम् शान्ति।

सेवा करते उपराम और बेहद वृत्ति द्वारा एवररेडी बन, ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनो

आज ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर अपने चारों ओर के कोटों में कोई और कोई में भी कोई बच्चों के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। इतना विशेष भाग्य और किसी को भी मिल नहीं सकता। हर एक बच्चे की विशेषता को देख हर्षित होते हैं। जिन बच्चों ने बापदादा से दिल से सम्बन्ध जोड़ा उन हर एक बच्चों में कोई न कोई विशेषता जरूर है। सबसे पहली विशेषता साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान ''मेरा बाबा'' मान लिया। यह पहचान सबसे बड़ी विशेषता है। दिल से माना मेरा बाबा, बाप ने माना मेरा बच्चा। जो बड़े-बड़े फिलासाफर, साइंसदान, धर्मात्मा नहीं पहचान सके, वह साधारण बच्चों ने पहचान अपना अधिकार ले लिया। कोई भी आकर इस सभा के बच्चों को देखे तो समझ नहीं सकेंगे कि इन भोली भोली माताओं ने, इन साधारण बच्चों ने इतने बड़े बाप को पहचान लिया! तो यह विशेषता - पहचानना, बाप को पहचान अपना बनाना, यह आप कोटों में कोई बच्चों का भाग्य है। सभी बच्चों ने जो भी सम्मुख बैठे हैं वा दूर बैठे सम्मुख अनुभव कर रहे हैं, तो सभी बच्चों ने दिल से पहचान लिया है! पहचान लिया है कि पहचान रहे हैं? जिसने पहचान लिया है वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) पहचान लिया? अच्छा। तो बापदादा पहचानने के विशेषता की हर एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं। वाह भाग्यवान बच्चे वाह! पहचानने का तीसरा नेत्र प्राप्त कर लिया। बच्चों के दिल का गीत बापदादा सुनते रहते हैं, कौन सा गीत? पाना था वो पा लिया। बाप भी कहते ओ लाडले बच्चे, जो बाप से लेना था वो ले लिया। हर एक

बच्चा अनेक रूहानी खजानों के बालक सो मालिक बन गये।

तो आज बापदादा खजानों के मालिक बच्चों के खजानों का पोतामेल देख रहे थे। बाप ने खजाना तो सबको एक जैसा, एक जितना दिया है। किसको पदम, किसको लाख नहीं दिया है। लेकिन खजानों को जानना और प्राप्त करना, जीवन में समाना इसमें नम्बरवार हैं। बापदादा आजकल बार-बार भिन्न-भिन्न प्रकार से बच्चों को अटेन्शन दिला रहे हैं - समय की समीपता को देख अपने आपको सूक्ष्म विशाल बुद्धि से चेक करो क्या मिला; क्या लिया और निरन्तर उन खजानों में पलते रहते हैं? चेकिंग बहुत आवश्यक है क्योंकि माया वर्तमान समय भिन्न-भिन्न रॉयल प्रकार के अलबेलापन और रॉयल आलस्य के रूप में ट्रायल करती रहती है। इसलिए अपनी चेकिंग सदा करते चलो। इतने अटेन्शन से, अलबेले रूप से चेकिंग नहीं - बुरा नहीं किया, दु:ख नहीं दिया, बुरी दृष्टि नहीं हुई, यह चेकिंग तो हुई लेकिन अच्छे ते अच्छा क्या किया? सदा आत्मिक दृष्टि नेचरल रही? या विस्मृति स्मृति का खेल किया? कितनों को शुभ भावना, शुभ कामना, दुआयें दी? ऐसे जमा का खाता कितना और कैसे रहा? क्योंकि अच्छी तरह से जानते हो कि जमा का खाता सिर्फ अभी कर सकते हैं। यह समय, फुल सीजन खाता जमा करने की है। फिर सारा समय जमा प्रमाण राज्य भाग्य और पूज्य देवी-देवता बनने का है। जमा कम तो राज्य भाग्य भी कम और पूज्य बनने में भी नम्बरवार होता है। जमा कम तो पूजा भी कम, विधिपूर्वक जमा नहीं तो पूजा भी विधिपूर्वक नहीं, कभी-कभी विधिपूर्वक है तो पूजा भी और पद भी कभी-कभी है। इसलिए बापदादा का हर एक बच्चे से अति प्यार है, तो बापदादा यही चाहते कि हर एक बच्चा सम्पन्न बने, समान बने। सेवा करो लेकिन सेवा में भी उपराम, बेहद।

बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चों की योग अर्थात् याद की सबजेक्ट

में रुचि वा अटेन्शन कम होता है, सेवा में ज्यादा है। लेकिन बिना याद के सेवा में ज्यादा है तो उसमें हद आ जाती है। उपराम वृत्ति नहीं होती। नाम और मान का, पोजीशन का मिक्स हो जाता है। बेहद की वृत्ति कम हो जाती है। इसलिए बापदादा चाहते हैं कि कोटों में कोई, कोई में कोई मेरे बच्चे अभी से एवररेडी हो जायें, क्यों? कई सोचते हैं समय आने पर हो जायेंगे। लेकिन समय आपकी क्रियेशन है, क्या क्रियेशन को अपना शिक्षक बनायेंगे? दूसरी बात जानते हो कि बहुतकाल का हिसाब है, बहुतकाल की सम्पन्नता बहुतकाल की प्राप्ति कराती है। तो अभी समय की समीपता प्रमाण बहुतकाल का जमा होना आवश्यक है फिर उल्हना नहीं देना कि हमने तो समझा बहुतकाल में समय पड़ा है। अभी से बहुतकाल का अटेन्शन रखो। समझा! अटेन्शन प्लीज़।

बापदादा यही चाहते कि एक बच्चे में भी किसी भी एक सबजेक्ट की कमी नहीं रह जाए। ब्रह्मा बाप से तो प्यार है ना! प्यार का रिटर्न तो देंगे ना! तो प्यार का रिटर्न है - अपनी कमी को चेक करो और रिटर्न दो, टर्न करो। अपने आपको टर्न करना, यह रिटर्न है। तो रिटर्न देने की हिम्मत है? हाथ तो उठा लेते हो, बहुत खुश कर लेते हो। हाथ देखकर तो बापदादा खुश हो जाते हैं, अभी दिल में पक्का-पक्का एक परसेन्ट भी कच्चा नहीं, **पक्का व्रत लो - रिटर्न देना ही है। अपने आपको टर्न करना है।**

अभी शिवरात्रि आ रही है ना! तो सभी बच्चों को बाप की जयन्ती सो अपनी जयन्ती मनाने का उमंग बहुत प्यार से आता है। अच्छे-अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं। सेवा के प्लैन तो बहुत अच्छे बनाते हो, बापदादा खुश होता है। लेकिन...., लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता है। जगत अम्बा माँ लेकिन शब्द को कहती थी, सिन्धी भाषा में, ले - किन, किन कहते हैं किचड़े को। तो लेकिन कहना माना कुछ न कुछ किचड़ा लेना। तो लेकिन

कहना अच्छा नहीं लगता है। कहना पड़ता है। जैसे और सेवा के प्लैन बनाये भी हैं और बनायेंगे भी लेकिन इस व्रत लेने का भी प्रोग्राम बनाना। रिटर्न देना ही है क्योंकि जब बापदादा या कोई पूछते हैं कैसे हैं? तो मैजारिटी का यही उत्तर आता है, हैं तो बहुत अच्छे लेकिन जितना बापदादा कहते हैं उतना नहीं। अभी यह उत्तर होना चाहिए जो बापदादा चाहते हैं वही हैं। नोट करो बापदादा क्या चाहता है, वह लिस्ट निकालो और चेक करो बापदादा यह चाहता है, वह है या नहीं है? दुनिया वाले आप पूर्वजों द्वारा मुक्ति चाहते हैं, चिल्ला रहे हैं, मुक्ति दो, मुक्ति दो। जब तक मैजारिटी बच्चे अपने पुराने संस्कार, जिसको आप नेचर कहते हो, नेचरल नहीं नेचर, उसमें कुछ भी थोड़ा रहा हुआ है, मुक्त नहीं हुए हैं तो सर्व आत्माओं को मुक्ति नहीं मिल सकती। तो बापदादा कहते हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता अभी अपने को मुक्त करो तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का द्वार खुल जाए। सुनाया था ना - गेट की चाबी क्या है? बेहद का वैराग्य। कार्य सब करो लेकिन जैसे भाषणों में कहते हो प्रवृत्ति वालों को कमल पुष्प समान बनो, ऐसे सब कुछ करते, कर्त्तापन से मुक्त, न्यारे, न साधनों के वश, न पोजीशन के। कुछ न कुछ मिल जाए यह पोजीशन नहीं आपोजीशन है माया की। न्यारे और बाप के प्यारे। मुश्किल है क्या, न्यारे और प्यारे बनना? जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। (किसी ने हाथ नहीं उठाया) किसको भी मुश्किल नहीं लगता है फिर तो शिवरात्रि तक सब सम्पन्न हो जायेंगे। जब मुश्किल नहीं है तो बनना ही है। ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। संकल्प में भी, बोल में भी, सेवा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सबमें ब्रह्मा बाप समान।

अच्छा जो समझते हैं, ब्रह्मा बाप और दादा, ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर, उससे मेरा बहुत-बहुत 100 परसेन्ट से भी ज्यादा प्यार है, वह हाथ उठाओ। खुश नहीं करना, सिर्फ अभी-अभी खुश नहीं करना। सभी ने

उठाया है। टी.वी. में निकाल रहे हो ना। शिवरात्रि पर यह टी.वी. देखेंगे और हिसाब लेंगे। ठीक है! जरा भी समानता में अन्तर नहीं हो। प्यार के पीछे कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है। दुनिया वाले तो अशुद्ध प्यार के पीछे जीवन भी देने के लिए तैयार हो जाते हैं। बापदादा तो सिर्फ कहते हैं, किचड़ा दे दो बस। अच्छी चीज़ नहीं दो, किचड़ा दे दो। कमजोरी, कमी क्या है? किचड़ा है ना! किचड़ा कुर्बान करना क्या बड़ी बात है! परिस्थिति समाप्त हो जाए, स्व-स्थिति श्रेष्ठ हो जाए। बताते तो यही हैं ना, क्या करें परिस्थिति ऐसी थी। तो हिलाने वाली पर-स्थिति का नाम ही नहीं हो, ऐसी स्व-स्थिति शक्तिशाली हो। समाप्ति का पर्दा खुले तो सब क्या दिखाई देवें? फरिश्ते चमक रहे हैं। सभी बच्चे चमकते हुए दिखाई दें। इसीलिए अभी पर्दा खुलना रुका हुआ है। दुनिया वाले चिल्ला रहे हैं, पर्दा खोलो, पर्दा खोलो। तो अपना प्लैन आप ही बनाओ। बना हुआ प्लैन देते हैं ना तो फिर कई बातें होती हैं। अपना प्लैन अपनी हिम्मत से बनाओ। दृढ़ता की चाबी लगाओ तो सफलता मिलनी ही है। दृढ़ संकल्प करते हो और बापदादा खुश होते हैं वाह बच्चे वाह! दृढ़ संकल्प किया लेकिन दृढ़ता में फिर थोड़ा-थोड़ा अलबेलापन मिक्स हो जाता है। इसीलिए सफलता भी कभी आधी, कभी पौनी परसेन्टेज में हो जाती है। जैसे प्यार 100 परसेन्ट है वैसे पुरुषार्थ में सम्पन्नता, यह भी 100 परसेन्ट हो। ज्यादा भले हो, कम नहीं हो। पसन्द है? पसन्द है ना? शिवरात्रि पर जलवा दिखायेंगे ना! बनना ही है। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! यह निश्चय रखो, हम ही थे, हम ही हैं और फिर भी हम ही होंगे। यह निश्चय विजयी बना देगा। पर-दर्शन नहीं करना, अपने को ही देखना। कई बच्चे रूहरिहान करते हैं ना, कहते हैं बस इसको थोड़ा सा ठीक कर दो, फिर मैं ठीक हो जाऊंगा। इसे थोड़ा बदली कर दो तो मैं भी बदली हो जाऊंगा लेकिन न वह बदलेगा न आप बदलेंगे। स्वयं को बदलेंगे तो वह भी बदल जायेगा। कोई भी आधार नहीं

रखो, यह हो तो यह हो। मुझे करना ही है। अच्छा - शिवरात्रि अभी आनी है ना!

अच्छा, जो पहले बारी आये हैं – वह हाथ उठाओ। तो जो पहली बारी आये हैं उन्हों के लिए विशेष बापदादा कहते हैं कि ऐसे समय पर आये हो जब समय बहुत कम बचा है लेकिन पुरुषार्थ इतना तीव्र करो जो लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट नम्बर आ जाओ क्योंकि अभी चेयर्स गेम चल रही है। अभी किसकी जीत है, वह आउट नहीं हुआ है। लेट तो आये हो लेकिन फास्ट चलने से पहुंच जायेंगे। सिर्फ अपने आपको अमृतवेले अमर भव का वरदान याद दिलाना। अच्छा – सभी कोई दूर से कोई नजदीक से आये हैं। बापदादा कहते हैं भले पधारे अपने घर में। संगठन अच्छा लगता है। टी.वी. में देखते हो ना, सभा फुल होने से कितना अच्छा लगता है। अच्छा। तो एवररेडी? एवररेडी का पाठ पढ़ेंगे ना! अच्छा।

सेवा का टर्न – इन्दौर ज़ोन

इन्दौर वाले उठो, हाथ हिलाओ। बहुत आये हैं। बहुत अच्छा। चांस लेना यह भी बहुत श्रेष्ठ तकदीर बनाना है। तकदीरवान हो जो चांस मिला भी है और लिया भी है। बापदादा तो सदा कहते हैं कि यह 15-20 दिन हर ज़ोन को जो गोल्डन चांस मिलता है, यह बहुत-बहुत स्वमान, स्व-स्थिति और पुण्य का खाता जमा करने का चांस है। तो सभी ने उमंग-उत्साह से सेवा की है, उसकी मुबारक है। अच्छा है इन्दौर तो सदा अन्तर्मुख रहता होगा, इन डोर है ना, डोर के अन्दर रहने वाले तो अन्तर्मुखी हो गये ना। तो अन्तर्मुखी सदा सुखी होता है। तो इन्दौर निवासियों को नेचरल वरदान हो गया – अन्तर्मुखी सदा सुखी। तो कमाई जमा की? ज्यादा में ज्यादा की या थोड़ी की? सबने बहुत कमाई की? अच्छा। एक ब्राह्मण को खिलाते हैं, सेवा करते हैं उसका भी पुण्य मानते हैं। आपने तो

कितने ब्राह्मणों की सेवा की। तो आपके पुण्य का खाता बहुत बड़ा जमा हो गया। और सच्चे ब्राह्मणों की सेवा की। तो पुण्य का खाता भी इतना महान हो गया। अच्छा है। उमंग-उत्साह से स्व-उन्नति कर रहे हैं, करते रहना और आगे उड़ते रहना। अच्छा।

मेडिकल विंग

अच्छा किया है, इन्होंने अपने विंग में विशेष धारणा बहुत अच्छी रखी है। दया, दुआ एवं दवा। दया, दुआ, दवा तो कितना अच्छा रखा है। तो चेक करना - दया भाव रहा? तंग होके तो सेवा नहीं की? कोई ऐसा पेशेन्ट आ जाए तंग तो नहीं होते! दुवा भी दो, दवा भी दो तो सदा के लिए पेशेन्ट नहीं, पेशेन्स हो जाए। पेशेन्स में आ जाए। देखो, जो डाक्टर्स होते हैं ना उनको नेक्स्ट गॉड कहते हैं, तो आपकी सेवा का कितना महत्त्व है, टाइटिल मिला है नेक्स्ट गाड। इसीलिए लक्ष्य अच्छा रखा है दया और दुआ। दवाई देना तो कार्य है ही। जो भी पेशेन्ट आवे, रोता आवे और मुस्कराते जावे तब कहेंगे दया और दुआ की। चिल्लाता आवे और आराम से जाये। अच्छा है। मेडिकल विंग का तो सबूत है, डाक्टर बैठा है ना (डा. सतीष गुप्ता) मेडिकल विंग ने सबूत दिया है, गवर्मेन्ट तक आवाज पहुंचा है। बापदादा चाहता है ऐसे हर एक विंग का गवर्मेन्ट तक आवाज जाये। देखो, प्रेजीडेन्ट ने भी कहा कि ब्रह्माकुमारियां बिना खर्चे के हार्ट ठीक कर देती हैं। तो यह भी आवाज फैला ना। गवर्मेन्ट तक आवाज जरूर जाना चाहिए। गवर्मेन्ट तक जाने का मतलब है कि वह आवाज ऑटोमेटिक फैलेगा। जैसे पहले आप लोग क्या करते थे, कोई न कोई नेता को बुला लेते थे और टी.वी. में निकलता था। अभी तो टी.वी. आपकी हो गई है लेकिन पहले बुलाते थे तो नाम होवे। टी.वी. वाले आवें, आवाज फैले। अभी इससे ऊपर चले गये हैं, अभी टी.वी. वाले आपको और ही पूछने

के लिए आते हैं, आप क्या करते हो, कैसे करते हो। तो फर्क हुआ ना। तो गवर्मेन्ट तक पहुंचने से आवाज फैल जाता है। तो अच्छा कर रहे हैं, मुबारक हो।

स्पोर्ट विंग्

अच्छा। (मम्मा बाबा, दीदी दादी का फोटो बैडमिंटन खेलते हुए दिखा रहे है) चित्र दिखा रहे हैं। अच्छा सभी को दिखाओ। अच्छा है - कोई न कोई ऐसी आत्माओं को सन्देश दो जो वह माइक बनके आवाज फैलाये। प्रोग्राम बनाया है ना अच्छा है। बापदादा चाहते हैं जैसे स्पोर्ट में जो गाये हुए नामीग्रामी हैं, वह माइक बनें। इतना पुरुषार्थ करो। हर एक वर्ग का जो सबसे विशेष गाया हुआ है, वह आपका माइक बने। आपको माइक बनने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हर एक वर्ग वाला यह कोशिश करो भिन्न-भिन्न सबजेक्ट होती हैं, उसमें से कोई नामीग्रामी ढूंढो उसको अनुभव कराओ और वह अपना अनुभव सुनाये। आपको खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा, मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। हर वर्ग को ऐसे करना चाहिए। साधारण की तो कर ही रहे हो। यह मेगा प्रोग्राम कर रहे हो तो जनरल आ रहे हैं लेकिन अभी थोड़ा क्वालिटी की सेवा करो। हर एक वर्ग ऐसा एक दो माइक तैयार करो क्योंकि अभी तो काफी समय हो गया है, वर्ग वाले सेवा कर रहे हैं, परिचय तो अभी काफी हो गया है। अभी एक एक कोई ऐसा तैयार करो, चलो रेग्युलर स्टूडेन्ट नहीं हो लेकिन माइक तो बने क्योंकि ऐसी आत्मायें रेग्युलर स्टूडेन्ट मुश्किल बनते हैं, अनुभव तो सुनावें। तो इस वर्ष यह करना। हर एक वर्ग कोशिश करो और फिर उन्हों का संगठन हो जाए, छोटा संगठन, बड़ा नहीं। तो एक दो को देख करके भी उमंग आता है। ठीक है ना! तो पहले कौन करेगा? आप करेंगे। अच्छा – इनएडवांस मुबारक हो।

सिक्युरिटी विंग

(बैनर दिखा रहे हैं) लक्ष्य तो अच्छा रखा है, इन्होंने लक्ष्य रखा है ''सुरक्षा, सेवा, सम्पूर्ण समर्पण।'' सम्पूर्ण समर्पण हो गया तो फिर तो सम्पूर्ण हो ही जायेंगे। अच्छा लक्ष्य रखा है। अपने को समर्पण करना अर्थात् निमित्त और निर्माण बनना। निमित्त और निर्माण बनने से सफलता तो है ही। अच्छा है, आप लोगों को तो अन्त तक सेवा करनी पड़ेगी। अन्त के समय आपकी सेवा ज्यादा होगी। अच्छा है हर एक विंग लक्ष्य को दोहराते रहना। लिखा तो सभी ने अच्छा है, लक्ष्य को लक्षण बनाके ही छोड़ना है। आज तो लक्ष्य दिखाया है, अभी लक्षण देखेंगे। सभी विंग ने अच्छा लक्ष्य रखा है। अच्छा – कोई मिलेट्री वाले तैयार कर रहे हो? सिक्युरिटी के हर ग्रुप में कनेक्शन रखो। चाहे देश के लिए, चाहे आत्माओं के लिए जो सिक्युरेटी डिपार्टमेंट है उन सबकी सेवा हो क्योंकि यह समय पर बहुत काम में आने हैं। जैसा समय नाज़ुक होगा तो आपको उन्हों की मदद से आवाज फैलाने में बहुत अच्छा होगा। कनेक्शन सबसे रखो। जो भी शाखायें हैं, उन्हों से भी सम्पर्क रखो। सेवाधारी बहुत होते हैं ना तो समय पर सेवाधारी काम में आवें। अच्छा है फिर भी बापदादा देखते हैं हर वर्ग कोशिश अच्छी कर रहे हैं। अच्छा, मुबारक हो।

स्पार्क ग्रुप

(मूल्यनिष्ठ समाज की रचना करने का लक्ष्य रख अभियान निकालने का सोचा है, जिसमें हर ज़ोन हर विंग इसी के अन्तर्गत सेवा करें, साथ-साथ अन्तिम समय की तैयारियां तथा संस्कार परिवर्तन के विषय पर गहन अनुभूति कराने का लक्ष्य रखा है)

बहुत अच्छा, घर घर में आवाज फैल जायेगा। और ऐसा ग्रुप तैयार

करो जो गवर्मेन्ट तक भी आवाज जाये, यह अभियान करायेंगे तो आवाज जायेगा। अच्छा सोचा है। संख्या तो बहुत है। सब रिजल्ट निकालना, फिर बापदादा और मुबारक देंगे। अच्छा है यह उमंग-उत्साह, अपने पुरुषार्थ में भी उमंग-उत्साह बढ़ायेगा। सिर्फ सेवा में ही नहीं, साथ में अपने पुरुषार्थ में भी उमंग-उत्साह बढ़ता जाए, सेवा भी बढ़ती जाए। बाकी अच्छा किया है, मुबारक हो।

यूथ ग्रुप भी सेवा करके आये हैं

सेवा में खुशी का मेवा खाया क्योंकि सेवा का मेवा मिलता है खुशी, उमंग-उत्साह। तो सिर्फ सेवा की, सेवा के साथ मेवा खाया, कितनी खुशी रही? खुश रहे और खुशी बांटी यह मेवा खाया और मेवा खिलाया। ऐसे ही आगे बढ़ते चलो। अच्छा किया है, मेहनत अच्छी की है। मेहनत की मुबारक और आगे बढ़ने की भी मुबारक हो। अच्छा।

डबल विदेशी

कितने देशों से हैं? (35 देशों से) अच्छा है डबल विदेशियों से मधुबन सज जाता है। चाहे ज्ञान सरोवर में रहो, चाहे नीचे रहो लेकिन आप मधुबन के डबल शृंगार हो। सब आपको देखकर खुश होते हैं। और बापदादा ने सुनाया कि जब स्थापना हुई तो बापदादा का एक टाइटल नहीं था, और जब विदेश सेवा हुई है तो प्रैक्टिकल में वह टाइटल आ गया। वह कौन-सा टाइटल? विश्व कल्याणकारी। तो अभी विश्व में कोने कोने में सेवाकेन्द्र हैं। हर खण्ड में अनेक सेवाकेन्द्र हैं। एक यू.के., यूरोप में कितने होंगे, आस्ट्रेलिया में कितने होंगे? तो विश्व कल्याणकारी का टाइटल डबल फॉरेन सेवा से सिद्ध हुआ और आप जानते हो ना – बापदादा को एक डबल फॉरेनर्स की विशेषता बहुत अच्छी लगती है। जानते हो? सच्चाई

सफाई। बता देते हैं। हिम्मत थोड़ी-थोड़ी भले कम हो लेकिन बता देते हैं। छिपाने की आदत नहीं है। तो सच्चाई बाप को प्रिय है। सत्यता, महानता को प्राप्त कराने वाली होती है। बहुत अच्छा किया है, जिस देश से निकले उसी देश के सेवाधारी बन गये। नहीं तो भारतवासी बच्चों को कितनी भाषायें सीखनी पड़ती। पहले तो यह पढ़ाई पढ़नी पड़ती लेकिन आप आये, सेवाधारी बन गये। सेवा का सबूत भी लाते हो इसकी बहुत-बहुत-बहुत मुबारक। और सभी ओ.के. रहने वाले, ओ.के. कभी नहीं भूलना। अच्छे हैं, अच्छे ते अच्छे रहना ही है। विदेश को नम्बरवन लेना है। विन करके वन लेना है। ठीक है ना! विन करने वाले वन नम्बर लेने वाले। ठीक है? ऐसे है? टू नम्बर नहीं ना! वन। विन और वन। अच्छे हैं, सभी को प्यारे लगते हैं। आपको सब देखने चाहते हैं। बापदादा ने तो देख लिया, अभी ऐसे घूम जाओ जो सब आपको देखें। देखो, दर्शनीय मूर्त बन गये। **(जयन्ती बहन से)** यह ठीक है! अच्छा है। अच्छा।

जिब्राल्टर सबसे छोटा बच्चा है, बहुत अच्छा निमित्त बन आगे जा रहे हैं

बहुत अच्छा। सबसे नम्बरवन जाना। अच्छा। सभी अपनी-अपनी सेवा कर रहे हैं, करते रहेंगे, सबको उड़ाते रहेंगे।

मधुबन निवासियों से

मधुबन वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। मधुबन वाले होस्ट हैं और तो गेस्ट होकर आते हैं चले जाते हैं लेकिन मधुबन वाले होस्ट हैं। नियरेस्ट भी हैं, डियरेस्ट भी हैं। मधुबन वालों को देखकर सब खुश होते हैं ना। किसी भी स्थान पर मधुबन वाले जाते हैं तो किस नज़र से देखते हैं। वाह मधुबन से आये हैं! क्योंकि मधुबन नाम सुनने से मधुबन का बाबा याद आ

जाता है। इसलिए मधुबन वालों का महत्त्व है। है महत्त्व? खुश होते हो ना! ऐसा प्रेमपूर्वक पालना का स्थान कोटों में कोई को ही मिला है। सब चाहते हैं मधुबन में ही रह जाएं, रह सकते हैं क्या! आप रह रहे हो। तो अच्छा है। मधुबन वाले भूलते नहीं हैं, समझते हैं हमारे को पूछा नहीं लेकिन बापदादा सदा दिल में पूछते हैं। पहले मधुबन वाले। मधुबन वाले नहीं हों तो आयेंगे कहाँ! सेवा के निमित्त तो हैं ना! सेवाधारी कितने भी मिलें, फिर भी फाउण्डेशन तो मधुबन वाले हैं। तो जो ऊपर ज्ञान सरोवर में, पाण्डव भवन में हैं, उन सबको भी बापदादा दिल की दुआयें और यादप्यार दे रहे हैं। यहाँ जो टोली देते हैं वह ऊपर मधुबन में मिलती है? तो मधुबन वालों को टोली भी मिलती, बोली भी मिलती। दोनों मिलती हैं। अच्छा।

ग्लोबल हॉस्पिटल वालों से

सभी हॉस्पिटल वाले ठीक हैं क्योंकि हॉस्पिटल का भी विशेष पार्ट है ना। आते हैं नीचे। अच्छा थोड़े आते हैं। हॉस्पिटल वाले भी अच्छी सेवा कर रहे हैं। देखो आईवेल में तो फिर भी हॉस्पिटल ही काम में आती है ना। और जब से हॉस्पिटल खुली है तब से सबकी नज़र में यह आया है कि ब्रह्माकुमारियां सिर्फ ज्ञान नहीं देती, लेकिन समय पर मदद भी करती हैं, सोशल सेवा भी करती हैं। तो हॉस्पिटल के बाद आबू में यह वायुमण्डल बदली हो गया। पहले जिस नज़र से देखते थे, अभी उस नज़र से नहीं देखते हैं। अभी सहयोग की नज़र से देखते हैं। ज्ञान मानें या नहीं मानें लेकिन सहयोग की नज़र से देखते हैं तो हॉस्पिटल वालों ने सेवा की ना। अच्छा है।

अच्छा – आज की बात याद रही? सम्पन्न बनना ही है, कुछ भी हो जाए, सम्पन्न बनना ही है। यह धुन लग जाए, सम्पन्न बनना है, समान बनना है। अच्छा ।

चारों ओर के कोटों में कोई, कोई में भी कोई भाग्यवान, भगवान के बच्चे श्रेष्ठ आत्मायें, सदा तीव्र पुरुषार्थ द्वारा जो सोचा वह किया, श्रेष्ठ सोचना, श्रेष्ठ करना, लक्ष्य और लक्षण को समान बनाना, ऐसे विशेष आत्माओं को सदा बहुतकाल के पुरुषार्थ द्वारा राज्य भाग्य और पूज्य बनने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के स्नेह का रिटर्न अपने को टर्न करने वाले नम्बरवन, विन करने वाले भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से

आपका नाम ही सेवा कर रहा है। दादी, दादी कहके ही सेवा हो रही है। अच्छा - सभी सहयोगी और स्नेही नम्बरवन हैं। स्नेही भी हैं, सहयोगी भी हैं। ग्रुप अच्छा है।

(रतनमोहिनी दादी कल रीवा (MP) के मिनी मेगा प्रोग्राम में जा रही है) सेवा तो बहुत अच्छी चल रही है। अच्छा है - उमंग-उत्साह से करते हैं, रेसपान्ड भी मिलता है, अच्छा है सबको याद देना।

जयन्ती बहन से – प्रकृतिजीत हो गई ना। प्रकृति तो नटखट है ही। लास्ट जन्म की है ना। इसलिए नटखट तो करती है लेकिन प्रकृति जीत होके उड़ते चलो, बापदादा की और परिवार की भी दुआयें बहुत हैं। तो दुआयें भी दवाई का काम कर रही हैं।

डा.हंसा रावल से – सेवा में बहुत अच्छा फल मिलता है। प्रत्यक्षफल मिलता है खुशी, समीपता। तो यह फल लेने वाले, होशियार हो। ओम् शान्ति।

20-02-2005

दिल से मेरा बाबा कहो और सर्व अविनाशी खजानों के मालिक बन बेफिक्र बादशाह बनो

आज भाग्य विधाता बापदादा अपने सर्व बच्चों के मस्तक बीच भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। हर एक बच्चे के मस्तक में चमकते हुए दिव्य सितारे की रेखा दिखाई दे रही है। हर एक के नयनों में स्नेह और शक्ति की रेखा देख रहे हैं। मुख में श्रेष्ठ मधुर वाणी की रेखा देख रहे हैं। होठों पर मीठे मुस्कान की रेखा चमक रही है। दिल में दिलाराम के स्नेह में लवलीन की रेखा देख रहे हैं। हाथों में सदा सर्व खजानों के सम्पन्नता की रेखा देख रहे हैं। पांव में हर कदम में पदम की रेखा देख रहे हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में किसी का नहीं होता, जो आप बच्चों को इस संगमयुग में भाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसा अपना भाग्य अनुभव करते हो? इतने श्रेष्ठ भाग्य का रूहानी नशा अनुभव करते हो? दिल में स्वत: गीत बजता है - वाह मेरा भाग्य! यह संगमयुग का भाग्य अविनाशी भाग्य हो जाता। क्यों? अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी भाग्य प्राप्त हुआ है। लेकिन प्राप्त इस संगम पर ही होता है। इस संगमयुग पर ही अनुभूति करते हो, यह विशेष संगमयुग की प्राप्ति अति श्रेष्ठ है। तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य का अनुभव सदा इमर्ज रहता है या कभी मर्ज, कभी इमर्ज रहता है? और पुरुषार्थ क्या किया? इतने बड़े भाग्य की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ कितना सहज हुआ। सिर्फ दिल से जाना, माना और अपना बनाया ''मेरा बाबा''। दिल से पहचाना, मैं बाबा का, बाबा मेरा। मेरा मानना और अधिकारी बन जाना। अधिकार भी कितना बड़ा है! सोचो, कोई पूछे क्या-क्या मिला है? तो क्या कहेंगे? जो पाना था वह पा लिया। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु परमात्म खजाने में। ऐसे प्राप्ति

स्वरूप का अनुभव कर लिया वा कर रहे हैं? भविष्य की बात अलग है, इस संगमयुग का ही प्राप्ति स्वरूप का अनुभव है। अगर संगमयुग पर अनुभव नहीं किया तो भविष्य में भी नहीं हो सकता। क्यों? भविष्य प्रालब्ध है लेकिन प्रालब्ध इस पुरुषार्थ के श्रेष्ठ कर्म से बनती है। ऐसे नहीं कि लास्ट में अनुभव स्वरूप बनेंगे। संगमयुग के बहुतकाल का यह अनुभव है। जीवनमुक्त का विशेष अनुभव अब का है। बेफिक्र बादशाह बनने का अनुभव अब है। तो सभी बेफिक्र बादशाह हो कि फिकर है? जो बेफिक्र बादशाह बने हैं वह हाथ उठाओ। बन गये हैं कि बन रहे हैं? बन गये हैं ना! क्या फिकर है? जब दाता के बच्चे बन गये तो फिकर क्या रह गया? मेरा बाबा माना और फिकर की अनेक टोकरियों का बोझ उतर गया। बोझ है क्या? है? प्रकृति का खेल भी देखते हो, माया का खेल भी देखते हो लेकिन बेफिक्र बादशाह होकर, साक्षी होकर खेल देखते हो। दुनिया वाले तो डरते हैं, पता नहीं क्या होगा! आपको डर है? डरते हो? निश्चय और निश्चित है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। क्यों? त्रिकालदर्शी बन हर दृश्य को देखते हो। आज क्या है, कल क्या होने वाला है, इसको अच्छी तरह से जान गये हो, नॉलेजफुल हो ना! संगम के बाद क्या होना है, आप सबके आगे स्पष्ट है ना! नव युग आना ही है। दुनिया वाले कहेंगे, आयेगा? क्वेश्चन है आयेगा? और आप क्या कहते हैं? आया ही पड़ा है। इसलिए क्या होगा, क्वेश्चन नहीं है। पता है - स्वर्ण युग आना ही है। रात के बाद अब संगम प्रभात है, अमृतवेला है, अमृतवेले के बाद दिन आना ही है। निश्चय जिसको भी होगा वह निश्चिंत, कोई चिंता नहीं होगी, बेफिकर। विश्व रचता द्वारा रचना की स्पष्ट नॉलेज मिल गई है।

बापदादा देख रहे हैं सभी बच्चे स्नेह के, सहयोग के और सम्पर्क के प्यार में बंधे हुए अपने घर में पहुंच गये हैं। बापदादा सभी स्नेही बच्चों को, सहयोगी बच्चों को, सम्पर्क वाले बच्चों को अपने अधिकार लेने के लिए

अपने घर में पहुंचने की मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा का प्यार बच्चों से ज्यादा है वा बच्चों का बापदादा से ज्यादा है? किसका है? आपका या बाप का? बाप कहते बच्चों का ज्यादा है। देखो, बच्चों का प्यार है तब तो कहाँ-कहाँ से पहुंच गये हैं ना! कितने देशों से आये हैं? **(50 देशों से)** 50 देशों से आये हैं। लेकिन सबसे दूर से दूर कौन आया है? अमेरिका वाले दूर से आये हैं? आप भी दूर से आये हैं लेकिन बापदादा तो परमधाम से आया है। उसकी भेंट में अमेरिका क्या है! अमेरिका दूर है या परमधाम दूर है? सबसे दूरदेशी बापदादा है। बच्चे याद करते और बाप हाज़िर हो जाते हैं।

अभी बाप बच्चों से क्या चाहते हैं? पूछते हैं ना – बाप क्या चाहते हैं? तो बापदादा यही मीठे-मीठे बच्चों से चाहते हैं कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा हो। सभी राजा हो? स्वराज्य है? स्व पर राज्य तो है ना! जो समझते हैं स्वराज्य अधिकारी राजा बना हूँ, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा को बच्चों को देखकर प्यार आता कि 63 जन्म बहुत मेहनत की है, दु:ख-अशान्ति से दूर होने की। तो बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा अभी स्वराज्य अधिकारी बने। मन-बुद्धि-संस्कार का मालिक बने, राजा बने। जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे वैसे मन-बुद्धि-संस्कार को परिवर्तन कर सके। टेन्शन फ्री लाइफ का अनुभव सदा इमर्ज हो। बापदादा देखते हैं कभी मर्ज भी हो जाता है। सोचते हैं यह नहीं करना है, यह राइट है, यह रांग है, लेकिन सोचते हैं स्वरूप में नहीं लाते हैं। सोचना माना मर्ज रहना, स्वरूप में लाना अर्थात् इमर्ज होना। समय के लिए तो नहीं इन्तजार कर रहे हो ना! कभी-कभी करते हैं। रूहरिहान करते हैं ना तो कई बच्चे कहते हैं, समय आने पर ठीक हो जायेंगे। समय तो आपकी रचना है। आप तो मास्टर रचता हो ना! तो मास्टर रचता, रचना के आधार पर नहीं चलते। समय को समाप्ति के नज़दीक आप मास्टर रचता

को लाना है।

एक सेकण्ड में मन के मालिक बन मन को आर्डर कर सकते हो? कर सकते हो? मन को एकाग्र कर सकते हो? फुलस्टॉप लगा सकते हो कि लगायेंगे फुलस्टॉप और लग जायेगा क्वेश्चन मार्क? क्यों, क्या, कैसे यह क्या, वह क्या, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं। फुलस्टॉप, सेकण्ड में प्वाइंट बन जाओ। और कोई मेहनत नहीं है, एक शब्द सिर्फ अभ्यास में लाओ ''प्वाइंट''। प्वाइंट स्वरूप बनना है, वेस्ट को प्वाइंट लगानी है और महावाक्य जो सुनते हो उस प्वाइंट पर मनन करना है, और कोई भी तकलीफ नहीं है। प्वाइंट याद रखो, प्वाइंट लगाओ, प्वाइंट बन जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बीच-बीच में करो, कितने भी बिजी हो लेकिन यह ट्रायल करो एक सेकण्ड में प्वाइंट बन सकते हो? एक सेकण्ड में प्वाइंट लगा सकते हो? जब यह अभ्यास बार-बार का होगा तब ही आने वाले अन्तिम समय में फुल प्वाइंट्स ले सकेंगे। पास विद ऑनर बन जायेंगे। यही परमात्म पढ़ाई है, यही परमात्म पालना है।

तो जो भी आये हैं, चाहे पहली बारी आने वाले हैं, जो पहली बारी मिलन मनाने के लिए आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत आये हैं। वेलकम। जैसे अभी पहले बारी आये हो ना, तो पहला नम्बर भी लेना। चांस है, आप सोचेंगे हम तो अभी-अभी पहले बारी आये हैं, हमारे से पहले वाले तो बहुत हैं लेकिन ड्रामा में यह चांस रखा हुआ है कि लास्ट सो फास्ट और फास्ट से फर्स्ट हो सकते हो। चांस है और चांस लेने वालों को बापदादा चांसलर कहते हैं। तो चांसलर बनो। बनना है चांसलर? चांसलर बनना है? जो समझते हैं चांसलर बनेंगे, वह हाथ उठाओ। चांसलर बनेंगे? वाह! मुबारक हो। बापदादा ने देखा यहाँ तो जो भी आये हैं वह सब हाथ उठा रहे हैं, मैजारिटी उठा रहे हैं, मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा ने आप सभी आने वाले मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे बच्चों को विशेष याद किया

है, क्यों याद किया? **(आज सभा में देश-विदेश के बहुत से वी.आई.पीज बैठे हैं)** क्यों निमन्त्रण दिया? पता है? देखो, निमन्त्रण तो बहुतों को मिला लेकिन आने वाले आप पहुंच गये हो। क्यों बापदादा ने याद किया? क्योंकि बापदादा जानते हैं कि जो भी आये हैं वह स्नेही, सहयोगी से सहजयोगी बनने वाली क्वालिटी है। अगर हिम्मत रखेंगे तो आप सहज योगी बन औरों को भी सहज योग का मैसेन्जर बन मैसेज दे सकते हो। मैसेज देना अर्थात् गॉडली मैसेन्जर बनना। आत्माओं को दु:ख, अशान्ति से छुड़ाना। फिर भी आपके ही भाई-बहनें हैं ना! तो अपने भाई वा बहनों को गॉडली मैसेज देना अर्थात् मुक्त करना। इसकी दुआयें बहुत मिलती हैं। किसी भी आत्मा को दु:ख, अशान्ति से छुड़ाने की दुआयें बहुत मिलती हैं और दुआयें मिलने से अतीन्द्रिय सुख आन्तरिक खुशी की फीलिंग बहुत आती है। क्यों? क्योंकि खुशी बांटी ना तो ख़ुशी बांटने से खुशी बढ़ती है। सभी खुश हो? विशेष बापदादा मेहमानों से नहीं, अधिकारियों से पूछते हैं। अपने को मेहमान नहीं समझना, अधिकारी हैं। तो सभी खुश हैं? हाँ आप आने वालों से पूछते हैं, कहने में आता है मेहमान लेकिन मेहमान नहीं हो, महान बन महान बनाने वाले हो। तो पूछो खुश हैं? खुश हैं तो हाथ हिलाओ। सभी खुश हैं, अभी जाकरके क्या करेंगे? खुशी बांटेंगे ना! सबको खूब खुशी बांटना। जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी, ठीक है। अच्छा - खूब ताली बजाओ। (सभी ने खूब तालियां बजाई) जैसे अभी ताली बजाई, ऐसे सदा खुशी की तालियां आटोमेटिक बजती रहें। अच्छा।

सेवा का टर्न – भोपाल ज़ोन

भोपाल वाले उठो। सेवा का चांस लेने में कितने पदम, कदम में जमा किये? जमा किया? क्योंकि यहाँ तो सेवा और यज्ञ पिता की याद रहती है।

यज्ञ सेवा करते हो तो यज्ञ पिता की याद तो स्वत: आती है। यहाँ क्या किया? दो काम थे ना, बस, और तो कोई काम नहीं था। बाप को याद करना और सेवा करना और कोई ड्युटी थी क्या? यही थी ना! सेवा करना अर्थात् शक्तिशाली मेवा खाना। तो बहुत अच्छी सेवा की, अपने लिए भी दुआयें जमा किया और दूसरों को भी आराम दिया अर्थात् बाप की याद दिलाई। तो अच्छा गोल्डन चांस लिया और यहाँ का जमा किया हुआ वहाँ जाके स्वयं प्रति भी बढ़ाना और दूसरों को भी बांटना। अच्छा है। इसमें टीचर्स हाथ उठाओ।

बापदादा सदा टीचर्स को कहते हैं, टीचर्स अर्थात् जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे। ऐसी टीचर्स हो ना! आपको देखकर स्वर्ग के सुख की फीलिंग आये। शान्ति की अनुभूति हो। चलते-फिरते फरिश्ते दिखाई दें। ऐसी टीचर्स हो ना! अच्छा है, चाहे प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, चाहे सेवा के निमित्त बने हुए हैं लेकिन सभी बापदादा समान बनने वाले निश्चयबुद्धि विजयी हैं। तो सेवा करना बहुत अच्छा लगा ना। सन्तुष्ट रहे? रहे तो हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

मीडिया विंग

(वैनर दिखा रहे हैं – ''मूल्य निष्ठ मीडिया, सत्यता, निर्भयता, दिव्यता परमात्म प्रत्यक्षता'') अच्छा लक्ष्य रखा है, मीडिया अर्थात् बापदादा की प्रत्यक्षता का आवाज फैलाने वाले। प्रत्यक्षता का विशेष साधन मीडिया है क्योंकि लोग कहते हैं कि आपका आवाज इतना चारों ओर नहीं फैला है, तो मीडिया ऐसा साधन है जो चारों ओर आवाज फैला सकते हैं। अभी थोड़ा-थोड़ा आवाज फैलाया है इसलिए अभी ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो हर मीडिया के साधन वाले स्वयं ऑफर करें कि हमें कुछ सेवा दो। कनेक्शन रख रहे हो लेकिन कनेक्शन वालों को रिलेशन वाला बनाओ,

जिससे वह खुद समझें कि हमारी भी जिम्मेवारी है। कर रहे हैं, करते रहेंगे और अवश्य आवाज फैलना ही है। फैलाने वाले होशियार हैं तो आवाज फैलेगा ना! शुरू किया है, अच्छा किया है, अभी उसको बढ़ाओ। (दादी जी की इच्छा है - एक करोड़ लोगों को सन्देश मिले, तो इस शिव जयन्ती पर वह सन्देश सबको मिल जाये, ऐसा प्लैन बनाया है, और भी कई प्लैन बापदादा को सुनाये) मुबारक हो। प्रैक्टिकल में करेंगे फिर गिफ्ट भी देंगे, अभी मुबारक हो।

साइंटिस्ट एवं इंजीनियर विंग

(बैनर दिखाया - निमित्त, निर्मानता से नव निर्माण, ज्ञान विज्ञान जागृति अभियान) अच्छा बनाया है। अभी साइंटिस्ट और इंजीनियर डिपार्टमेंट को ऐसा कुछ करके दिखाना है जो लोगों को अनुभव हो कि साइलेन्स की शक्ति साइंस को भी रिफाइन और प्रगति में ला सकती है। साइंस और साइलेन्स का मिलन क्या-क्या कर सकता है, वह विशेष पहले प्वाइंट्स निकालो और फिर वह फैलाओ। साइंस वालों को पता पड़े कि साइलेन्स हमारे साइंस में क्या सहयोग दे सकती है, क्या उन्नति हो सकती है, ऐसा अनुभव स्वयं करो भी और कराओ भी। अच्छा है बापदादा खुश है, हर एक वर्ग काम में तो लगा हुआ है, मनन करना शुरू किया है, अभी मनन से मक्खन निकालो। कोई ऐसे विशेष अनुभव उन्हों के सामने रखो क्योंकि आजकल प्रैक्टिकल अनुभव का प्रभाव ज्यादा पड़ता है। टॉपिक पर भाषण करते हो लेकिन भाषण में भी विशेष प्रैक्टिकल अनुभव सुनाने का लक्ष्य रखो। बाकी अच्छा कर रहे हैं, अच्छा है, यह भी चांस मिल जाता है, विधि अच्छी बनाई है। अच्छा - मुबारक हो, किया है उसकी भी मुबारक, और आगे करेंगे उसकी इनएडवांस मुबारक हो। (इस विंग के सदस्यों ने दो गुण विशेष धारणा के लिए रखे हैं निमित्त भाव और निर्मान) बहुत

अच्छा किया है, करते रहना और लक्ष्य को पक्का रखना।

प्रशासक वर्ग

अच्छा आप लोगों ने भी प्लैन बनाये हैं और बनाते ही रहते हैं। अच्छा है अगर प्रशासक परिवर्तन हो जाएं तो सब परिवर्तन हो सकते हैं क्योंकि कहावत है यथा राजा तथा प्रजा। तो अगर सभी तरफ प्रशासक अपने जीवन में परिवर्तन करें तो औरों को भी परिवर्तन करने के निमित्त बना सकते हैं, क्योंकि हर देश में प्रशासन करने वाले तो होते ही हैं। तो हर देश में विशेष उन्हों को परिवर्तन का सन्देश देकर योग्य बनाओ औरों को परिवर्तन करने के। बाकी अच्छी सेवा है, बहुतों का फायदा कर सकते हो। एक अनेकों के निमित्त बनने वाले होते हैं इसलिए कर भी रहे हो और, और भी तीव्रगति से परिवर्तन का प्लैन प्रैक्टिकल में लाओ, आवश्यकता है इस वर्ग की। सबकी नज़र आज इसी वर्ग के ऊपर है। तो निमित्त बने हो, निर्माण करेंगे ही। अच्छा।

डबल विदेशी

डबल विदेशी विश्व के कोने-कोने में सन्देश देने का कार्य बहुत अच्छा कर रहे हैं। बापदादा सुनते हैं 50 देशों से आये हैं, तो 50 देशों में सन्देशवाहक बैठे हैं। सन्देश देने का कार्य कर रहे हैं और अभी प्लैन भी अच्छा बना रहे हैं कि जहाँ भी सन्देश नहीं पहुंचा है वहाँ निमित्त बनना ही है। कर भी रहे हैं यह भी बापदादा के पास पहुंचता है, अभी उमंग-उत्साह है और जहाँ उमंग-उत्साह है वहाँ सफलता है ही है। तो डबल विदेशी कौन हो? सफलता के सितारे हो। है ना! सफलता के सितारे हैं। अच्छा कर रहे हैं। एक-एक के दिल का आवाज बापदादा तक पहुंचता रहता है। यह करें, यह करें, यह भी करें, वह भी करें, उमंग-उत्साह अच्छा है और

सफलता तो होनी ही है। आपके चरणों में, गले में सफलता है ही है। और आप सबको देख करके सभी खुश भी होते हैं। आपका आह्वान करते हैं, डबल विदेशी जरूर होने चाहिए। लाडले हो गये हो ना! तो बहुत अच्छा कर रहे हो, करते रहेंगे। उड़ रहे हो, उड़ाते रहेंगे। सब टीचर्स बहुत उमंग में हैं ना। देखो आपके उमंग-उत्साह से यह महान अधिकारी आत्मायें भी पहुंच गई हैं। ग्रुप अच्छा लाया है। जिन्होंने भी लाया है उनको मुबारक है। क्वालिटी अच्छी लाये हैं। अभी और आवाज फैलेगा जरूर। अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के चाहे साकार रूप में सामने हैं, चाहे दूर बैठे भी दिल के नज़दीक हैं, ऐसे सदा श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को, सदा निमित्त बन निर्माण का कार्य सफल करने वाले विशेष आत्माओं को, सदा बाप के समान बनने के उमंग-उत्साह में आगे बढ़ने वाले हिम्मतवान बच्चों को, सदा हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले बहुत-बहुत वर्ल्ड में पदमगुणा धनवान, भरपूर आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी और दादी जानकी जी से

आप **(दादी)** रूप हो और यह (दादी जानकी) बसन्त है। आप दृष्टि से ही काम उतार देती हो। ऐसे ऊपर हाथ करके नाचती है ना! अच्छा है। (सबको हल्का बना देती है) अच्छा है, आपके साथी भी अच्छे हैं ना। अच्छा है, वायुमण्डल बनाना, यह भी सबसे ऊंचे ते ऊंची सेवा है। आप आदि रत्नों से वायुमण्डल बनता है। चाहे बोलो, चाहे नहीं बोलो लेकिन वायुमण्डल बनाने वाले हो। देखो, कितनी सेवा कर रही हो। (मनोहर दादी से) बहुत अच्छा सभी को हँसा देती हो, यह सेवा बहुत अच्छी करती हो।

अच्छा है, **(मुन्नी बहन से)** बिजी रहती हो, बिजी रखने में भी होशियार हो। (नीलू बहन से) बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। **(ईशू दादी से)** यह गुप्त रहती है लेकिन वायब्रेशन अच्छा बनाती है। बहुत अच्छा (निर्मलशान्ता दादी से) अभी प्रकृतिजीत बन गई। अभी प्रकृति के वश नहीं, प्रकृतिजीत। देखो संगठन में कितनी अच्छी लग रही हो। सबसे फ्रेश तो आप लग रही हो। सबको हाथ हिलाओ। (रुकमणी बहन से) ठीक हो, सेवा प्यार से करती हो।

डबल् विदेशी निमित्त बड़ी बहनों से

अच्छा सर्विस का सबूत दे रहे हैं। इससे ही आवाज फैलेगा। अनुभव सुनाने से औरों का भी अनुभव बढ़ता है। तो बापदादा खुश है, फॉरेन की सेवा में निमित्त बनने वाले अच्छे उमंग-उत्साह से सेवा में बिजी रहते हैं। गये देश से हैं लेकिन विदेश वालों की सेवा ऐसे ही निमित्त बनके कर रहे हैं जैसे वहाँ के ही हैं। अपनेपन की भासना देते हो। और सब तरफ के हैं। एक तरफ के नहीं हैं, लण्डन के या अमेरिका के नहीं, बेहद सेवाधारी हैं। जिम्मेवारी तो विश्व की है ना। तो बापदादा मुबारक दे रहे हैं। कर रहे हो, आगे और अच्छे ते अच्छे उड़ते और उड़ाते रहेंगे। अच्छा।

डबल् विदेशी मेहमानों से

बापदादा ने आप सभी को क्यों याद किया? क्यों किया? क्योंकि आपको गॉडली मैसेन्जर बनना है। मैसेज तो समझ गये हो ना! मैसेज क्या है, याद करो। यह मैसेज तो जानते हो ना! सबको बाप की याद दिलाते रहो, बस। सहज है ना। मुश्किल तो नहीं लगता? याद में रहो और याद दिलाओ। बहुत अच्छा किया जो पहुंच गये।

2. अपने को बाप के अर्थात् परमात्मा के जन्म सिद्ध अधिकार के

अधिकारी समझते हो ना? समझते हो? पूरा अधिकार लेने वाले हो ना! हाफ नहीं फुल। आप मेहमान नहीं, महान बन औरों को महान बनाने वाले हो। खुशी है ना! खुश है? एवरहैपी? अभी एवरहैपी रहना, खुशी नहीं गंवानी है। सदा मुस्कराते रहो। मुस्कराना अच्छा है ना! तो एवरहैपी ग्रुप। ओ.के. एवरहैपी ग्रुप, वेरीगुड। बहुत अच्छा।

3. सभी होली और हैपी हंस हो। हंस का काम क्या होता है? हंस में निर्णय शक्ति बहुत होती है। तो आप भी होली हैपी हंस व्यर्थ को समाप्त करने वाले और समर्थ बन समर्थ बनाने वाले हो। सभी एवरहैपी? एवर-एवर हैपी। अभी कभी दु:ख को आने नहीं देना। दु:ख को डायओर्स दे दिया, तभी तो दूसरों का दु:ख निवारण करेंगे ना! तो सुखी रहना है और सुख देना है। यह काम करेंगे ना! यहाँ से जो सुख मिला है वह जमा रखना। कभी भी कुछ भी हो ना - बाबा, मीठा बाबा, दु:ख ले लो, अपने पास नहीं रखना। खराब चीज़ रखी जाती है क्या? तो दु:ख खराब है ना! तो दु:ख निकाल दो, सुखी रहो। तो यह है सुखी ग्रुप और सुखदाई ग्रुप। चलते-फिरते सुख देते रहो। कितना आपको दुआयें मिलेंगी। तो यह ग्रुप ब्लैसिंग के पात्र है। (पर्सनल) खुश है ना! अभी मुस्कराओ। बस मुस्कराते रहना। खुशी में नाचो।

डबल विदेशी मुख्य भाई-बहनें जिन्होंने सेवा की

सभी ने बहुत अच्छी सेवा की, उसकी बहुत-बहुत मुबारक। ऐसे ही सेवा करते रहना। अच्छा ग्रुप है।

(एक बुक बना रहे हैं) बापदादा ने समाचार सुना था। अच्छा सबको महावाक्य मिलेंगे, महान बन जायेंगे। तो इसमें ऐसा जादू भरना जो किताब खोले तो जादू लग जाए। खुशी में नाचने लग जायें। अच्छी मेहनत कर रहे हो, बापदादा खुश हैं।

अफ्रीका के मुख्य भाई-बहनें वहाँ की सेवा का समाचार सुना रहे हैं – बहुत अच्छा। बापदादा की दुआयें हैं। प्लैन बहुत अच्छा है। मुबारक हो। अच्छा, यह निमित्त बना है, दोनों ही अच्छे निमित्त हो। इतनों का कल्याण किया है, यह भी बहुत बड़ा पुण्य है। पुण्यात्मा बन गये। साथी दोनों ही ठीक हैं। बहुत अच्छा। **(वेदान्ती बहन से)** यह भी सहयोग अच्छा दे रही है। **(जयन्ती बहन से)** यह बैकबोन है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

07-03-2005

सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत रखना और मैं-पन को समर्पित करना ही शिव जयन्ती मनाना है

आज विशेष शिव बाप अपने सालिग्राम बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं। आप बच्चे बाप का जन्म दिन मनाने आये हो और बापदादा बच्चों का बर्थ डे मनाने आये हैं क्योंकि बाप का बच्चों से बहुत प्यार है। बाप अवतरित होते ही यज्ञ रचते हैं और यज्ञ में ब्राह्मणों के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता है। इसलिए यह बर्थ डे अलौकिक है, न्यारा और प्यारा है। ऐसा बर्थ डे जो बाप और बच्चों का इक्ट्ठा हो यह सारे कल्प में न हुआ है, न कभी हो सकता है। बाप है निराकार, एक तरफ निराकार है दूसरे तरफ जन्म मनाते हैं। एक ही शिव बाप है जिसको अपना शरीर नहीं होता इसलिए ब्रह्मा बाप के तन में अवतरित होते हैं, यह अवतरित होना ही जयन्ती के रूप में मनाते हैं। तो आप सभी बाप का जन्म दिन मनाने आये हो वा अपना मनाने आये हो? मुबारक देने आये हो वा मुबारक लेने आये हो? यह साथ-साथ का वायदा बच्चों से बाप का है। अभी भी संगम पर कम्बाइण्ड साथ है, अवतरण भी साथ है, परिवर्तन करने का कार्य भी साथ है और घर परमधाम में चलने में भी साथ-साथ हैं। यह है बाप और बच्चों के प्यार का स्वरूप।

शिव जयन्ती भगत भी मनाते हैं लेकिन वह सिर्फ पुकारते हैं, गीत गाते हैं। आप पुकारते नहीं, आपका मनाना अर्थात् समान बनना। मनाना अर्थात् सदा उमंग-उत्साह से उड़ते रहना। इसीलिए इसको उत्सव कहते हैं। उत्सव का अर्थ ही है उत्साह में रहना। तो सदा उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने वाले हो ना! सदा है या कभी-कभी है? वैसे देखा जाए तो ब्राह्मण

जीवन का श्वास ही है - उमंग-उत्साह। जैसे श्वास के बिना रह नहीं सकते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्मायें उमंग-उत्साह के बिना ब्राह्मण जीवन में रह नहीं सकते हैं। ऐसे अनुभव करते हो ना? देखो विशेष जयन्ती मनाने के लिए कहाँ-कहाँ से, दूर-दूर से भाग करके आये हैं। बापदादा को अपने जन्म दिन की इतनी खुशी नहीं है जितनी बच्चों के जन्म दिन की है। इसलिए बापदादा एक-एक बच्चे को पदमगुणा खुशी की थालियां भर-भर के मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा को आज के दिन सच्चे भगत भी बहुत याद आ रहे हैं। वह व्रत रखते हैं एक दिन का और आपने व्रत रखा है सारे जीवन में सम्पूर्ण पवित्र बनने का। वह खाने का व्रत रखते हैं, आपने भी मन के भोजन व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प, अपवित्र संकल्पों का व्रत रखा है। पक्का व्रत रखा है ना? यह डबल फारेनर्स आगे-आगे बैठे हैं। यह कुमार बोलो, कुमारों ने व्रत रखा है, पक्का? कच्चा नहीं। माया सुन रही है। सब झण्डियां हिला रहे हैं ना तो माया देख रही है, झण्डियां हिला रहे हैं। जब व्रत रखते हैं - पवित्र बनना ही है, तो व्रत रखना अर्थात् श्रेष्ठ वृत्ति बनाना। तो जैसी वृत्ति होती है वैसे ही दृष्टि, कृति स्वत: ही बन जाती है। तो ऐसा व्रत रखा है ना? पवित्र शुभ वृत्ति, पवित्र शुभ दृष्टि, जब एक दो को देखते हो तो क्या देखते हो? फेस को देखते हो या भृकुटी के बीच चमकती हुई आत्मा को देखते हो? कोई बच्चे ने पूछा कि जब बात करना होता है, काम करना होता है तो फेस को देख करके ही बात करनी पड़ती है, आंखों के तरफ ही नज़र जाती है, तो कभी-कभी फेस को देख करके थोड़ा वृत्ति बदल जाती है। बापदादा कहते हैं - आंखों के साथ-साथ भृकुटी भी है, तो भृकुटी के बीच आत्मा को देख बात नहीं कर सकते हैं! अभी बापदादा सामने बैठे बच्चों के आंखों में देख रहे हैं या भृकुटी में देख रहे हैं, मालूम पड़ता है? साथ-साथ ही तो है। तो फेस में देखो लेकिन फेस में भृकुटी में चमकता

हुआ सितारा देखो। तो यह व्रत लो, लिया है लेकिन और अटेन्शन दो। आत्मा को देख बात करना है, आत्मा से आत्मा बात कर रहा है। आत्मा देख रहा है। तो वृत्ति सदा ही शुभ रहेगी और साथ-साथ दूसरा फायदा है जैसी वृत्ति वैसा वायुमण्डल बनता है। वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाने से स्वयं के पुरुषार्थ के साथ-साथ सेवा भी हो जाती है। तो डबल फायदा है ना! ऐसी अपनी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपके वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाए। ऐसा व्रत सदा स्मृति में रहे, स्वरूप में रहे।

आजकल बापदादा ने बच्चों का चार्ट देखा, अपने वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के बजाए कहाँ-कहाँ, कभी-कभी दूसरों के वायुमण्डल का प्रभाव पड़ जाता है। कारण क्या होता? बच्चे रूहरिहान में बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं, कहते हैं इसकी विशेषता अच्छी लगती है, इनका सहयोग बहुत अच्छा मिलता है, लेकिन विशेषता प्रभु की देन है। ब्राह्मण जीवन में जो भी प्राप्ति है, जो भी विशेषता है, सब प्रभु प्रसाद है, प्रभु देन है। तो दाता को भूल जाए, लेवता को याद करे...! प्रसाद कभी किसका पर्सनल गाया नहीं जाता, प्रभु प्रसाद कहा जाता है। फलाने का प्रसाद नहीं कहा जाता है। सहयोग मिलता है, अच्छी बात है लेकिन सहयोग दिलाने वाला दाता तो नहीं भूले ना! तो पक्का-पक्का बर्थ डे का व्रत रखा है? वृत्ति बदल गई है? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना। चेक करो - बड़े-बड़े विकार का व्रत तो रखा है लेकिन छोटे-छोटे उनके बाल-बच्चों से मुक्त हैं? वैसे भी देखो जीवन में प्रवृत्ति वालों का बच्चों से ज्यादा पोत्रे-धोत्रे से प्यार होता है। माताओं का प्यार होता है ना। तो बड़े बड़े रूप से तो जीत लिया लेकिन छोटे-छोटे सूक्ष्म स्वरूप में वार तो नहीं करते? जैसे कई कहते हैं – आसक्ति नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। यह चीज़ ज्यादा अच्छी लगती है लेकिन आसक्ति नहीं है। विशेष अच्छा क्यों लगता? तो

चेक करो छोटे-छोटे रूप में भी अपवित्रता का अंश तो नहीं रह गया है? क्योंकि अंश से कभी वंश पैदा हो सकता है। कोई भी विकार चाहे छोटे रूप में, चाहे बड़े रूप में आने का निमित्त एक शब्द का भाव है, वह एक शब्द है – ''मैं''। बॉडीकानसेस का मैं। इस एक मैं शब्द से अभिमान भी आता है और अभिमान अगर पूरा नहीं होता तो क्रोध भी आता है क्योंकि अभिमान की निशानी है - वह एक शब्द भी अपने अपमान का सहन नहीं कर सकता, इसलिए क्रोध आ जाता। तो भगत तो बलि चढ़ाते हैं लेकिन आप आज के दिन जो भी हद का मैं पन हो, उसको बाप को देकर समर्पित करो। यह नहीं सोचो करना तो है, बनना तो है... तो तो नहीं करना। समर्थ हो और समर्थ बन समाप्ति करो। कोई नई बात नहीं है, कितने कल्प, कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई बन रही है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। बना हुआ है सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है। मुश्किल है कि सहज है? बापदादा समझते हैं संगमयुग का वरदान है - सहज पुरुषार्थ। इस जन्म में सहज पुरुषार्थ के वरदान से 21 जन्म सहज जीवन स्वत: ही प्राप्त होगी। बापदादा हर बच्चे को मेहनत से मुक्त करने आये हैं। 63 जन्म मेहनत की, एक जन्म परमात्म प्यार, मुहब्बत से मेहनत से मुक्त हो जाओ। जहाँ मुहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं, जहाँ मेहनत है वहाँ मुहब्बत नहीं। तो बापदादा सहज पुरुषार्थी भव का वरदान दे रहा है और मुक्त होने का साधन है – मुहब्बत, बाप से दिल का प्यार। प्यार में लवलीन और महायन्त्र है – मनमना भव का मन्त्र। तो यन्त्र को काम में लगाओ। काम में लगाना तो आता है ना! बापदादा ने देखा संगमयुग में परमात्म प्यार द्वारा, बापदादा द्वारा कितनी शक्तियां मिली हैं, गुण मिले हैं, ज्ञान मिला है, खुशी मिली है, इन सब प्रभु देन को, खजानों को समय पर कार्य में लगाओ।

तो बापदादा क्या चाहते हैं, सुना? हर एक बच्चा सहज पुरुषार्थी, सहज भी, तीव्र भी। दृढ़ता को यूज़ करो। बनना ही है, हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा। हम ही थे, हम ही हैं और हर कल्प हम ही होंगे। इतना दृढ़ निश्चय स्वयं में धारण करना ही है। करेंगे नहीं कहना, करना ही है। होना ही है। हुआ पड़ा है।

बापदादा देश विदेश के बच्चों को देख खुश है। लेकिन सिर्फ आप सामने सम्मुख वालों को नहीं देख रहे हैं, चारों ओर के देश और विदेश के बच्चों को देख रहे हैं। मैजारिटी जहाँ-तहाँ से बर्थ डे की मुबारकें आई हैं, कार्ड भी मिले हैं, ई-मेल भी मिले हैं, दिल का संकल्प भी मिला है। बाप भी बच्चों के गीत गाते हैं, आप लोग गीत गाते हो ना – बाबा आपने कर दी कमाल, तो बाप भी गीत गाते हैं मीठे बच्चों ने कर दी कमाल। बापदादा सदा कहते हैं कि आप तो सम्मुख बैठे हो लेकिन दूर वाले भी बापदादा के दिल पर बैठे हैं। आज चारों ओर बच्चों के संकल्प में है – मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा के कानों में आवाज पहुंच रहा है और मन में संकल्प पहुंच रहे हैं। यह निमित्त कार्ड हैं, पत्र हैं लेकिन बहुत बड़े हीरे से भी ज्यादा मूल्यवान गिफ्ट हैं। सभी सुन रहे हैं, हर्षित हो रहे हैं। तो सभी ने अपना बर्थ डे मना लिया। चाहे दो साल का हो, चाहे एक साल का हो, चाहे एक सप्ताह का हो, लेकिन यज्ञ की स्थापना का बर्थ डे है। तो सभी ब्राह्मण यज्ञ निवासी तो हैं ही। इसलिए सभी बच्चों को बहुत-बहुत दिल का यादप्यार भी है, दुआयें भी हैं, सदा दुआओं में ही पलते रहो, उड़ते रहो। दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह हाथ उठाओ। झण्डियां हिलाओ। तो दुआयें छोड़ते तो नहीं? सबसे सहज पुरुषार्थ ही है - दुआयें देना, दुआयें लेना। इसमें योग भी आ जाता, ज्ञान भी आ जाता, धारणा भी आ जाती, सेवा भी आ जाती। चारों ही सबजेक्ट आ जाती हैं दुआयें देने और लेने में।

तो डबल फारेनर्स दुआयें देना और लेना सहज है ना! सहज है? 20 साल वाले जो आये हैं वह हाथ उठाओ। आपको तो 20 साल हुए हैं लेकिन बापदादा आप सबको पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। कितने देशों के आये हैं? **(69 देशों के)** मुबारक हो। 69 वाँ बर्थ डे मनाने के लिए 69 देशों से आये हैं। कितना अच्छा है। आने में तकलीफ तो नहीं हुई ना। सहज आ गये ना! जहाँ मुहब्बत है वहाँ कुछ मेहनत नहीं। तो आज का विशेष वरदान क्या याद रखेंगे? सहज पुरुषार्थी। सहज कार्य जल्दी-जल्दी किया ही जाता है। मेहनत का काम मुश्किल होता है ना तो टाइम लगता है। तो सभी कौन हो? सहज पुरुषार्थी। बोलो, याद रखना। अपने देश में जाके मेहनत में नहीं लग जाना। अगर कोई मेहनत का काम आवे भी तो दिल से कहना, बाबा, मेरा बाबा, तो मेहनत खत्म हो जायेगी। अच्छा। मना लिया ना! बाप ने भी मना लिया, आपने भी मना लिया। अच्छा।

डबल विदेशी 6 ग्रुप में अलग-अलग भट्ठियां कर रहे हैं

कुमारियों से – एक-एक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम है। तो चेक करना जो गायन है हर एक कुमारी को कम से कम 100 ब्राह्मण जरूर बनाने पड़ेंगे। बनायेंगे? बनाना है। हाँ तो हाथ हिलाओ। कितने समय में बनायेंगे? समय नजदीक है ना, तो आप बताओ कितना समय चाहिए? रिजल्ट भेजनी पड़ेगी। (एक साल में) एक साल! आपको एक साल कलियुगी दुनिया में रहना है! चलो, आपके मुख में गुलाबजामुन। तो 6 मास में 50 बनाना, एक साल में 100, तो 6 मास में 50, 6 मास के बाद रिपोर्ट भेजना, पसन्द है? क्या नहीं कर सकते हो, जो चाहो वह कर सकते हो। अच्छा है कुमारियों का ग्रुप अच्छा है। बापदादा कुमारियों को देख विशेष खुश होता है क्योंकि कुमारियां सेवा में सहयोगी नम्बरवन बन सकती हैं।

अच्छा। बहुत अच्छा किया है।

कुमार ग्रुप – (गीत गाया – मैं बाबा का, बाबा मेरा...) अच्छा है, कुमार, डबल कुमार हो गये हो। एक दुनिया के हिसाब से भी कुमार हो और इस ब्राह्मण जीवन में भी ब्रह्माकुमार हो। तो डबल कुमार हो। तो डबल काम करना पड़ेगा। करेंगे? हुआ ही पड़ा है। दृढ़ संकल्प किया और सफलता हुई पड़ी है। अच्छा। सभी ने बहुत अच्छे बैनर बनाये हैं। (हर ग्रुप अपना-अपना बैनर बापदादा को दिखा रहा है)

माताओं से – बहुत अच्छा। बापदादा देख रहे हैं माताओं में बहुत अच्छा उमंग-उत्साह है। इसलिए बापदादा ने माताओं को ही निमित्त बनाया है। बहुत अच्छा बापदादा को पसन्द है।

अधर कुमार – अधर कुमार भी कमाल करेंगे। हर एक अधरकुमार अपना परिवर्तन का अनुभव सुनाकर सभी को बाप के समीप का बना सकते हैं क्योंकि दुनिया वाले समझते हैं कि अधरकुमार जीवन बहुत मुश्किल है लेकिन आप सभी ने मुश्किल को सहज बनाया है। बस सिर्फ अपना अनुभव सुनाते जाओ, ऐसे मुश्किल को मिटा सकते हो। एक शब्द का अन्तर करने से, गृहस्थी से ट्रस्टी बनने से मुश्किल से सहज हो जाता है। तो ऐसे अधरकुमार सेवा में सफलता प्राप्त है और होती रहेगी। अच्छा।

युगलों से – (बैनर दिखा रहे हैं) लक्ष्मी-नारायण का सिम्बल अच्छा बनाया है। आप तो विजयी रत्नों में हैं। साथ रहते न्यारे और प्यारे। युगलों को बापदादा कहते हैं यह कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे हैं। रहते भी साकार में आपस में परिवार में रहते लेकिन मन से सदा बाप के साथ रहते हैं। बहुत अच्छा सभी डबल फारेनर्स ने रिफ्रेशमेंट अच्छी ली है, अभी ली हुई रिफ्रेशमेंट औरों को देनी है। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

सेन्टर वासी – (बैनर – प्रेम और दया की ज्योति जगा कर रखेंगे) बहुत अच्छा संकल्प लिया है। अपने पर भी दया दृष्टि, साथियों के ऊपर

भी दया दृष्टि और सर्व के ऊपर भी दया दृष्टि। ईश्वरीय लव चुम्बक है, तो आपके पास ईश्वरीय लव का चुम्बक है। किसी भी आत्मा को ईश्वरीय लव के चुम्बक से बाप का बना सकते हो। बापदादा सेन्टर पर रहने वालों को विशेष दिल की दुआयें देते हैं, जो आप सभी ने विश्व में नाम बाला किया है। कोने-कोने में ब्रह्माकुमारीज़ का नाम तो फैलाया है ना! और बापदादा को बहुत अच्छी बात लगती है कि जैसे डबल विदेशी हो, वैसे डबल जॉब करने वाले हो। मैजारिटी लौकिक जॉब भी करते हैं तो अलौकिक जॉब भी करते हैं और बापदादा देखते हैं, बापदादा की टी.वी. बहुत बड़ी है, ऐसी बड़ी टी.वी. यहाँ नहीं है। तो बापदादा देखते हैं कैसे फटाफट क्लास करते, नाश्ता खड़े-खड़े करते, जॉब में टाइम पर पहुंचते, कमाल करते हैं। बापदादा देखते-देखते दिल का प्यार देते रहते हैं। बहुत अच्छा, सेवा के निमित्त बने हो और निमित्त बनने की गिफ्ट बाप सदा विशेष दृष्टि देते रहते हैं। बहुत अच्छा लक्ष्य रखा है, अच्छे हो, अच्छे रहेंगे, अच्छे बनायेंगे।

आई.टी. ग्रुप

सेवा का कोई नया प्लैन बनाया है? **(ब्रह्माकुमारीज़ वेबसाइड को और अच्छा बनाना है, जो विश्व में बापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में यूज किया जा सके)** जो बनाया है, वह प्रैक्टिकल करके रिजल्ट लिखना। जैसे अफ्रीका वालों ने रिजल्ट लिखी ना, ऐसे आप लोग भी रिजल्ट भेजना। मुबारक हो बनाया, उमंग है, उत्साह है। जहाँ उमंग-उत्साह है, वहाँ सफलता है ही है। बहुत अच्छा किया।

सेवा का टर्न – राजस्थान और यू.पी. ज़ोन

अच्छा है, रूहानी लश्कर है। बहुत अच्छा, सेवा दिल से की भी है

और सभी को सन्तुष्ट भी किया है। तो जो सन्तुष्ट करता है उसको दिल से जो सन्तुष्टता की लहरें पहुंचती हैं, उससे बहुत खुशी होती है। तो बहुत खुशी मिली है ना! आपने स्थूल सेवा की और सभी भाई बहिनों ने आपको खुशी की सौगात दी है। सन्तुष्टता सबसे बड़ी खुशी की खुराक है। सारा ग्रुप सन्तुष्टमणियों का हो गया। सन्तुष्ट करने वाले सन्तुष्टमणि। सन्तुष्टमणियों को बापदादा और सारे परिवार की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा – भारत की मातायें देख रही हैं, हमारा नाम नहीं लिया बाबा ने। बापदादा कहते हैं कि जहाँ भी मातायें होती हैं ना, तो माताओं की विशेषता है कि उस स्थान का भण्डारा और भण्डारी भरपूर होती है। माताओं को वरदान है, फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाब भरने का। तो मातायें बहुत भाग्यवान हैं, बाप की भण्डारी भर देती हैं। भण्डारा भी भर जाता है। इसलिए माताओं को बहुत-बहुत मुबारक है। अच्छा – भाई भी कम नहीं है। देखो जहाँ भाई हैं ना, वहाँ सेवा को चार चांद लग जाते हैं। भाइयों द्वारा आलराउण्ड सेवा होती है। भण्डारा भरपूर तो करते ही हैं, लेकिन सेवा बढ़ाने के निमित्त विशेष भाई निमित्त बनते हैं। तो सेवा की रौनक बढ़ाने वाले भाई हैं। इसलिए बापदादा सभी माताओं को, सभी भाइयों को बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं। भले पधारे अपने घर में। देखो हाल की रौनंक कौन बढ़ाता है? आप बच्चे जब आते हैं तो डायमण्ड हाल, डायमण्ड बन जाता है। अच्छा दृश्य लगता है। अच्छा है दादी को डायमण्ड हाल बहुत पसन्द आ गया है। अच्छा, नचाती अच्छा है। खुश हो जाते हो ना, जब दादी आके नचाती है तो खुश हो जातं हैं। बहुत अच्छा। अभी एक सेकण्ड में ड्रिल कर सकते हो? कर सकते हो ना! अच्छा।

चारों ओर के सदा उमंग-उत्साह में रहने वाले श्रेष्ठ बच्चों को, सदा सहज पुरुषार्थी संगमयुग के सर्व वरदानी बच्चों को,

सदा बाप और मैं आत्मा इसी स्मृति से मैं बोलने वाले, मैं आत्मा, सदा सर्व आत्माओं को अपने वृत्ति से वायुमण्डल का सहयोग देने वाले ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दुआयें, मुबारक और नमस्ते।

दादियों से

आप सबसे मधुबन की रौनक है। विशेष आज बाप के साथ उसी समय अवतरण तो आपका भी है। विशेष आप सबका है, आदि रत्नों का आदि समय में अवतरण है। तो आप लोगों को विशेष मुबारक है। हैपी बर्थ डे है। एक गीत है ना – आप मधुबन की रौनक हैं। आदि से कुछ तो चले गये, लेकिन आप अमर हो। (बाबा की दुआयें हैं, सबकी दुआयें हैं) यह अच्छा है, ऊपर ही हाथ जाता है नीचे नहीं जाता है। अच्छा है। दादियों को देखकर सभी खुश होते हो ना!

निर्वैर भाई, रमेश भाई से

अच्छा है, पाण्डवों के बिना भी गति नहीं है। चाहे पाण्डव चाहे शक्तियां सबका संगठन, संगठन बना रहा है।

डबल विदेशी बड़ी बहिनों से

सभी ने मेहनत अच्छी की है। ग्रुप-ग्रुप बनाया है ना तो मेहनत अच्छी की है। और यहाँ वायुमण्डल भी अच्छा है, संगठन की भी शक्ति है, तो सबको रिफ्रेशमेंट अच्छी मिल जाती है और आप निमित्त बन जाते हो। अच्छा है। दूर-दूर रहते हैं ना, तो संगठन की जो शक्ति होती है वह भी बहुत अच्छी है। इतना सारा परिवार इकट्ठा होता है तो हर एक की विशेषता का प्रभाव तो पड़ता है। अच्छा प्लैन बनाया है। बापदादा खुश है।

सबकी खुशबू आप ले लेते हो। वह खुश होते हैं आपको दुआयें मिलती हैं। अच्छा है, यह जो सभी इकट्ठे हो जाते हो यह बहुत अच्छा है, आपस में लेन देन भी हो जाती है और रिफ्रेशमेंट भी हो जाती है। एक दो की विशेषता जो अच्छी पसन्द आती है, उसको यूज़ करते हैं, इससे संगठन अच्छा हो जाता है। यह ठीक है।

जयन्ती बहन से

अभी थोड़ा-थोड़ा सेवा में पार्ट लिया क्योंकि खुशी मिलेगी। सबकी दुआयें, वह भी दवा का काम करेगी। बहुत अच्छा।

डा. निर्मला बहन श्रीलंका जा रही हैं, वहाँ रिट्रीट है

अच्छा है उन्हों को रिफ्रेशमेंट चाहिए।

काठमाण्डू नेपाल की किरण बहन से

प्रकृतिजीत हो, शिव शक्ति हो, यह थोड़ा बहुत हिसाब-किताब है, सब चला जायेगा। मजबूत रहना और सभी नेपाल निवासियों को याद देना, घबराना नहीं।

बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया और 69वीं शिव जयन्ती की बधाइयां दी

आप सबके दिल में तो बाप की याद का झण्डा लहरा ही रहा है। अभी सारे विश्व में जो कोने-कोने में सेवा कर रहे हो, उसकी सफलता निकलनी है जो चारों ओर से यही आवाज आयेगा ''मेरा बाबा'' आ गया। यही है, यही है, यही है। वह दिन भी दूर नहीं है, आना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है। ऐसे ऐसे माइक तैयार हो रहे हैं। आप माइट देंगे

और वह माइक बापदादा को प्रत्यक्ष करेंगे। करना है ना। (बापदादा कोई वी.आई.पी. माइक को सभा में देखकर बोले) यह माइक बैठी है ना। बढ़िया माइक है। ऐसे माइक निकलेंगे जो आपको सिर्फ दृष्टि देनी पड़ेगी। वही दिन आ रहा है, आ रहा है, आ रहा है। अच्छा। ओम् शान्ति।

''मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ, विधाता बनो, तपस्वी बनो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के होलीहंस बच्चों से होली मनाने के लिए आये हैं। बच्चे भी प्यार की डोर में बंधे हुए होली मनाने के लिए पहुंच गये हैं। मिलन मनाने के लिए कितने प्यार से पहुंच गये हैं । बापदादा सर्व बच्चों के भाग्य को देख रहे थे कितना बड़ा भाग्य, जितने ही होलीएस्ट हैं उतने ही हाइएस्ट भी हैं। सारे वल्प में देखो आप सबके भाग्य से ऊंचा भाग्य और किसी का नहीं है। जानते हो ना अपने भाग्य को? वर्तमान समय भी परमात्म पालना, परमात्म पढ़ाई और परमात्म वरदानों से पल रहे हो। भविष्य में भी विश्व के राज्य आधिकारी बनते हो। बनना ही है, निश्चित है, निश्चय ही है। बाद में भी जब पूज्य बनते हो तो आप श्रेष्ठ आत्माओं जैसी पूजा विधिपूर्वक और किसी की भी नहीं होती है। तो वर्तमान, भविष्य और पूज्य स्वरूप में हाइएस्ट अर्थात् ऊंचे ते ऊंचे हैं। आपके जड़ चित्र उन्हों की भी हर कर्म की पूजा होती है। अनेक धर्म पिता, महान आत्मायें हुए हैं लेकिन ऐसे विधि पूर्वक पूजा आप ऊंचे ते ऊंचे परमात्म बच्चों की होती है क्योंकि इस समय हर कर्म में कर्मयोगी बन कर्म करने की विधि का फल पूजा भी विधिपूर्वक होती है। इस संगम समय के पुरुषार्थ की प्रालब्ध मिलती है। तो ऊंचे ते ऊंचे भगवन आप बच्चों को भी ऊंचे ते ऊंची प्राप्ति कराते हैं।

होली अर्थात् पवित्रता, होलीएस्ट भी हो तो हाइएस्ट भी हो। इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन ही पवित्रता है। संकल्प मात्र भी अपवित्रता श्रेष्ठ बनने नहीं देती। पवित्रता ही सुख, शान्ति की जननी है। पवित्रता सर्व प्राप्तियों की चाबी है। इसलिए आप सबका स्लोगन यही है -''पवित्र बनो, योगी बनो।'' जो होली भी यादगार है, उसमें भी देखो पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। जलाने के बिना नहीं मनाते हैं। अपवित्रता को जलाना, योग के अग्नि द्वारा अपवित्रता को जलाते हो, उसका यादगार वह आग में जलाते हैं और जलाने के बाद जब पवित्र बनते हैं तो खुशियों में मनाते हैं। पवित्र बनने का यादगार मिलन मनाते हैं क्योंकि आप सभी भी जब अपवित्रता को जलाते हो, परमात्म संग के रंग में लाल हो जाते हो तो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना का मिलन मनाते हो। इसका यादगार मंगल मिलन मनाते हैं। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिलाते हैं कि सदा हर एक से दुआयें लो और दुआयें दो। अपने दुआओं की शुभ भावना से मंगल मिलन मनाओ क्योंकि अगर कोई बद-दुआ देता भी है, वह तो परवश है अपवित्रता से लेकिन अगर आप बद-दुआ को मन में समाते हो तो क्या खुश रहते हो? सुखी रहते हो? कि व्यर्थ संकल्पों का क्यों, क्या, कैसे, कौन.. इस दु:ख का अनुभव करते हो। बद-दुआ लेना अर्थात् अपने को भी दु:ख और अशान्ति अनुभव कराना। जो बापदादा की श्रीमत है सुख दो और सुख लो, उस श्रीमत का उल्घंन हो जाता है। तो अभी सभी बच्चे दुआ लेना और दुआ देना सीख गये हो ना! सीखा है?

प्रतिज्ञा और दृढ़ता, **दृढ़ता से प्रतिज्ञा करो - सुख देना है और सुख लेना है। दुआ देनी है, लेनी है।** है प्रतिज्ञा, हिम्मत है? जिसमें हिम्मत है आज से दृढ़ता का संकल्प लेते हैं दुआ लेंगे, दुआ देंगे, वह हाथ उठाओ। पक्का? पक्का? कच्चा नहीं होना। कच्चे बनेंगे ना - तो कच्चे फल को चिड़िया बहुत खाती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। सभी के पास चाबी है? है चाबी? चाबी कायम है, माया चोरी तो नहीं कर लेती? उसको भी चाबी

से प्यार है। सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है। बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो - पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते कि बाप हमारे कम्बाइन्ड है, है कम्बाइन्ड? कम्बाइन्ड है? साथ नहीं कम्बाइन्ड। कम्बाइन्ड है? डबल फारेनर्स कम्बाइन्ड है? पीछे वाले कम्बाइन्ड है? गैलरी वाले कम्बाइन्ड है?

अच्छा आज तो बापदादा को समाचार मिला कि मधुबन निवासी पाण्डव भवन, ज्ञान सरोवर और यहाँ वाले भी अलग हाल में सुन रहे हैं। तो उन्हों से भी बापदादा पूछ रहे हैं कि बापदादा कम्बाइन्ड हैं? हाथ उठा रहे हैं। जब कम्बाइन्ड है, सर्व शक्तिवान बापदादा कम्बाइन्ड है फिर अकेले क्यों बन जाते? अगर आप कमजोर भी हो तो बापदादा तो सर्वशक्तिवान है ना! अकेले बन जाते हो तब ही कमजोर बन जाते हो। कम्बाइन्ड रूप में रहो। बापदादा हर एक बच्चे के हर समय सहयोगी हैं। शिव बाप परमधाम से आये क्यों हैं? किसलिए आये हैं? बच्चों के सहयोगी बनने के लिए आये हैं। देखो ब्रह्मा बाप भी व्यक्त से अव्यक्त हुए किसलिए? साकार शरीर से अव्यक्त रूप में ज्यादा से ज्यादा सहयोग दे सकते हैं। तो जब बापदादा सहयोग देने के लिए आफर कर रहे हैं तो अकेले क्यों बन जाते? मेहनत में क्यों लग जाते? 63 जन्म तो मेहनत की है ना! क्या वह मेहनत के संस्कार अभी भी खींचते हैं क्या? मुहब्बत में रहो, लव में लीन रहो। मुहब्बत मेहनत से मुक्त कराने वाली है। मेहनत अच्छी लगती है क्या? क्या आदत से मजबूर हो जाते हो? सहज योगी हैं, बापदादा विशेष बच्चों के लिए परमधाम से सौगात लाये हैं, पता है क्या सौगात लाये हैं? तिली पर भिस्त लाया है। (हथेली पर स्वर्ग लाये हैं) आपका चित्र भी है ना। राज्य भाग्य लाये हैं बच्चों के लिए। इसलिए बापदादा को मेहनत अच्छी नहीं लगती।

बापदादा हर बच्चे को मेहनत मुक्त, मुहब्बत में मगन देखने चाहते हैं। तो मेहनत वा माया की युद्ध से मुक्त बनने का आज संकल्प द्वारा होली जलायेंगे? जलायेंगे? जलाना माना नाम-निशान गुम। कोई भी चीज़ जलाते हैं तो नाम-निशान खत्म हो जाता है ना! तो ऐसी होली मनायेंगे? मनायेंगे? हाथ तो हिला रहे हैं। बापदादा हाथ देख करके खुश हो रहा है। लेकिन, लेकिन है? लेकिन बोलें क्या कि नहीं? मन का हाथ हिलाना। यह हाथ हिलाना तो बहुत इज़ी है। अगर मन ने माना करना ही है तो हुआ ही पड़ा है। नये-नये भी बहुत आये हैं। जो पहले बारी मिलन मनाने के लिए आये हैं, वह हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स में भी हैं।

अभी जो भी पहले बारी आये हैं, बापदादा विशेष उन्हों को अपना भाग्य बनाने की मुबारक दे रहे हैं। लेकिन यह मुबारक स्मृति में रखना और सदा यह लक्ष्य रखो क्योंकि फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है। सबको चांस है, लास्ट में आने वाले भी, पहले वालों से लास्ट में आये हो ना, तो लास्ट वाले लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट आ सकते हैं। छुट्टी है, जा सकते हो। यह सदा याद रखना मुझे अर्थात् मुझ आत्मा को फास्ट और फर्स्ट क्लास में आना ही है। हॉ, वी.आई.पी बहुत आये हैं ना, टाइटल वी.आई.पी का है। जो वी.आई.पी आये हैं वह लम्बा हाथ उठाओ। वेलकम। अपने घर में आने की वेलकम, भले पधारे। अभी तो परिचय के लिए वी.आई.पी. कहते हैं लेकिन अभी वी.आई.पी से वी.वी.वी. आई.पी बनना है। देखो देवतायें आपके जड़ चित्र वी.वी.वी. आई.पी हैं तो आपको भी पूर्वज जैसा बनना ही है। बापदादा बच्चों को देखकर खुश होते हैं। रिलेशन में आये। जो वी.आई.पी

आये हैं उठो। बैठे-बैठे थक भी गये होंगे, थोड़ा उठो। अच्छा।

मातायें जो पहली बार मिल रही है, वह उठो। यह सब पहली बारी आये हैं। अच्छा पाण्डव जो पहले बारी आये हैं वह उठो। बापदादा को खुशी है, क्यों? बच्चों ने सेवा अच्छी की है। सेवा का सबूत बापदादा ने देखा। इस सीजन में मैजारिटी हर ग्रुप में पहले बारी मिलने वाले आधा से भी ज्यादा हैं। इसलिए जिन बच्चों ने मेगा प्रोग्राम किया वा अपने-अपने स्थान में सेवा की है और सबूत दिया है उन सभी बच्चों को बापदादा सेवा की मुबारक, दिल की दुआयें दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है?

दादी ने सन्देश भेजा, आगे क्या करना है? तो बापदादा बच्चों को देख खुश तो है ही लेकिन आगे के लिए जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये हैं उन आत्माओं की विशेष ग्रुप-ग्रुप में हर सेन्टर वाले बुलाकर उनका फाउण्डेशन पक्का करने की पालना करो। रिलेशन तो जोड़ दिया, सम्बन्ध जोड़ा, चाहे कभी-कभी आने वाले, चाहे रेगुलर आने वाले, चाहे सम्पर्क में आये, चाहे सम्बन्ध में आये, लेकिन रिलेशन के साथ-साथ आत्माओं का बाप के साथ कनेक्शन ऐसा मजबूत करो जो ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़े इन्हों को। माया से बार-बार युद्ध नहीं करनी पड़े। मन की लगन ऐसी पक्की करो जो विघ्न आ नहीं सके। जहाँ बाप से लगन है वहाँ विघ्न नहीं आ सकता। असम्भव है। इसलिए सन्देश देने की सेवा करो लेकिन जो सेवा का फल निकला है उस फल को मजबूत बनाओ, पक्का बनाओ। कच्चा फल नहीं रह जाये क्योंकि समय फास्ट जा रहा है। समय का कोई भरोसा नहीं, कब भी क्या भी हो सकता है और अचानक होना है। बापदादा को पता भी है कब होना है लेकिन बतायेंगे नहीं क्योंकि अचानक पेपर होना है। इसलिए जमा का खाता बहुत बढ़ाओ।

वर्तमान समय बापदादा दो बातों पर बार-बार अटेन्शन दिला रहे हैं - एक स्टॉप, बिन्दी लगाओ, प्वाइंट लगाओ। दूसरा - स्टॉक जमा करो। दोनों जरूरी हैं। तीन खजाने विशेष जमा करो - एक अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध अर्थात् प्रत्यक्ष फल, वह जमा करो। दूसरा - सदा सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना। सिर्फ रहना नहीं, करना भी। उसके फल स्वरूप दुआयें जमा करो। दुआओं का खाता कभी-कभी कोई बच्चे जमा करते हैं लेकिन चलते-चलते कोई छोटी-मोटी बात में कनफ्यूज़ हो करके, हिम्मतहीन हो करके जमा हुए खजाने में भी लकीर लगा देते हैं। तो दुआओं का खाता भी जमा हो। उसकी विधि सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना। तीसरा - सेवा द्वारा सेवा का फल जमा करना या खजाना जमा करना और सेवा में भी विशेष निमित्त भाव, निर्मान भाव, निर्मल वाणी। बेहद की सेवा। मेरा नहीं, बाबा। बाबा करावनहार मुझ करनहार से करा रहा है, यह है बेहद की सेवा। यह तीनों खाते चेक करो - तीनों ही खाते जमा हैं? मेरापन का अभाव हो। इच्छा मात्रम् अविद्या। सोचते हैं इस वर्ष में क्या करना है? सीजन पूरी हो रही है अब 6 मास क्या करना है? तो एक तो खाते जमा करना, चेक करना अच्छी तरह से। कहाँ कोने में भी हद की इच्छा तो नहीं है? मैं और मेरापन तो नहीं है? लेवता तो नहीं है? विधाता बनो, लेवता नहीं। न नाम, न मान, न शान, किसी के भी लेवता नहीं, दाता, विधाता बनो।

अभी दु:ख बहुत-बहुत बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। इसलिए मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य एक ही समय में कितनी प्राप्तियां कराता है, एक प्राप्ति नहीं कराता। सिर्फ रोशनी नहीं देता, पावर भी देता है। अनेक प्राप्तियां कराता है। ऐसे आप सभी इन 6 मास में ज्ञान सूर्य बन सुख की, खुशी की, शान्ति की, सहयोग की किरणें फैलाओ। अनुभूति कराओ। आपकी सूरत को देखते ही दु:ख की लहर में कम से कम मुस्कान आ जाये। आपकी दृष्टि से हिम्मत आ जाये। तो यह अटेन्शन देना है। विधाता बनना है, तपस्वी बनना है। ऐसी तपस्या करो जो तपस्या की ज्वाला कोई न कोई अनुभूति कराये। सिर्फ वाणी नहीं सुनें, अनुभूति कराओ। अनुभूति

अमर होती है। सिर्फ वाणी थोड़ा समय अच्छी लगती है सदा याद नहीं रहती। इसलिए अनुभव की अथॉरिटी बन अनुभव कराओ। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रहे हैं उन्हों को हिम्मत, उमंग-उत्साह अपने सहयोग से बापदादा के कनेक्शन से दिलाओ। ज्यादा मेहनत नहीं कराओ। न खुद मेहनत करो न औरों को कराओ। निम्त्ति हैं ना! तो वायब्रेशन ऐसे उमंग-उत्साह का बनाओ जो गम्भीर भी उमंग-उत्साह में आ जाये। मन नाचने लगे खुशी में। सुना क्या करना है? देखेंगे रिजल्ट। किस स्थान ने कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया, खुद दृढ़ बने, कितनी आत्माओं को दृढ़ बनाया, साधारण पोतामेल नहीं देखेंगे, भूल नहीं की, झूठ नहीं बोला, कोई विकर्म नहीं किया, लेकिन कितनी आत्माओं को उमंग-उत्साह में लाया, अनुभूति कराई, दृढ़ता की चाबी दी। ठीक है ना, करना ही है ना। बापदादा भी क्यों कहे कि करेंगे! नहीं, करना ही है। आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा? पीछे आने वाले? आप ही कल्प-कल्प बाप से अधिकारी बने थे, बने हैं और हर कल्प बनेंगे। ऐसा दृढ़ता पूर्वक बच्चों का संगठन बापदादा को देखना ही है। ठीक है ना! हाथ उठाओ, बनना ही है, मन का हाथ उठाओ। दृढ़ निश्चय का हाथ उठाओ। यह तो सब पास हो गये हैं। पास हैं ना? अच्छा।

सभी खुश हैं? प्रबन्ध से ज्यादा आ गये हैं। (23 हजार से भी अधिक पहुंच गये हैं) कोई बात नहीं, जब ज्यादा आयेंगे तो दादी का संकल्प चलेगा ना, बढ़ाने का। भले आये। अच्छा है - हाल को कभी तो छोटा होना ही चाहिए। होना चाहिए ना! पहली लाइन वाले होना चाहिए ना। तब तो बनायेंगे ना! ड्रामा में वृद्धि होनी ही है। सेवाधारी थक तो नहीं जाते? किसका टर्न है अभी? गुजरात का है। गुजरात तो बड़ा है। गुजरात वाले उठो। आधा हाल तो गुजरात है। (7 हजार हैं) तो गुजरात के सेवाधारी बहुत आये हैं इसलिए सेवा लेने वाले भी बहुत आ गये हैं। थक तो नहीं गये? नहीं। मातायें, मातायें रोटी बेल-बेल कर थक गई? नहीं थकी। सबसे मेहनत का काम है रोटी बनाना। गुजरात वालों को वरदान है - जैसे देश के हिसाब से समीप है, ऐसे ही बापदादा के दिल के भी समीप रहना है। रहते भी हैं, रहना भी है। बापदादा ने देखा कि कभी भी कोई भी आवश्यकता में गुजरात हाज़िर हो जाता है। तो हाज़िर होने वाली आत्माओं के लिए बापदादा भी सदा हाज़िर है।

अच्छा - आज बापदादा को सन्देश ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन और शान्तिवन वालों ने दिया है कि हमें दूर बैठे नजदीक देखना। तो बापदादा सभी स्थान निवासी शार्ट में सभी तरफ के मधुबन निवासी चाहे बहनें, चाहे भाई सभी को सम्मुख देख रहे हैं। दूर नहीं है, दिल पर हैं और बापदादा दिल से याद प्यार दे रहे हैं। वैसे तो दिखाई नहीं देते, आज विशेष दिखाई दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी:- हाथ हिलाओ। बापदादा ने सभी डबल विदेशी बच्चों की जो रिफ्रेशमेंट हुई है, वह देखा। चार्ट अच्छा बनाया है। अच्छा किया है और अच्छे ते अच्छे ही रहना है। कभी भी कोई पूछे - हालचाल क्या है? तो सभी का एक ही जवाब हो - कुशल हाल है, फरिश्ते की चाल है। ठीक है ना। पसन्द है? ऐसे नहीं, अमेरिका अफ्रीका में जाकर बदल जाओ। बदलना नहीं और उड़ना है और उड़ाना है। उमंग उत्साह के पंख सदा हैं ही। दूसरों को भी उमंग-उत्साह के पंख लगाने हैं। यह अच्छा है, बापदादा सब समाचार सुनते रहते हैं। मधुबन का लाभ अच्छे ते अच्छा उठाने का प्रोग्राम बनाते हैं, यह देखके सुनके बापदादा खुश होते हैं। सिर्फ अमर भव का वरदान भूलना नहीं, अमर भव। 60 देशों से आये हैं। 60 देशों के एक-एक भिन्न-भिन्न देश वाले हाथ उठाओ, देखें 60 हैं, जो आस्ट्रेलिया से आये, अफ्रीका से आये, अमेरिका से आयें, वह हाथ उठाओ। भले पधारे। अच्छा है बापदादा और सर्व ब्राह्मण परिवार भी आप सबको देखके खुश होते हैं। क्यों जितने देशों में आप कर रहे हो, उतने देशों की भाषा सीखने के लिए भारतवासियों को सहयोग दे दिया आपने। इसीलिए आप सबको देखके

खुश होते हैं। अच्छे, उमंग-उत्साह में हैं और सदा रहने वाले हैं। सब टीचर्स ठीक हैं ना! बहुत मेहनत की कि उमंग-उत्साह में रहे? अच्छा प्रोग्राम बनाते हैं, बापदादा खुश होते हैं। अभी बापदादा डबल विदेशियों से एक बात चाहते हैं - सुनायें?

बापदादा ने सुना है कि डबल विदेशी ईमेल बड़े लम्बे-लम्बे करते हैं। जनक बच्ची को बहुत बिजी कर दिया है। रात को जागना पड़ता है। तो यह भी शार्टकट करते जाओ, लम्बा नहीं। ठीक है ना! शार्ट तो हो सकता है। तो ठीक है? शार्ट करेंगे? भले समाचार भेजो लेकिन शार्ट, 3-4 लाइन, ज्यादा में ज्यादा 5 लाइन में। हो सकता है ना! जो शार्टकट करेंगे वह हाथ उठाओ। जो करते ही नहीं हैं वह हाथ नहीं उठाते हैं, होशियार हैं। अच्छा है। अच्छा।

माताओं को भावना और प्यार की मुबारक हो विशेष। पाण्डवों को सदा नम्बरवन और विन करने की मुबारक हो और आये हुए निशानी वी.आई.पी. उन सभी बच्चों को भी सदा हर कदम में उमंग-उत्साह द्वारा आगे कनेक्शन बढ़ाने की, कदम में पदम की कमाई जमा करने की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा - चारों ओर के दिलतख्तनशीन बच्चों को, दूर बैठे भी परमात्म प्यार का अनुभव करने वाले बच्चों को, सदा होली अर्थात् पवित्रता का फाउण्डेशन दृढ़ करने वाले, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता के अंशमात्र से भी दूर रहने वाले महावीर, महावीरनी बच्चों को, सदा हर समय सर्व जमा का खाता, जमा करने वाले सम्पन्न बच्चों को, सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने वाले बाप समान बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दुआयें और नमस्ते।

दादियों से:- दादियां तो गुरू भाई हैं ना, तो साथ में बैठो। तो भाई साथ में बैठते हैं। अच्छा है। बापदादा रोज़ स्नेह की मालिश करते हैं। निमित्त है ना! यह मालिश चला रही है। अच्छा है - आप सभी का एक्जैम्पुल देख करके सभी को हिम्मत आती है। निमित्त दादियों के समान सेवा में, निमित्त भाव में आगे बढ़ना है। अच्छा है आप लोगों का यह जो पक्का निश्चय है ना - करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। यह निमित्त भाव सेवा करा रहा है। मैं पन है? कुछ भी मैं पन आता है? अच्छा है। सारे विश्व के आगे निमित्त एक्जैम्पुल है ना। तो बापदादा भी सदा विशेष प्यार और दुआयें देते ही रहते हैं। अच्छा। बहुत आये हैं तो अच्छा है ना! लास्ट टर्न फास्ट गया है। अच्छा।

डबल विदेशी मुख्य टीचर्स बहिनों से:- सभी मिलके सभी की पालना करने के निमित्त बनते हो यह बहुत अच्छा पार्ट बजाते हो। खुद भी रिफ्रेश हो जाते हो और दूसरों को भी रिफ्रेश कर देते हो। अच्छा प्रोग्राम बनाते हो। बापदादा को पसन्द है। खुद रिफ्रेश होंगे तब तो रिफ्रेश करेंगे। बहुत अच्छा। सभी ने रिफ्रेशमेंट अच्छी की। बापदादा खुश है। बहुत अच्छा।

सूचना:-

अवास–निवास विभाग शान्तिवन की ओर से सूचित किया जाता है कि किसी भी प्रोग्राम में आने से पहले, आप की सूचना (नाम सहित या आवश्यक फार्म) आवास–निवास आफिस शान्तिवन में कम से कम 21 दिन पहले भेजना अनिवार्य है।

4-9-05

शिक्षा के साथ क्षमा और रहम को अपना लो, दुआयें दो, दुआयें लो तो आपका घर आश्रम बन जायेगा

आज बापदादा सर्व बच्चों के मस्तक में प्युरिटी की रेखायें देख रहे हैं क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन ही है पवित्रता। पवित्रता की रेखायें कौन सी हैं, जानते हो? पवित्रता सर्व को प्रिय है। पवित्रता सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद की जननी है। पवित्रता मानव का सच्चा शृंगार है। पवित्रता नहीं तो मानव जीवन का मूल्य नहीं। जैसे देखते हो देवतायें पवित्र हैं, इसलिए ही माननीय और पूज्यनीय हैं। पवित्रता नहीं तो मानव जीवन को आजकल देख रहे हो। बापदादा ने आप सभी बच्चों को ब्राह्मण जन्म का वरदान यही दिया - पवित्र भव, योगी भव। जिस आत्मा में पवित्रता है, उसकी चाल, चलन, चेहरा चमकता है इसलिए पवित्रता ही जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाली है। वास्तव में आप सब बच्चों का आदि स्वरूप ही पवित्रता है। अनादि स्वरूप भी पवित्रता है। ऐसी पवित्र आत्माओं की विशेषतायें उनकी जीवन में सदा पवित्रता की पर्सनैलिटी दिखाई देती है। पवित्रता की रीयल्टी, पवित्रता की रॉयल्टी चेहरे और चाल में दिखाई देती है। यह रेखायें जीवन का शृंगार हैं। रीयल्टी है - मेरा अनादि आदि स्वरूप पवित्र है, यह स्मृति समर्थ बना देती है। रॉयल्टी है - स्वयं भी स्वमान में और हर एक को सम्मान देकर चलने वाला। पर्सनैलिटी है - सदा सन्तुष्टता और प्रसन्नता। स्वयं भी सन्तुष्ट और अन्य को भी सन्तुष्ट करने वाले। पवित्रता से प्राप्तियां भी बहुत हैं। बापदादा ने आप सभी बच्चों को क्या-क्या प्राप्ति कराई है, वह जानते हो ना! कितने खज़ानों से भरपूर किया है, अगर

प्राप्तियों को स्मृति में रखें तो भरपूर हो जाएं।

सबसे पहला खज़ाना दिया है – ज्ञान का खज़ाना। जिससे जीवन में रहते दु:ख अशान्ति से मुक्त हो जाते। व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प, विकल्प, विकर्म से मुक्त हो जाते हैं। अगर कोई भी व्यर्थ संकल्प वा विकल्प आता भी है, तो ज्ञान के बल से विजयी बन जाते हैं।

दूसरा खज़ाना है – याद, योग। जिससे शक्तियों की प्राप्ति होती है और शक्तियों के आधार से सर्व समस्याओं को, सर्व विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं।

तीसरा खज़ाना है – धारणाओं का, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है। और चौथा खज़ाना है - सेवा का। सेवा करने से, जिसकी सेवा करते हो उसकी दुआयें मिलती हैं, खुशी प्राप्त होती है।

इतने खज़ाने बाप द्वारा सभी बच्चों को प्राप्त होते हैं। बाप सभी को एक जैसे ही खज़ाने देते हैं, कोई को कम, कोई को ज्यादा नहीं देते हैं। लेकिन लेने वालों में फ़र्क हो जाता है। कोई बच्चे तो खज़ाने को प्राप्त कर खाते, पीते, मौज करते और फिर मौज में खत्म कर देते हैं। और कोई बच्चे खाते, पीते, मौज करते जमा भी करते हैं। और कोई बच्चे कार्य में भी लगाते और बढ़ाते भी जाते हैं। बढ़ाने की चाबी है - खज़ाने को स्व के प्रति और दूसरों के प्रति यूज़ करना। जो यूज़ करता है वह बढ़ाता है। तो अपने आपसे पूछो कि यह विशेष खज़ाने जमा हैं? जमा हैं, क्या कहेंगे? हाँ या थोड़ा-थोड़ा? जिसके पास यह खज़ाने जमा है वह सदा भरपूर रहता है। देखो कोई भी चीज़ भरपूर रहती है ना, तो हलचल नहीं होती है। अगर भरपूर नहीं होती तो हलचल होती है, हिलती है। कोई भी चीज़ को अगर पूरी रीति से भर नहीं दो तो वह हिलती है, तो यहाँ भी अगर सर्व खज़ानों से भरपूर नहीं हैं, तो हलचल होती है। सदा यह नशा रहे कि बाप के खज़ाने मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। बाप ने दिया, आपने लिया तो सब खज़ाने

किसके हुए? आपके हो गये ना। तो जिसके पास खज़ाने हैं, वह कितना नशे में रहता है? जैसे छोटा-सा राजा का लड़का राजकुमार होता है, पता भी नहीं होता है कि बाप के पास क्या-क्या खज़ाना है लेकिन नशा रहता है कि बाप के खज़ाने मेरे खज़ाने हैं और खज़ाने की खुशी में रहता है। अगर खुशी कम रहती है तो उसका कारण क्या होता है? बाप ने तो खज़ाने दिये हैं, सुना। लेकिन एक हैं सुनने वाले, दूसरे हैं समाने वाले, जो समाने वाले हैं वह नशे में रहते हैं।

आज नये-नये बच्चे भी आये हैं। बापदादा आप लक्की बच्चों को आप सबके भाग्य की मुबारक दे रहे हैं। अपने भाग्य को पहचाना! पहचाना है? परमात्म-प्यार, अविनाशी प्यार जो सिर्फ एक जन्म नहीं चलता, अनेक जन्म सदा ही प्यार कायम रहता है क्योंकि यह जो समय चल रहा है, यह समय भी संगमयुग भाग्यवान युग है। सतयुग को भी भाग्यवान कहते हैं लेकिन वर्तमान संगमयुग का समय उससे भी भाग्यवान है। क्यों? इस संगमयुग में ही बाप द्वारा अखण्ड भाग्य का वरदान, वर्सा प्राप्त होता है। तो ऐसे संगमयुग में, भाग्यवान समय में आप सभी अपना भाग्य लेने के लिए पहुंच गये हो। बापदादा बच्चों को बहुत एक सहज पुरुषार्थ की विधि सुनाते हैं - सहज चाहते हो ना! मुश्किल तो नहीं चाहते हो ना! इन बच्चों को (पुरानों को) तो भाग्य की सहज विधि मिल गई है। मिली है ना? सबसे सहज, और कुछ भी नहीं करना, सिर्फ एक बात करना, एक बात तो कर सकते हो ना! हाँ करो या ना करो! कहो हाँ जी। तो सबसे सहज विधि है - अमृतवेले से लेके सबको जो भी मिले, उससे दुआयें लो और दुआयें दो। चाहे क्रोधी भी आवे, लेकिन आप उसको भी दुआयें दो और दुआयें लो क्योंकि दुआयें तीव्र पुरुषार्थ का बहुत सहज यन्त्र हैं। जैसे साइंस में रॉकेट है ना - तो कितना जल्दी कार्य कर लेता है। ऐसे दुआयें देना और दुआयें लेना, यह भी एक बहुत सहज साधन है आगे बढ़ने का। अमृतवेले बाप से

सहज याद से दुआयें लो और सारा दिन दुआयें दो और दुआयें लो, यह कर सकते हो? कर सकते हो तो हाथ उठाओ। कोई बद्दुआ दे तो क्या करेंगे? आपको बार-बार तंग करे तो? देखो, आप परमात्मा के बच्चे दाता के बच्चे दाता हो ना! मास्टर दाता तो हो। तो दाता का काम क्या होता है? देना। तो सबसे अच्छी चीज़ है दुआयें देना। कैसा भी व्यक्ति हो, लेकिन है तो आपका भाई, बहन। परमात्मा के बच्चे तो भाई-बहन हो ना! तो परमात्मा का बच्चा है, मेरा ईश्वरीय भाई है, ईश्वरीय बहन है, उसको क्या देंगे! बद्दुआ देंगे क्या? बाप कभी बद्दुआ देता है! देगा? देता है? हाँ या ना? हॉ-ना करो। बहुत खुश रहेंगे। क्यों? अगर बद्दुआ वाले को भी आप दुआ देंगे, वह दे न दे, लेकिन आप दुआ लेंगे, तो दु:ख क्यों होगा। बापदादा आप आये हुए बच्चों को एक वरदान देता है - वरदान याद रखेंगे तो सदा खुश रहेंगे। वरदान सुनायें? सुनेंगे!

वरदान है - अगर आपको कोई दु:ख दे तो भी आप दु:ख लेना नहीं, वह दे लेकिन आप नहीं लेना। क्योंकि देने वाले ने दे दिया, लेकिन लेने वाले तो आप हो ना! देने वाला, लेने वाला नहीं है। अगर वह बुरी चीज़ देता है, दु:ख देता है, अशान्ति देता है, तो बुरी चीज़ है ना। आपको दु:ख पसन्द है? नहीं पसन्द है ना! तो बुरी चीज़ हो गई ना। तो बुरी चीज़ ली जाती है क्या? कोई आपको बुरी चीज़ देवे तो आप ले लेंगे? लेंगे? नहीं लेंगे। तो लेते क्यों हो? ले तो लेते हो ना! अगर दु:ख ले लेते हो तो दु:खी कौन होता है? आप होते हो या वह होता है? लेने वाला ज्यादा दु:खी होता है। अगर अभी से दु:ख लेंगे नहीं तो आधा दु:खं तो आपका दूर हो गया, लेंगे ही नहीं ना! और आप दु:ख के बजाए उसको सुख देंगे तो दुआयें मिलेगी ना। तो सुखी भी रहेंगे और दुआओं का खज़ाना भी भरपूर होता जायेगा। हर आत्मा से, कैसी भी हो आप दुआयें लो। शुभ भावना, शुभ कामना रखो। कभी-कभी क्या होता है? कोई ऐसा काम करता है ना, तो

कोशिश करते हैं शिक्षा देने की। इसको ठीक कर दूं, शिक्षा देते हो। शिक्षा दो लेकिन शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है कि क्षमा का रूप बनके शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, रहम क्षमा भी करो और शिक्षा भी दो। दो शब्द याद रखो - शिक्षा और क्षमा, रहम। अगर रहमदिल बनके उसको शिक्षा देंगे तो आपकी शिक्षा काम करेगी। अगर रहमदिल बनके नहीं देंगे, तो शिक्षा एक कान से सुनेंगे दूसरे कान से निकल जायेगी। शिक्षा धारण नहीं होगी। ऐसे है ना? अनुभव है? आप भी किसका शिक्षक तो नहीं बन जाते? शिक्षक बनना जल्दी आता है लेकिन क्षमा करना, दोनों साथ-साथ चाहिए। अभी से रहम, रहम करने की विधि है शुभ भावना, शुभ कामना। जैसे कहते हैं ना सच्चा प्यार, पत्थर को भी पानी कर देता है... ऐसे ही क्षमा स्वरूप से शिक्षा देने से आपका कार्य जो चाहते हो यह नहीं करे, यह नहीं हो, वह प्रत्यक्ष दिखाई देगा। आपके रहमदिल बन शिक्षा देने का प्रभाव उसकी कठोरदिल भी परिवर्तन हो जायेगी। तो क्या वरदान मिला? न दु:ख देना, न दु:ख लेना। पसन्द है? पसन्द है तो अभी लेना नहीं। गलती नहीं करना। जब बाप दु:ख नहीं देता तो फालो फादर तो करना है ना? कर रहे हैं! कभी-कभी थोड़ा डांट देते हो। डांटना नहीं। रहम करो। रहम के साथ शिक्षा दो। बार-बार किसको डांटने से और ही आत्मा जो है ना, वह दुश्मन बन जाती है। घृणा आ जाती है। परमात्म बच्चे हो ना! तो जैसे बाप पतित को भी पावन बनाने वाला है, तो आप दु:खी को सुख नहीं दे सकते हो? अभी जाकर ट्रायल करना, ट्रायल करेंगे ना! तो पहले चैरिटी बिगन्स एट होम, परिवार में अगर कोई दु:ख देवे, तो भी दु:ख लेना नहीं। दुआयें देना, रहमदिल बनना, पहले घर वालों को करो। आपके घर का प्रभाव मोहल्ले में पड़ेगा, मोहल्ले का प्रभाव देश में पड़ेगा, देश का प्रभाव विश्व में पड़ेगा। सहज है ना! अपने परिवार में शुरू करो क्योंकि देखो एक भी अगर क्रोध करता है तो घर का वातावरण क्या हो जाता है?

घर लगता है या युद्ध का मैदान लगता है? उस समय अच्छा लगता है? नहीं लगता है ना!

आप लोगों के लिए भी है **(आज वी.आई.पीज् के साथ मधुवन वाले समर्पित भाई-बहनें भी सामने बैठे हैं)** अपने-अपने साथियों से, अपने अपने कार्य कर्ताओं से न दु:ख लेना, न दु:ख देना। दुआयें देना और दुआयें लेना। अगर आप अधिकार से ऐसे समय पर भी दिल से मेरा बाबा कहेंगे, परमात्मा बाबा, मेरा बाबा... तो कहावत है कि भगवान सदा हाज़िर है। अगर आपने दिल से, अधिकार रूप में ऐसे समय पर मेरा बाबा कहा, तो बाप हज़ूर हाज़िर हो जायेगा। क्योंकि बाप किसलिए है? बच्चों के लिए तो है। और अधिकारी बच्चे को बाप सहयोग नहीं दे, यह हो ही नहीं सकता है। असम्भव। तो परिवर्तन करके जाना। जैसे आये, वैसे नहीं जाना, परिवर्तन करके ही जाना। क्योंकि देखो, इतना खर्चा करके आये हो, टिकेट तो लगी ना। खर्चा भी किया, समय भी दिया तो उसकी वैल्यु तो रखेंगे ना! तो वैल्यु है - स्व परिवर्तन से पहले घर का परिवर्तन, फिर विश्व का, देश का परिवर्तन। आपका घर आश्रम बन जाये। घर नहीं, आश्रम। वैसे भी शास्त्र भी कहते हैं गृहस्थ आश्रम, लेकिन आज आश्रम नहीं हैं। आश्रम अलग हैं, घर अलग हैं। तो घर को आश्रम बनाना। दुआयें देना और लेना यह आश्रम का कार्य है। आपका घर मन्दिर बन जायेगा। मन्दिर में मूर्ति क्या करती है? दुआयें देती है ना! मूर्ति के आगे जाकर क्या कहते हैं? दुआ दो। मर्सी, मर्सी कहके चिल्लाते हैं। तो आपको भी क्या देना है? दुआ। ईश्वरीय प्यार दो, आत्मिक प्यार। शरीर का प्यार नहीं आत्मिक प्यार। आज प्यार है तो स्वार्थ का प्यार है। सच्ची दिल का प्यार नहीं है। स्वार्थ होगा तो प्यार देंगे, स्वार्थ नहीं होगा तो डोंटकेयर। तो आप क्या करेंगे? आत्मिक प्यार देना, दुआ देना, दु:ख न लेना, न दु:ख देना। देखो आपको चांस मिला है, बापदादा को भी खुशी

है। इतने जो भी सब आये हैं, (भारत के करीब 250 वी.आई.पीज रिट्रीट में आये हुए हैं) इतने घर तो आश्रम बनेंगे ना। बनायेंगे ना? पक्का? कि थोड़ा-थोड़ा कच्चा? जो समझते हैं कुछ भी हो जाए, थोड़ा सहन तो करना पड़ेगा, समाने की शक्ति कार्य में लगानी पड़ेगी, लेकिन सहनशक्ति का फल बड़ा मीठा होता है। सहन करना पड़ता है लेकिन फल बड़ा मीठा होता है। तो जो पक्का वायदा करते हैं, घर-घर को स्वर्ग बनायेंगे, मन्दिर बनायेंगे, आश्रम बनायेंगे, वह हाथ उठाओ। देखा-देखी में नहीं उठाना क्योंकि बापदादा हिसाब लेगा ना फिर। देखकर नहीं उठाना। सच्चा-सच्चा मन का हाथ, मन से हाथ उठाओ। अच्छा। दादियां, इनको इसकी क्या प्राइज़ देंगे? हाँ बोलो, दादी इतने मन्दिर बन जायेंगे तो आप उसको क्या प्राइज देंगी? (अपने घर वालों को ले आवें) यह तो प्राइज नहीं दी, यह तो काम सुना दिया। (बाबा जो आज्ञा करेंगे) देखो प्राइज तो आपको मिल जायेगी, कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन... लेकिन है? लेकिन बोलें। आप जाने के बाद अपनी धारणा से परिवर्तन करना और 15 दिन के बाद, मास के बाद अपनी रिजल्ट लिखना, जो एक मास भी दु:ख नहीं लेगा, न देगा, उसको बहुत अच्छी प्राइज़ देंगे। अगर आप आयेंगे तो मुबारक है, अगर नहीं आ सकेंगे तो भी सेन्टर पर भेजेंगे।

आज विशेष इन्हों के प्रति आना हुआ है ना! तो कमाल करके दिखाना। परमात्म बच्चे हो कमाल नहीं करेंगे तो क्या करेंगे। धमाल नहीं करना, कमाल करना। अगर कोई गलती से आपके पास बुरा संकल्प आ जाये, तो क्या करेंगे? आयेगा तो सही, क्योंकि आपने बहुत समय बुराई को पाल के रखा है, तो देखो, पशु जिसे पालते हैं उसको अगर दूर भी छोड़कर आते हैं, तो वह फिर वापस आ जाता है। तो मानो आपने हाथ तो उठाया, बहुत अच्छा किया लेकिन गलती से कोई कमजोरी आ जाए तो क्या करेंगे? कमजोरी लाने देंगे? देखो, इसकी भी विधि बताते हैं। आपने

वायदा तो किया ना, बुराई दे दिया ना। बुराई बाप को दे दी ना। अच्छा कोई को कोई चीज़ दे देते हैं, फिर अगर गलती से आपके पास आ जाती है तो आप क्या करेंगे? अपने पास रखेंगे कि वापस करेंगे? वापस करेंगे ना? तो अगर आपके पास थोड़ी क्रोध की रेखा, लोभ की, मोह की, अभिमान की, गलती से आ भी जाये, क्योंकि बहुत समय रखा है। तो उसे वापस कर देना, बाबा, बाबा.. आप अपनी चीज़ आप सम्भालो, मेरी नहीं है। बाप तो सागर है ना, सागर में समा देना। आप यूज़ नहीं करना क्योंकि अमानत हो गई ना, तो अमानत में ख्यानत नहीं की जाती है। बाप को दे दो, बाबा आप जानो, यह जाने, मैं नहीं यूज़ करूंगा। छोटे बच्चों को भी आप सिखाते हो, मिट्टी नहीं खाना, सिखाते हो ना! और बच्चा फिर मिट्टी खा लेता है, उसको मिट्टी अच्छी लगती है फिर आप क्या करते हो? बार-बार उसके हाथ को छुड़ाते हो या खाने देते हो? छुड़ाते हो ना। तो यह अपने मन को छुड़ाना। मन में ही तो आयेगा ना। तो अपने मन का मालिक बनके इस चीज़ को छोड़ना। विधि ठीक है ना! करेंगे तो सहज हो जायेगा। हिम्मत नहीं छोड़ना। आपकी हिम्मत का एक कदम और हज़ार कदम बाप की मदद का है ही है। अनुभव करके देखना। हिम्मत नहीं हारना, दिलशिकस्त नहीं होना। सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं, दिलशिकस्त नहीं होना। हिम्मत नहीं हारना, दृढ़ संकल्प करना, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

बहुत अच्छा किया। अच्छा अभी क्या करना है? इसको कहते हैं वी.आई.पी. ग्रुप। देखो, आपको टाइटल अच्छा मिला है। अभी वी.आई.पी नहीं बनना, वी.वी.आई.पी.। वी.आई.पी. तो कामन है, लेकिन वी.वी.वी.आई.पी.। विशेष आत्मा, आई.पी.। अच्छा।

आज मधुबन निवासियों को चांस मिला है। यह सभी मधुबन निवासी आप सब आये हुए भाई-बहनों को बहुत थैंक्स दे रहे हैं कि आपके

कारण मधुबन निवासी भी मिलेंगे क्योंकि आपका ग्रुप छोटा है। नहीं तो बहुत हजारों का ग्रुप होता है। तो एक मास के बाद अपने सेन्टर की तरफ से रिजल्ट लिखना। फिर प्राइज ज़रूर देंगे। अच्छा। अच्छा -अभी क्या करना है? (ज़ोन वाइज़ मिलना है)

दिल्ली ज़ोन – दिल्ली निवासियों को तो सेवा का चांस बहुत अच्छा है क्योंकि दिल्ली की जो भी सेवायें होती हैं, वह विश्व में फैलती हैं। दिल्ली का आवाज़ विश्व तक पहुंचता है। तो दिल्ली से अभी कितने आये हैं? (50) तो जब दिल्ली में 50 घर आश्रम बन जायेंगे तो नाम कितना होगा। वायुमण्डल तो बदलेगा ना क्योंकि कोशिश तो सब करते हैं कि घर-घर में हर आत्मा शान्त हो जाए, सुखी हो जाए। तो जब दुआ देंगे और लेंगे तो घर में सुखी और शान्ति का वायब्रेशन होगा। और वह आवाज़ वायुमण्डल में फैलेगा। तो घर भी आश्रम बनेगा और वायुमण्डल भी फैलेगा। डबल सेवा हो जायेगी। तो क्या बनेंगे? दिल्ली वाले नम्बर वन बनेंगे या दो भी चलेगा? एक नम्बर लेना है या दो भी चलेगा? (एक नम्बर लेना है) अच्छा, फिर तो सब ताली बजाओ। बहुत अच्छा हिम्मतवान बच्चों को बापदादा की पदमगुणा मदद है ही है। अच्छा।

पंजाब-हरियाणा, हिमाचल, जम्मू कश्मीर और उत्तरांचल – अच्छा है, पंजाब में नदियां बहुत हैं। तो नदियों का काम क्या है? नदियां सभी को शीतलता देती हैं। तो आप परमात्म बच्चे पंजाब में शीतलता, शान्ति का वायुमण्डल फैलायेंगे। वैसे पंजाब को शेर भी कहते हैं, पंजाब शेर है, तो शेर किससे डरता नहीं है, डराता है, डरता नहीं है तो आप भी माया से डरना नहीं। मास्टर सर्वशक्तिवान बन सामना करना, ठीक है। इतनी ताकत है पंजाब में? करेंगे? चाहे उत्तरांचल हो, चाहे क्या भी हो, सभी करेंगे? तो हिम्मते बच्चे मददे बाप। कुछ भी आवे, मेरा बाबा कहने से सब खत्म हो जायेगा। दिल से कहना, सिर्फ मुख से नहीं, मन से कहेंगे

तो सब दु:ख दूर हो जायेंगे। अच्छा।

आंध्र प्रदेश – (करीब 40 हैं) सदा अपने को हम विजयी रत्न हैं, क्योंकि परमात्मा का साथ है तो परमात्मा जिसका साथी है वह सदा विजयी है ही है। तो सदा अपने को परमात्म साथी पाण्डव अनुभव करना। विजय आपके गले का हार है, यही सदा स्मृति में रखना। गले में विजय की माला पिरोई हुई है। यह निश्चय और नशा रखना। ठीक है ना! अभी आन्ध्रा नम्बर लेना। वह कहते हैं नम्बरवन और आप भी नम्बरवन। बनना है तो वन, टू बनके क्या करेंगे! तो आप भी नम्बरवन बनना। विन करेंगे तो वन होंगे। विन करना आता है ना, तो विन, वन। अच्छा।

मुम्बई और महाराष्ट्र – महाराष्ट्र का अर्थ ही है महान, महान हो ना! अभी बाप की याद और सेवा द्वारा अपने को महान बनाए औरों को भी महान बनाना। जैसा नाम है ना, महाराष्ट्र। तो कोई महान कार्य करेंगे ना! तो महान बनना ही है, और महान कार्य करके दिखाना है। ऐसे पक्के हैं? पक्के? महान तो पक्के ही होते हैं। बापदादा को खुशी है हर एक जो भी आये हैं वह हिम्मत वाले हैं। घबराने वाले नहीं हैं। इसलिए मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

कर्नाटक – कर्नाटक वालों को बापदादा कहते हैं, देखो नाम है, कर - नाटक, नाटक कर। तो इस सृष्टि को भी नाटक कहते हैं, बेहद का ड्रामा। इसमें कर्नाटक वाले क्या बजायेंगे? हीरो पार्ट बजायेंगे? हीरो। अच्छा इसके लिए क्या करना पड़ेगा? बहुत छोटी सी बात है, ज़ीरो को याद करना तो हीरो बन जायेंगे। सहज है ना। और जीरो स्वयं आत्मा भी हो, और जीरो बाप भी है, तो जीरो को याद करना, हीरो बन पार्ट बजाना। ठीक है ना। बहुत अच्छा। भले आयें मुबारक हो।

तामिलनाडु – देखो पाण्डव भी पांच थे, आप अगर थोड़े हैं कोई हर्जा नहीं, लेकिन पांच पाण्डव थोड़े होते भी विजयी बन गये। तो आप

आये थोड़े हो लेकिन विजयी रत्न हैं, और सदा विजयी रहेंगे, संख्या कम है तो कोई हर्जा नहीं लेकिन विजयी है, विजयी रहेंगे। तो विजय का वरदान आप सबको विशेष है। ठीक है, विजयी बनेंगे।

गुजरात – बापदादा आप सबके मस्तक में क्या देख रहे हैं? बापदादा आपके मस्तक में तीन बिन्दुओं का तिलक देख रहे हैं। वह तीन बिन्दियां हैं एक आप आत्मा बिन्दी, बिन्दी हो ना। बाप भी बिन्दी, और जो कुछ ड्रामा में बीत जाता है तो उसको फुलस्टाप लगाया जाता है, तो फुलस्टाप भी बिन्दी होता है ना। तो आप सबके मस्तक में तीन बिन्दुओं का तिलक देख रहे हैं। अभी रोज़ अमृतवेले उठकर बापदादा से मिलन मनाए शक्ति ले, दुआयें ले अपने आपको तीन बिन्दुओं का तिलक लगाना। तिलक मस्तक में ही लगाया जाता है क्योंकि मस्तक स्मृति का स्थान है। तो आप स्मृति का, तीन बिन्दुओं का रोज़ तिलक लगाना। तिलक लगाना आता है ना। अभी यह तिलक लगाना तो सारा दिन बहुत सहयोग मिलेगा। तिलकधारी बन ताजधारी बन जायेंगे, तख्तधारी बन जायेंगे। अच्छा।

ईस्टर्न – ईस्ट से क्या निकलता है? सूर्य निकलता है। तो आप ईस्टर्न ज़ोन की तरफ से आये हो तो क्या जाकर करेंगे? ज्ञान सूर्य उदय हो चुका है, इसका परिचय सबको देना। जैसे सूर्य सबको सकाश देता है ना, रोशनी देता है ना! ऐसे आप भी मास्टर हो ना! आप मास्टर ज्ञान सूर्य हो गये तो आप क्या करेंगे? सबको रोशनी देना, सकाश देना। यह है ईस्टर्न ज़ोन का कार्य। ठीक है? बहुत अच्छा। वैसे ईस्टर्न से ही ब्रह्मा बाप निकला, लक्की हैं। तो आप लोग तो डबल लकी हो गये। स्थान भी लकी आत्मायें भी लकी। अच्छा। बहुत अच्छा।

राजस्थान – नाम ही है राजस्थान। तो राजस्थान में राजायें रहते थे। अभी तो नहीं हैं लेकिन रहते थे। तो आप भी राजा बनके जा रहे हैं। राजा बनें? स्वराज्य। स्व राज्य का तिलक लगाया ना। तो हमेशा यही याद

रखना कि हम राजस्थान के स्वराज्य अधिकारी हैं। जो स्व राज्य अधिकारी बनता है वह विश्व का राज्य अधिकारी अन्डरस्टुड बनता है, तो स्वराज्य कभी ढीला नहीं करना, राजा तो राजा होता है ना। कभी भी कोई कर्मेन्द्रियों के वश नहीं होना। राजा बनके ऑर्डर करना, राजा बनके कायदे से चलाना। तो राजस्थान को स्वराज्य अधिकारी का वरदान है। ठीक है ना? स्वराज्य है ना पक्का? देखो राजस्थान बहुत नजदीक है तो जो नियरेस्ट होता है वह डियरेस्ट होता है। तो ऐसे ही अपने को अनुभव करना। अच्छा।

यू.पी. – तीन हैं, तीन तो त्रिमूर्ति गाई हुई है। तो एक है मास्टर ब्रह्मा, मास्टर विष्णु, मास्टर शंकर, त्रिमूर्ति हो गई। बहुत अच्छा। देखो, परमात्मा भी त्रिमूर्ति शिव कहलाया जाता है। तो आप त्रिमूर्ति भी कमाल करके दिखायेंगे। बापदादा हमेशा छोटा जो होता है ना उसको समान बाप कहते हैं। तो आपकी संख्या थोड़ी है लेकिन है बाप समान। अभी दूसरे बारी अपना ज्यादा संगठन बनाके आना। बनायेंगे ना! आप समान बनाके फिर बड़े संगठन से प्राइज़ आके लेना। अच्छा।

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ – अच्छा है, आप सभी इन्दौर और भोपाल दोनों ऐसी कमाल करके दिखाना जो अब तक किसने की नहीं हो क्योंकि इन्दौर ब्रह्मा बाप ने अपने संकल्प से स्थापन किया था, इन्दौर की विशेषता है ब्रह्मा बाप की नज़र इन्दौर के ऊपर पड़ी थी। तो इन्दौर वाले और भोपाल वाले है तो मध्यप्रदेश। लेकिन ऐसी कमाल करके दिखाना, कम से कम एक कमाल यह करना, इज़ी है - कोई न कोई ऐसा माइक तैयार करो जिसका आवाज़ सुनकर सभी पर अनेकों के ऊपर प्रभाव पड़े। अनेकों का कल्याण करने के निमित्त बन जाए। जैसे देखो एक माइक कितना कार्य कर रहा है, कितने सुन रहे हैं। तो ऐसा अथॉरिटी वाला बोल हो, जो अनेक सुन करके परिवर्तन हो जाएं, उसको बापदादा कहते हैं माइक। तो

कम से कम एक माइक तैयार करके आना। ठीक है? कमाल करना। बस सिर्फ मेरा बाबा, मेरी सेवा, यह याद रखना तो सब काम हो जायेगा। अच्छा।

श्रीलंका, मलेशिया, यू.एस.ए. – देखो विदेश की भी सौगात देख ली ना। श्रीलंका में सेवा बहुत अच्छी की है। बापदादा ने समाचार सुना कि प्रकृति के जल सुनामी की हालत में श्रीलंका वालों ने बहुत सहयोग दिया, आध्यात्मिक भी और चीज़ों का भी। और बापदादा ने बहुत अच्छी खबर सुनी है कि वहाँ सेवाकेन्द्र खोलने की कोशिश कर रहे हैं, जहाँ आपदायें आई थी, तो यह भी अच्छा प्लैन बना रहे हैं और श्रीलंका का नाम सुन करके तो रावण को जीतने का संकल्प आता है। तो श्रीलंका में रावण का नामा-निशान नहीं रहे, रावण वह नहीं, यह 5 बुराईयां ही रावण हैं। 5 विकार नारी में भी हैं, 5 विकार नर में भी हैं, तो दोनों का मिला हुआ 10 शीश वाला रावण दिखाते हैं। बाकी 10 शीश वाला विचारा सोयेगा कैसे, खायेगा कैसे, लेकिन यह बुराईयों का सूचक है। तो लंका निवासी बहुत अच्छा प्लैन बना रहे हैं और सारे ब्राह्मण परिवार आपके सहयोगी हैं, बापदादा तो हैं ही। पहले बापदादा फिर सर्व परिवार भी इस सेवा के सहयोगी हैं। अच्छी उन्नति कर रहे हैं। इसके लिए मुबारक है, पदमगुणा मुबारक। अच्छा -

मलेशिया में भी सेवा का उमंग बहुत है। बापदादा के पास तो सब समाचार भी आते हैं। और अभी-अभी याद भी भेजी है ना। तो मलेशिया में सर्विस का शौक अच्छा है और सेन्टर के पीछे सेन्टर खोलते ही जाते हैं और सफलता भी मिलती जाती है इसीलिए मलेशिया वाली सभी ब्राह्मण आत्माओं को जिन्होंने भी यादप्यार भेजा है, पत्र भेजा है, उन सभी बच्चों को पदमगुणा दुआयें और यादप्यार। अच्छा।

आप सभी **मधुबन निवासी** अपने भाई-बहनों को देखकर बहुत

खुश हुए ना। खुश हैं? आप लोगों ने मधुबन में रौनक कर दी। बापदादा कहते हैं कि बच्चे मधुबन का शृंगार हैं। तो मधुबन वाले देखो आप लोगों को देखकर बहुत खुश हो रहे हैं। सेवा का चांस दिया तो कितना पुण्य जमा हो गया, इसीलिए खुश हो रहे हैं। अच्छा। यह भी आज का मिलन ड्रामा में नूंधा हुआ था जो रिपीट हुआ और हर कल्प रिपीट होता रहेगा। अच्छा।

चारों ओर के देश विदेश के बच्चों की याद बापदादा को मिली है। चाहे फोन द्वारा याद भेजी है, चाहे पत्र द्वारा, चाहे दिल में याद किया है, तो बापदादा सभी बच्चों को चाहे भारत के, चाहे विदेश के रिटर्न में दुआयें और यादप्यार पदमगुणा दे रहे हैं।

चारों ओर के परमात्म प्यार के अधिकारी बच्चों को, चारों ओर सर्व खज़ानों से भरपूर, निर्विघ्न, निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, साथ-साथ सर्व परिवर्तन करने और कराने के उमंग-उत्साह में उड़ने वाले बच्चों को, साथ-साथ बापदादा को सच्ची दिल का समाचार देने वाले सच्चे दिल वाले बच्चों को विशेष दिलाराम के रूप में, बाप के रूप में, शिक्षक के रूप में, सतगुरू के रूप में पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

बी.के. गाइड और सेवाधारी – बापदादा सेवाधारी बच्चों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। बहुत अच्छी-अच्छी आत्मायें लाई हैं, हिम्मत वाली लाई हैं, और हिम्मत का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखलाने वाली आत्मायें लाई हैं, इसलिए जो भी जितनों को भी लाये हैं, उतने पदमगुणा मुबारक हो। अच्छा है। गोल्डन चांस भी मिल गया। सेवा का प्रत्यक्ष फल तो मिल गया। ऐसे ही सारे विश्व को बाप के प्यार, बाप के सन्देश का ज़रूर कार्य करते रहेंगे। करना ही है। हैं ही इसीलिए निमित्त। तो सच्चे-सच्चे पण्डे तो आप

हो। कितनी अच्छी यात्रा करा दी है। बापदादा बच्चों की सेवा को देख खुश होते हैं। तो देख लिया, अच्छे हैं, महारथी हैं, सेवा में महारथी बनके आये हैं। अच्छा। टीचर्स को भी अच्छा चांस मिला है। पाण्डवों को भी अच्छा चांस मिला है।

दादियों से – दादियों को देख करके सभी खुश हो रहे हो ना। दादियों को प्यार मिला, सबको मिला। अच्छा है, आप सभी निमित्त बने हुए को देख करके हर्षित होते हैं।

मुन्नी बहन से – निमित्त बने हुए कार्य को अच्छी तरह से चला रही हो, चलाती रहेंगी।

आप सभी भी निमित्त हो। सबकी नज़र पहले मधुबन निवासियों के ऊपर पड़ती है। मधुबन में निमित्त बनना अर्थात् लाइट हाउस बनना, लाइट देना।

नीलू बहन से – अच्छा पार्ट बजा रही हो और निरसंकल्प होकर बजाती रहो। बापदादा आपके दिल की बातें जानते हैं।

दादी रतनमोहिनी ने जापान, हांगकांग, मनीला के भाई-बहनों की याद दी, वहाँ सेवा करके वापस आई हैं – सेवा में कितनों की दुआयें मिलती हैं। दुआयें देकर भी आते हो और दुआयें लेकर भी आते हो। रिफ्रेश होना अर्थात् दिल में शक्तियों की ज्वाला जग जाती है। सब खुश भी होते हैं और आपकी सेवा का प्रत्यक्ष फल आपको भी मिल जाता है।

तीनों बड़े भाईयों से – सेवा का फल आपको भी मिल जाता है। तीनों ही मिलके यज्ञ की कई कारोबार सम्भाल रहे हो, सम्भालते रहना, तीनों मिलके। एक ने कहा दूसरे ने हाँ जी किया। ऐसा है ना! बापदादा खुश होते हैं, जब मिल करके कोई कार्य सफल करते हो। कर रहे हो, करते रहेंगे। अच्छा।

(मदुराई के मेगा प्रोग्राम का समाचार बापदादा को सुनाया और सभी की याद दी) बापदादा ने कहा मदुराई व तामिलनाडु के सभी भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत याद देना।

निर्वैर भाई आस्ट्रेलिया, न्युजीलैण्ड सेवा पर जाने की छुट्टी ले रहे हैं – आस्ट्रेलिया को थोड़ा बल भरना। आस्ट्रेलिया नम्बरवन था। अभी हो रहा है, हो जायेगा। आत्मायें बहुत अच्छी हिम्मत कर आगे बढ़ रही हैं, लेकिन गुप्त हैं। अच्छा।

मधुबन निवासी सभी समर्पित भाई-बहनों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

मधुबन निवासी बच्चों को, जो भी ब्राह्मण हैं वह सभी किस नज़र से देखते हैं। जानते हो ना! मधुबन निवासियों को सभी बहुत विशेष नज़र से देखते हैं। जैसे स्थान विशेष है, हेडक्वार्टर कहा जाता है। ऐसे ही हर एक मधुबन निवासियों को उसी नज़र से देखते हैं। यह विशेष आत्मायें हैं। और आज तो विशेष समर्पित भाई-बहनें बैठे हो। समर्पित अर्थात् तन मन वस्तु चाहे किसी भी रूप में है, साधन के रूप में है या धन के रूप में है। लेकिन समर्पित अर्थात् जो भी है वह बाप के अर्पण हो गया। उसी को ही समर्पित कहा जाता है। समर्पित अर्थात् जिसमें मेरा पन का अंश भी नहीं। कभी गलती से भी मेरा-पन नहीं है। समर्पित का अर्थ ही है - मेरा एक बाबा, बाप के साथ दादा तो है ही। समर्पित अर्थात् साकार रूप में कर्म में ब्रह्मा बाप समान और निराकारी श्रेष्ठ योग की स्थिति में निराकार शिव बाप के समान। तो ऐसे अपने को समझते हो? न हद का मैं पन, न हद का मेरा-पन। स्थान भी देखो चाहे पाण्डव भवन है, चाहे शान्तिवन है, चाहे ज्ञान सरोवर है, चाहे हॉस्पिटल है, लेकिन स्थान भी बेहद के मिले हैं। संगठन भी बेहद का मिला है। ऐसे बेहद की स्थिति अनुभव करते हो? जो समझते

हैं कि बेहद की स्थिति रहती है, हद का मैं और मेरापन नहीं है, वह हाथ उठाओ। मेरापन नहीं है? फिर तो मधुबन निवासी मैजारिटी पास हैं। तो दादियों द्वारा पास सर्टीफिकेट मिला है? हाँ सभी कहते हैं, मेरे में मेरापन नहीं है, मैं पन नहीं है। आपने (दादी से) सर्टीफिकेट दिया है? (नहीं, जिन्होंने हाथ उठाया है वो लिखकर दे देवें तो पक्का हो जायेगा) फिर तो बाप समान बन गये ना। देखो, तीन सर्टीफिकेट लेने हैं। एक स्वयं को साक्षी होकर सर्टीफिकेट देना। हाथ उठाने से नहीं, हाथ तो सभी उठा लेते हैं। कोई भी क्वेश्चन में उठा लेते हैं। मन का हाथ उठे। एक अपने आपको साक्षी दृष्टा बन सर्टीफिकेट दो। और दूसरा - जिन साथियों के साथ कार्य करते हो उनका सर्टीफिकेट चाहिए। तीसरा - दादियों का चाहिए। चौथा - बाप का चाहिए क्योंकि बाप तो सबके मन की गति को देखते हैं। मुख की गति नहीं, मन की गति को देखता है। अच्छा है, हिम्मत रखी है हाथ उठाने की, तो हिम्मत को कायम रखना। प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देवे कि मधुबन निवासी हर एक सर्टीफिकेट लेने वाला है क्योंकि मधुबन का वायुमण्डल छिपता नहीं है। मधुबन वाले समीप रहते हैं, बाप की पालना, विशेष आत्माओं की पालना मिल रही है।

अभी बापदादा मधुबन निवासियों से एक बात चाहते हैं, हर एक जो भी सेवा अर्थ निमित्त है, उस सेवा में वायुमण्डल ऐसे स्पष्ट दिखाई दे, जैसे फरिश्ते कर्मयोगी बनके कर्म कर रहे हैं क्योंकि सभी की नज़र मधुबन निवासियों की तरफ जाती है। मधुबन में क्या हो रहा है, मधुबन वाले क्या कर रहे हैं। मधुबन में आप नहीं रहते हो लेकिन वर्ल्ड की स्टेज पर रहते हो। तो स्टेज पर स्वत: ही सभी की नज़र जाती है। अच्छा है सेवा में *मैजारिटी का सर्टीफिकेट बहुत अच्छा है। समान बनने में अभी बनना है,* यह लक्ष्य रखना है। बाप जैसी चलन हो, चेहरा हो, तभी बाप प्रत्यक्ष होगा। तो अभी मधुबन निवासियों को हर संकल्प, बोल.... बोल में भी समानता

चाहिए। और कर्म, आपस में सम्बन्ध-सम्पर्क, सबमें समानता। यह विशेष अटेन्शन देना है। साधारण है, समानता लानी है। सेवा का बल चला रहा है लेकिन चार ही सबजेक्ट में अपने को चेक करो। फिर अपने को सर्टीफिकेट दो। अच्छा। आज विशेष मिलना तो हुआ ना। बाप ने तो आपकी आशा पूर्ण की, अभी बाप की आशा पूर्ण करना।

समर्पण होना यह छोटी सी बात नहीं है। समर्पित उसको कहा जायेगा जो बाप समान सभी सबजेक्ट में हो। बाकी विशेष तो हो ही, मधुबन की सभी आत्माओं को हर एक बहुत बड़े रिगार्ड से देखते हैं। मधुबन के हैं, मधुबन के हैं। तो कोई कमाल करके दिखाना, आपस में छोटा-छोटा संगठन का प्रोग्राम बनाके बाप समान किस-किस बात में हैं, किसमें थोड़ा सा रहा हुआ है, यह चेक करो। वास्तव में चेकिंग जितनी अपने आप गहरी कर सकते हो, यथार्थ कर सकते हो वैसे दूसरा नहीं कर सकता। बाकी सभी अच्छी तरह से रह रहे हो ना, कोई कमी तो नहीं है! यह भी भाग्य है। भाग्य ने आपको मधुबन निवासी बनाया है। तो सब खुश हैं? खुश रहते हो कि बीच-बीच में थोड़े नाराज़ हो जाते हो? अपने आपको रियलाइज़ करो। रियलाइज़ अर्थात् मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसे अपने को समझना। आत्मा हूँ, यह कामन है, लेकिन चलते फिरते महूससता आत्म-अभिमानी की रहती है? इसको कहेंगे रियलाइजेशन। संस्कार हैं, संस्कार का ज्ञान है, नॉलेज है, संस्कार समाप्त हुए हैं, परिवर्तन हुए हैं वा नहीं? यह अपने को महसूस हो, यह नहीं है, यह ठीक है, यह नहीं ठीक है। दूसरा महसूस करायेगा तो महसूस नहीं होता है। तो अपने आपको रियलाइज़ करने का पाठ पढ़ाना। जैसे सप्ताह कोर्स करते हो ना आत्मा, परमात्मा, योग, ड्रामा, ऐसे अपने आपको रियलाइज करना। अभी रियलाइजेशन का समय है। जो बाप चाहता है वह कर रहा हूँ? सम्बन्ध-सम्पर्क में भी रियलाइज़ करो, शुभ भावना, शुभ कामना है? ठीक है। रियलाइजेशन

कोर्स अपने आपका करो। यह दूसरा नहीं करा सकता। सब कोर्स किया, अभी लास्ट कोर्स है रियलाइजेशन कोर्स। अपने को चलाना नहीं, चलता है, है ही। समय धोखा नहीं दे देवे ना, मधुबन निवासी हो। तो साथ चलने वाले हो ना! बीच में अटकने वाले तो नहीं हो ना! तो रियलाइजेशन कोर्स अपने आपका शुरू करो। एक एक बात में रियलाइज करो। अच्छा। मिल तो लिया, अभी क्या करना है।

दृष्टि लेनी है तो दृष्टि में बापदादा को सदा रखना है। ऐसे ही दृष्टि नहीं लेनी है। दृष्टि लेना अर्थात् दृष्टि में बाप को समाना। ऐसी दृष्टि लेना। अच्छा। ओम् शान्ति।

सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने की डेट फिक्स कर समय प्रमाण अब एवररेडी बनो

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के तीन रूप देख रहे हैं। जैसे बाप के विशेष तीन सम्बन्ध याद रहते हैं वैसे बच्चों के भी तीन रूप देख हर्षित हो रहे हैं। अपने तीनों ही रूप जानते हो ना! इस समय सभी बच्चे ब्राह्मण रूप में हैं और ब्राह्मण सो लास्ट स्टेज, ब्राह्मण सो फरिश्ता है फिर फरिश्ता सो देवता हो। सबसे विशेष वर्तमान ब्राह्मण जीवन है। ब्राह्मण जीवन अमूल्य है। ब्राह्मण जीवन की विशेषता है प्युरिटी। प्युरिटी ही ब्राह्मण जीवन की रीयल्टी है। प्युरिटी ही ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है। प्युरिटी ही सुख शान्ति की जननी है। जितनी प्युरिटी होगी उतनी सुख और शान्ति जीवन की नेचरल और नेचर होगी। और प्युअर आत्माओं का लक्ष्य है ब्राह्मण सो देवता नहीं लेकिन पहले फरिश्ता बनने का है, फरिश्ता सो देवता है। तो ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। यह तीन रूप बापदादा सभी बच्चों का देख रहे हैं। आप सभी को अपने तीन रूप सामने आ गये? आ गये? ब्राह्मण तो बन गये, अभी लक्ष्य है फरिश्ता बनने का। यही लक्ष्य है ना! है? फरिश्ता बनना ही है, चेक करो फरिश्ते पन की विशेषतायें जीवन में कितनी दिखाई देती हैं? फरिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संसार और पुराने संस्कार से कोई नाता नहीं। फरिश्ता अर्थात् सिर्फ समस्या के समय डबल लाइट नहीं, लेकिन सदा मन्सा-वाचा, संबंध-सम्पर्क में डबल लाइट, हल्का। हल्की चीज़ अच्छी लगती है वा बोझ वाली चीज अच्छी लगती है, क्या अच्छा लगता है? हल्का पसन्द है ना? फरिश्ता अर्थात् जो सर्व का, थोड़ों का नहीं, सर्व का प्यारा और न्यारा हो। सिर्फ प्यारा नहीं, जितना प्यारा उतना ही न्यारा हो। फरिश्ता की निशानी है, वह सर्व का प्रिय होगा, जो भी देखेंगे जो भी मिलेंगे जो भी संबंध में आयेंगे, सम्पर्क में आयेंगे वह अनुभव करेंगे कि यह मेरा है। जैसे बाप के लिए सभी अनुभव करते हैं, मेरा है। अनुभव करते हैं ना? ऐसे फरिश्ता अर्थात् हर एक अनुभव करे यह मेरा है। अपना पन का अनुभव हो क्योंकि हल्का होगा ना तो हल्कापन प्रिय बना देता है सबका। सारा ब्राह्मण परिवार अनुभव करे कि यह मेरा है। भारीपन नहीं हो क्योंकि फरिश्ते का अर्थ ही है डबल लाइट। फरिश्ता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म, संबंध, सम्पर्क में बेहद हो। हद नहीं हो। सब अपने हैं और मैं सबका हूँ। जहाँ ज्यादा अपनापन होता है ना वहाँ हल्कापन होता है। संस्कार में भी हल्कापन, तो चेक करो कितना परसेन्ट फरिश्ता स्टेज तक पहुंचे हैं? चेक करना आता है? चेकर भी बन गये हो, मेकर भी बन गये हो। मुबारक हो।

बापदादा ने आप सबके होम वर्क की रिजल्ट देखी। होमवर्क की रिजल्ट लिखी है ना सभी ने! तो रिजल्ट में क्या देखा? बापदादा की शुभ आश है कि कम से कम वर्तमान समय सभी बातों में, सात बातें लिखी है ना। कम से कम वर्तमान समय प्रमाण मैजारिटी की 75 परसेन्ट जरूर होनी चाहिए। सातों ही बातों में। कोई किसमें कम है, कोई किसमें कम है लेकिन बापदादा की यही शुभ आशा है कि अब समय को देखते हुए जो महारथी समझते हैं अपने को, उन्हों की स्टेज तो 95 परसेन्ट होनी चाहिए। होनी चाहिए ना! पाण्डव होनी चाहिए? चलो थोड़ा दूसरा नम्बर है तो भी 75 परसेन्ट होनी चाहिए। क्या समझती हैं दादियां? 95 परसेन्ट हैं? आगे लाइन वाले सभी क्या समझते हैं? 95 परसेन्ट हैं? और आपकी कितनी होनी चाहिए? 75 परसेन्ट? आप भी 75 समझते हो? अच्छा कल विनाश हो

जाए तो? 75 परसेन्ट में जायेंगे? 75 परसेन्ट होगा तो वन वन वन में नहीं आयेंगे। फिर क्या करेंगे? चलो, बापदादा आज के दिन, आज विशेष है ना, तो आज के दिन को बीती सो बीती करते हैं, ठीक है? अच्छा जो कल से 75 कह रहे हैं ना, तो चलो 95 नहीं, 85 तक तो आयेंगे? आयेंगे। परसों अगर विनाश करें, तो 85 तक होंगे? पीछे वाले होंगे? हाथ उठाओ। अच्छा 85 परसेन्ट होगा? (किसी ने कहा 98 परसेन्ट है) मुबारक है, मुख में गुलाबजामुन खा लो क्योंकि देख तो रहे हो, जानते भी हो, कि हो जाना ही है। हो जायेंगे नहीं, होना ही है। गे, गे नहीं करो, हो जायेंगे, देख लेंगे.. कोशिश करेंगे... अब यह भाषा परिवर्तन करो। जो भी संकल्प करो, चेक करो कितनी परसेन्ट निश्चय और सफलतापूर्वक है? अभी चेक करने की स्पीड तीव्र करो। पहले चेक करो फिर कर्म में आओ। ऐसे नहीं जो भी संकल्प आया, जो भी बोल में आया, जो भी संबंध सम्पर्क में हुआ, नहीं। जो वी.वी. आई. पी. होते हैं उनकी चेकिंग कितनी होती है, पता है ना। हर चीज़ पहले चेक होती है फिर कदम रखते हैं। तो अभी दो घण्टे चार घण्टे के बाद चेकिंग नहीं चलेगी। पहले चेकिंग फिर कदम क्योंकि आप तो सृष्टि ड्रामा के, आजकल के वी.वी.आई.पी. जो हैं, वह तो एक जन्म के हैं। वह भी थोड़े समय के लिए हैं। और आप ब्राह्मण सो फरिश्ते कितने भी वी.वी. लगा दो, इतने हो। देखो, आप अपने आगे वी.वी.वी. लगाते जाओ, आपने अपने चित्र तो देखे हैं ना जो पूजे जा रहे हैं, वह देखे है ना। चलो मन्दिर नहीं देखे फोटो तो देखे हैं, अभी भी उन्हों की कितनी वैल्यु है। कितने बड़े-बड़े मन्दिर बनाते हैं और आपका चित्र जो है वह तो तीन फुट में आ जाता है, तो कितना आपकी वैल्यु है। जड़ चित्र की भी वैल्यु है। है ना! वैल्यु है ना! आपके चित्र का दर्शन करने के लिए कितनी क्यु लगती है। और चैतन्य में कितने वी.वी.आई. पी. हो। तो कदम उठाने के पहले चेक करो, करने के बाद चेक किया, वह कदम तो गया। वह कदम फिर आपके हाथ में नहीं आयेगा। अज्ञानकाल में भी कहते हैं, सोच समझकर काम करो। काम करके सोचो नहीं। पहले सोचो फिर करो। तो अपने स्वमान की सीट पर रहो। जितना पोजीशन में रहते तो आपोजीशन नहीं हो सकती। माया की आपोजीशन तब होती है जब पोजीशन में नहीं रहते हो। तो अभी बापदादा का क्वेश्चन है, सबका लक्ष्य तो है सम्पूर्ण बनने का, सम्पन्न बनने का। लक्ष्य है या थोड़ा थोड़ा बनने का है? लक्ष्य है? सबको है तो हाथ उठाओ। सम्पूर्ण बनना है, अच्छा। कब तक? आप लोगों से क्वेश्चन करते हो ना, स्टूडेन्ट से भी टीचर्स क्वेश्चन करती हैं ना - आपका क्या लक्ष्य है? तो आज बापदादा विशेष टीचर्स से पूछते हैं। 30 वर्ष वाले बैठे हैं ना। तो 30 वर्ष वालों को कल ही आपस में बैठकर प्रोग्राम बनाना चाहिए। मीटिंग तो बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं मीटिंग, सीटिंग, मीटिंग सीटिंग। लेकिन अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे? और सब फंक्शन मनाते हो, डेट फिक्स करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी डेट, इसकी डेट नहीं है? जितने साल चाहिए उतने बताओ। क्यों? बापदादा क्यों कहते हैं? क्योंकि बाप से प्रकृति पूछती है कि कब तक विनाश करें? तो बापदादा क्या जवाब दें। बापदादा बच्चों से ही पूछेंगे ना। कब तक? आज की विशेष टॉपिक है कब तक? डबल फारेनर्स बैठे हैं ना, तो डबल पुरुषार्थ होगा ना। कमाल करो। फारेनर्स एक्जैम्पुल बनो। बस ब्राह्मण परिवार के आगे, विश्व के आगे सम्पन्न और सम्पूर्ण। सर्व शक्तियां, सर्व गुण से सम्पन्न अर्थात् सम्पूर्ण, सर्व हो। मन्सा, वाचा, संबंध-सम्पर्क चार ही में, चार में से अगर एक में भी कमजोर रह गये, तो सम्पन्न नहीं कहेंगे। चार बातें याद है ना - मन्सा, वाचा, सम्बन्ध-सम्पर्क में कर्म आ गया। चार ही बातों में। ऐसे नहीं मन्सा वाचा में तो हम ठीक हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क में थोड़ा है। सुनाया ना - जिसके सामने भी जायें, चाहे जिसके भी सम्पर्क में जायें वह अनुभव करे

कि यह मेरा है। मेरे के ऊपर हुज्जत होती है ना। दूसरे के ऊपर इतना हल्कापन नहीं होता है, थोड़ा भारी होता है लेकिन अपने के ऊपर हल्कापन होता है। तो सबसे हल्के, ऐसे नहीं सिर्फ अपने ज़ोन में हल्के, अपने सेन्टर में हल्के, नहीं। अगर जोन में हल्के या सेन्टर में हल्के, तो विश्वराजन कैसे बनेंगे? न विश्व कल्याणकारी बन सकते हैं, न विश्व राजन बन सकते हैं। राजन का अर्थ यह नहीं है कि तख्त पर बैठे, राजधानी में रॉयल फैमिली में भी राज्य अधिकार है, राज्य का। तो क्या करेंगे? कब तक के प्रश्न का उत्तर देंगे ना! मीटिंग करेंगे! मीटिंग करके फाइनल करना। ठीक है? अच्छा।

सभी ठीक हैं, उमंग आता है कि करना ही है होना ही है? बापदादा उमंग उल्हास दिलाता है। माया देखती है उमंग उल्हास में हैं तो कुछ न कुछ कर लेती है क्योंकि उसका भी अभी अन्तिम काल नजदीक है ना। तो वह अपने अस्त्र शस्त्र जो भी हैं वह यूज़ करती हैं और ऐसी पालना करती है जो समझ नहीं सकते हैं कि यह माया की पालना है, माया की मत है या बाप की मत है, उसमें मिक्स कर देते हैं। यह फरिश्ते पन में या पुरुषार्थ में विशेष जो रूकावट होती है, उसके दो शब्द ही हैं - जो कामन शब्द हैं, मुश्किल भी नहीं हैं और सभी यूज़ भी करते हैं अनेक बार। वह क्या है? मैं और मेरा। बापदादा ने बहुत सहज विधि पहले भी बताई है, इस मैं और मेरे को परिवर्तन करने की, याद है? देखो, जिस समय आप मैं शब्द बोलते हो ना, उस समय सामने मैं हूँ ही आत्मा, मैं शब्द बोलो और सामने आत्मा रूप को लाओ। मैं शब्द ऐसे नहीं बोलो, मैं, आत्मा। यह नेचरल स्मृति में लाओ, मैं शब्द के पीछे आत्मा लगा दो। मैं आत्मा। जब मेरा शब्द बोलते हो तो पहले कहो मेरा बाबा, मेरा रूमाल, मेरी साड़ी, मेरा यह। लेकिन पहले मेरा बाबा। मेरा शब्द बोला, बाबा सामने आया। मैं शब्द बोला आत्मा सामने आई, यह नेचर और नेचरल बनाओ सहज है ना कि मुश्किल है। जानते ही हो मैं आत्मा हूँ। सिर्फ उस समय मानते नहीं हो। जानना 100 परसेन्ट है, मानना परसेन्टेज में है। जब बॉडी कान्सेस नेचरल हो गया, याद करना पड़ता है क्या मैं बॉडी हूँ, नेचरल याद है ना। तो मैं शब्द मुख के पहले तो संकल्प में आता है ना। तो संकल्प में भी मैं शब्द आवे तो फौरन आत्मा स्वरूप सामने आये। सहज नहीं है यह अभ्यास करना। सिर्फ मैं शब्द नहीं बोलना, आत्मा साथ में बोलना, पक्का हो जायेगा। है ना पक्का। दूसरे को भी कोई बुलायेगा तो आप ऐसे ऐसे करेंगे। तो मैं आत्मा हूँ। आत्मा का संसार बापदादा। आत्मा का संस्कार ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो क्या करेंगे, यह मन की ड्रिल। आजकल डाक्टर्स भी कहते हैं ड्रिल करो, ड्रिल करो। एक्सरसाइज। तो यह एक्सरसाइज करो। मैं आत्मा। मेरा बाबा। क्योंकि समय की गति को ड्रामानुसार स्लो करना पड़ता है। होना चाहिए क्रियेटर को तीव्र, क्रियेशन को नहीं लेकिन अभी के प्रमाण समय तेज जा रहा है। प्रकृति एवररेडी है सिर्फ आर्डर के लिए रूकी हुई है। ड्रामा का समय ही आर्डर करेगा ना। स्थापना वाले अगर एवररेडी नहीं होंगे तो विनाश के बाद क्या प्रलय होगी? होनी है प्रलय? कि विनाश के बाद स्थापना होनी ही है? तो स्थापना के निमित्त बने हुए अभी समय प्रमाण एवररेडी होने चाहिए। बापदादा यही देखने चाहते हैं, जैसे ब्रह्मा बाप अर्जुन बना ना, एक्जैम्पुल बना ना। ऐसे ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले कौन बनते हैं? स्वयं को भी देखो, समय को भी देखो।

बापदादा ने पहले भी कहा कि वर्तमान समय आप सभी ब्राह्मण सो फरिश्ते आत्माओं को निमित्त भाव और निर्मान भाव, इन दोनों शब्दों को अण्डरलाइन करना है। इसमें बॉडी कान्सेस का मैं-पन खत्म हो जायेगा। मेरा-पन भी खत्म हो जायेगा। निमित्त हूँ और निर्मान स्वभाव। जितना निर्मान होते है ना उतना मान मिलता है। क्योंकि जो निर्मान होता है ना वह सबका प्यारा बन जाता है। और जब प्यारा बन जाता

है तो मान तो आटोमेटिकली मिलेगा। तो निमित्त और निर्मान भाव और भावना, शुभ भावना। भाव और भावना दो चीजें होती हैं तो निमित्त और निर्मान भाव और भावना हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। कैसा भी हो, आपके निमित्त निर्मान भाव और शुभ भावना वायुमण्डल ऐसा बनायेगी, जो सामने वाला भी वायब्रेशन से बदल जायेगा। कई बच्चे रूहरिहान करते हैं ना तो कहते हैं हमने एक मास से शुभ भावना रखी, वह बदलता ही नहीं है। फिर थक जाते हो, दिलशिकस्त हो जाते हैं। अभी उस बिचारे की जो वृत्ति है या दृष्टि है वह है ही पत्थर जैसी, उसमें थोड़ा तो टाइम लगेगा ना। अच्छा मानो वह नहीं बदलता है तो आप अपने को तो ठीक रखो ना। आप तो अपनी पोजीशन में रहो ना। आप क्यों दिलशिकस्त हो जाते हो। दिलशिकस्त नहीं हो। अच्छा वह नहीं बदला तो मैं भी उसके साथ बदल न जाऊं। दिलशिकस्त हो जाना वह पावरफुल हुआ जो उसने आपको बदल लिया। आप अपने स्वमान की सीट क्यों छोड़ते हो? वेस्ट थोटस भी नहीं उठना चाहिए, क्यों? क्यों कहा और वेस्ट थोटस का दरवाजा खुला। वह दरवाजा बन्द बहुत मुश्किल होता है। इसीलिए क्यों नहीं सोचो, मर्सीफुल होकर वायब्रेशन देते रहो। आप अपनी सीट छोडकर क्यों दिलशिकस्त हो जाते हो? याद रखा ना पोजीशन से नीचे नहीं आओ, फिर बहुत आपोजीशन हो जाती है। व्यक्ति-व्यक्ति में आपोजीशन हो जाती है, स्वभाव संस्कार में आपोजीशन हो जाती है, विचारों में आपोजीशन हो जाती है इसलिए पोजीशन में रहो। तो कल क्या करेंगे? याद है? बापदादा का प्यार है ना, तो बापदादा समझते हैं सब ब्रह्मा बाप समान बन जायें। क्या बाप के आगे आपोजीशन नहीं आई, ब्रह्मा बाप के आगे आपोजीशन नहीं हुई, माया की भी हुई, आत्माओं की भी हुई, प्रकृति की भी हुई, लेकिन ब्रह्मा बाप ने पोजीशन छोड़ी? नहीं छोड़ी ना। तभी फरिश्ता बना ना। तो अभी एक दो को अपने को तो फिरिश्ता समझकर चलो, मैं फरिश्ता हूँ, सब फरिश्ते हैं। न मेरा, पुराने संसार संस्कार से नाता, न इन कोई ब्राह्मणों का। बस खत्म। यह भी फरिश्ता यह भी फरिश्ता उसी नज़र से देखो। वायुमण्डल फैलाओ। अच्छा।

डबल फारेनर्स है ना तो डबल नशा चढ़ा रहे हैं। आज चांस मिला है ना! यह भी देखो भारतवासियों की सहानुभूति है आपसे। आपको चांस देके खुद नीचे बैठे हैं, देखो। नीचे बैठने वालों को बापदादा त्याग का भाग्य जमा कर ही रहा है। अच्छा। अभी क्या करना है?

सभी जैसे अभी अभी बहुत मीठा मुस्करा रहे हो। ऐसे ही सदा रहना। कभी भी किसी से भी बात करो ना, मुस्कराओ जरूर। आपके मुस्कराने से उसका आधा दुख तो दूर हो जायेगा। चैरिटी बिगन्स एट होम। किसी से भी बोलो, साथी से ब्राह्मण से चाहे अज्ञानी से, मुस्कराता चेहरा, रूहे गुलाब। सीरियस होके नहीं बोलो, क्या कर रहे हो, क्यों कर रहे हो, नहीं। मुस्कराके बोलो। मुस्कराने का स्टॉक है? खत्म तो नहीं हो गया? मुस्कराया हुआ चेहरा, कितना अच्छा लगता है। जोश वाला चेहरा दूसरा देखके ही हट जाना चाहता है। और मुस्कराने वाले चेहरे के नजदीक जाने चाहेंगे। तो आपको अभी का मुस्कराता हुआ चेहरे का फोटो निकालकर देवें। वह फोटो अपने साथ रखेंगे, कागज का रखेगे या दिल का? अच्छा।

76 देशो से आये हैं - कई ग्रुप भी हैं - जैसे सर्व अफ्रीका कोर ग्रुप - अच्छी सेवा कर रहे हैं। बापदादा को समाचार मिला था कि निर्विघ्न फास्ट सेवा हो रही है। जैसे अफ्रीका ने सन्देश देने का फास्ट किया है, ताली तो बजाओ। मुबारक हो। ऐसे सभी को करना आवश्यक है। प्लैन बनाओ सेवा का बनाओ लेकिन सेवा करो तो बोझ वाली सेवा नहीं करो। कई बच्चे सेवा के बाद इतने थक जाते

हैं तो कोई मालिस पालिस वाला चाहिए। सेवा यथार्थ वह है जिसमें खुशी मिले, हल्कापन हो। प्राप्ति होती है ना। प्राप्ति में थकावट होती है क्या? कई बच्चे पुरुषार्थ भी ऐसा करते हैं भारी पुरुषार्थ मेहनत का। फाउण्डेशन है मुहब्बत स्नेह, बाप और बच्चे का स्नेह, सेवा से आत्माओं को बाप से स्नेह का फल मिलता है। तो सेवा भी करते हैं तो भारी रूप नहीं, हल्का। सेवा बोझ वाली नहीं है सेवा हल्का बनाने वाली है। पुरुषार्थ भी मेहनत से नहीं करो। बापदादा को मेहनत अच्छी नहीं लगती। हैं मास्टर सर्वशक्तिवान और मेहनत कर रहे हैं। अच्छा लगता है? न पुरुषार्थ में न सेवा में, तो बापदादा ने देखा इन्हों की रिजल्ट का सममाचार सुना उमंग उत्साह से कर रहे हैं और विशेषता यह है कि अपने आपस में ही हैण्डस निकालके आगे बढ़ रहे हैं। नहीं तो कई कहते हैं सेवा बहुत हैं, हैण्डस नहीं हैं। हैण्डस होवें तो सेवा बढ़ जाये लेकिन इन्होंने यह मांगनी नहीं की यह विशेषता है। अपने ही हैण्ड तैयार किये, कैसे भी किये, किये। अपने ही हैण्डस तैयार किये और बढ़ते जा रहे है। फास्ट वृद्धि की है ना? क्या विशेषता सुनाई थी जितनी जोन में सेवा नहीं हुई है उतनी अभी हुई है। फास्ट हुई है ना, मुबारक हो अच्छा कर रहे हैं।

पीस आफ माइंड ग्रुप - अच्छा किया। अभी जो ग्रुप आया उनको पालना करना। जैसे स्थापना की ना तो पालना भी करते रहना। कनेक्शन नहीं तोड़ना, कुछ न कुछ उन्हों को भेजते रहो, कनेक्शन जोड़ते रहो। ठीक है ना। बापदादा ने समाचार सुना है तो यह जो करते हैं - काल आफ टाइम, काल आफ टाइम वाले कुछ न कुछ भेजते रहते हैं। तो कनेक्शन रख रहे हैं ना, ऐसे आप सभी भी कनेक्शन रखते रहो। चलो पहले सम्पर्क में आये, फिर संबंध में आवे फिर संबंध में आते-आते ब्राह्मण बन जायेंगे। तो आगे बढ़ाते रहो उन्हों को। बीच-बीच में उन्हों को बुलाके चाहे भिन्न-भिन्न देश के वहाँ बुलाया लेकिन आप उसकी जिम्मेवारी लो, बुलाया क्या उसकी रिजल्ट है, तब आगे बढ़ेंगे। प्रोग्राम अच्छे करते हो लेकिन पालना कम हाती है पालना न मिलने से, क्या है जन्म तो ले लिया लेकिन बढ़ते नहीं है। आयु बिचारों की वही रहती है, आयु आगे बढ़ती नहीं है तो ऐसे करना। लेकिन किया अच्छा है। बापदादा तो वतन में बैठे भी देखते हैं समाचार भी सुनते हैं। समाचार बापदादा को बहुत अच्छा लगता है, थकता नहीं है। तो मुबारक हो। सन्देश देने वाले सन्देशवाहक बनें, इसकी मुबारक हो। ताली बजाओ।

पीस आफ माइन्ड के कुछ सैम्पुल बैठे हैं, बापदादा ने सबको आगे बुलाया - टोटल 6 हैं। यह देखो कितना अच्छा एक्जैम्पुल है, तो दिल से आप सभी को यह सब ब्राह्मण आत्मायें पीसफुल बनने की मुबारक दे रहे हैं। पीसफुल बनने की मुबारक। अभी नया जन्म हुआ ना। तो बर्थ डे हो गई आज। तो आपके बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा, तो देखो सेवा की तो फल भी मिला। अच्छा।

इन्टरफेथ कोर ग्रुप - अच्छा इन्टरफेथ वाले। अच्छा है। यह सेवाधारी होके आये हैं। अच्छा है सबको सन्देश देने में यह भी क्यों रह जाएं। तो अच्छा किया। इस ग्रुप को भी बुलाया। और विशेष बापदादा ने देखी कि इन्टरनेशनल रूप में किया। देश और विदेश ने मिलके एक संकल्प लेके किया यह बहुत अच्छा किया। और सक्सेस भी हुआ तो इन्टरनेशनल प्रोग्राम सक्सेस किया इसकी मुबारक है। और आगे भी इस ग्रुप को बढ़ाते रहना क्योंकि यह तो आपके साथी हैं ना, आध्यात्मिक तो है ना। इन्हों में से एक भी परिवर्तन होके माइक बनें तो बहुत सेवा कर सकता है। तो अच्छा किया बापदादा खुश है। और सभी भी खुश, तभी तो ताली बजाई। आगे बढ़ाते रहना। छोड़ नहीं देना। जैसे यह काल आफ टाइम करते रहते हैं ना ऐसे करते रहना। आगे बढ़ाते रहना। अच्छा।

जानकी फाउण्डेशन और वैल्यु ट्रेनिंग ग्रुप - बहुत अच्छा बापददादा ने देखा नये-नये विधि द्वारा

सन्देश पहुंचाने का कार्य अच्छा है क्योंकि आजकल हेल्थ कान्सेस तो सबसे ज्यादा हैं। तो इस विधि से एक किताब भी दिखाया था बापदादा को, वह भी अच्छा सेवा के निमित बनेगा। लेकिन जैसे नाम है फाउण्डेशन वैसे ही याद और सेवा का फाउण्डेशन कम्बाइन्ड करते हुए जानकी फाउण्डेशन को आगे बढ़ाते रहना। ठीक है ना। हाँ क्योंकि आपकी सेवा विस्तार में बहुत आगे बढ़ सकती है। बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी। वैल्यु का बुक देखा था। अच्छे उमंग-उत्साह से सेवा करने का फल प्रत्यक्ष मिलता है। जितना आगे बढ़ते जायेंगे उतने नजदीक आते जायेंगे। यह सब तरफ किया है। जो भी फाउण्डेशन है अलग-अलग वह इस फाउण्डेशन में समीप आते जायेंगे। थकते तो नहीं हैं ना। डबल सेवा करते हो ना जॉब भी करते हो, यह भी करते हो। तो डबल सेवा, डबल विदेशी इसकी डबल मुबारक हो। बहुत अच्छा।

आई.टी.ग्रुप - अच्छा यह देश विदेश इक्ट्ठा है। कोई नया प्लैन बनाया है? नया बेव साइड बनाया है और मुरली का नया सिस्टम शुरू किया है उसके अलावा नया ईमेल का सिस्टम बनाया है। क्योंकि इससे आवाज तो चारों ओर फैल सकता है। इसको एकाग्र होके नये-नये प्लैन बनाते जाओ और बढ़ते जाओ। क्योंकि देश विदेश दोनों का कनेक्शन है ना। जितना इस डिपार्टमेंट को आगे बढ़ाते जायेंगे उतना एक स्थान पर बैठे बहुतों को सन्देश दे सकेंगे। यह बहुत अच्छा साधन मिला है। साधन द्वारा सन्देश देने का कार्य यही आपके डिपार्टमेंट की साधना हो जायेगी। अच्छा किया है। यह मोहिनी हैण्डिल करती है, अच्छा है। देखो वह पीस वाला करती, वह काल आफ टाइम करती, अच्छी सीट ली है। बापदादा डबल विदेशियों को भिन्न-भिन्न सेवा की मुबारक के साथ दुआयें भी दे रहे हैं। दुआयें हों। (दादी भी दुआयें दे रही हैं।)

ट्रेवलर फिल्म ग्रुप - यह फिल्म बना रहे हैं। अच्छा है क्योंकि आजकल कलचर प्रोग्राम भी सबको पसन्द आता है। पूरा कोर्स करा लेते हो, कलचरल में ही सारा कोर्स हो जाता है यह बहुत अच्छा है। बापदादा को पसन्द है। देखा भी है। अच्छा कर रहे हो। आपके कहेंगे अभी दिखायेंगे। लेकिन बापदादा ने देख लिया है। इन साधनों द्वारा तो फिर भी देख लेंगे लेकिन बापदादा के पास आपसे भी बहुत बड़ी मशीनरी है उसमें देख लिया है। अच्छा कर रहे हैं करते रहेंगे, बाप को प्रत्यक्ष करते ही रहेंगे। बहुत अच्छा, मुबारक हो।

मिडिल इस्ट सेवा में बहुत आगे जा रहे हैं:- बहुत अच्छे-अच्छे रतन हैं। एक-एक की विशेषता अपनी अपनी है। करावनहार करा रहा है और आप बच्चे निमित्त बनके कर रहे हैं। सब अच्छे उमंग उत्साह का सर्टीफिकेट दादियों द्वारा मिला है इसकी तो बहुत-बहुत मुबारक हो। लेकिन इसका कारण क्या? जिस भी सेवा स्थान का सेवा का वृद्धि होती है और निर्विघ्न होते हैं उसका कारण क्या होता है? जानते हो? पालना। कई सेन्टर्स में वी.आई.पी की सेवा बहुत अच्छी करते हैं लेकिन स्टूडेन्ट की पालना कम करते हैं इसीलिए स्टूडेन्ट बढ़ते नहीं हैं। और स्टूडेन्ट रेग्युलर सेवा के उमंग-उत्साह में नहीं रहेंगे, क्लास करेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे लेकिन अपने उमंग-उत्साह में नहीं आयेंगे। तो यह रिजल्ट है पालना की। मुबारक हो।

सभी जो भी टीचर्स निमित्त बैठी हैं वह जितनी वी.आई.पी. का अटेन्शन रखते हो, उतनी पालना स्टूडेन्ट की भी रखो। स्टूडेन्ट में नवीनता लाओ, कोई न कोई नवीनता लाने से उमंग-उत्साह बढ़ेगा। बहुत बिजी हो जाते हो सेवा में फिर थक जाते हो, फिर पालना इतनी रूचि से नहीं करते हो। पहले तो राजधानी तैयार करो। वह तो स्टूडेन्ट से ही होगी ना। दिल से पालना करो। एक-एक की कमजोरी

हटाने की मेहनत करो। खुशी की मेहनत करो, बोझ वाली नहीं क्योंकि क्लास के स्टूडेन्ट जितना ज्यादा बढ़ेंगे उतनी राजधानी जल्दी तैयार होगी। जो सहयोगी हैं, उनको संबंध में लाओ स्टूडेन्ट बनाओ। बाकी अच्छा है, टीचर्स की महिमा सुनी थी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं, अच्छे प्लैन बना रहे हैं। टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा, आपको लाख गुणा बधाई हो।

अभी एक मिनट ऐसा पावरफुल सर्व शक्तियां सम्पन्न विश्व की आत्माओं को किरणें दो जो चारों ओर आपके शक्तियों का वायब्रेशन विश्व में फैल जाये। अच्छा।

चारों ओर के ब्राह्मण सो फरिश्ते बच्चों को, सदा स्वदर्शन द्वारा स्व को चेक और चेंज करने वाले, ब्रह्मा बाप को फॉलो करने वाले फरमानबरदार बच्चों को, सदा डबल लाइट बन सेवा और पुरुषार्थ करने वाले फरिश्ते आत्माओं को, सदा अपनी पोजीशन की सीट पर सेट हो आपोजीशन को समाप्त करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को, संगमयुग का प्रत्यक्ष फल अनुभव करने वाले बाप के समीप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- दादियों को देखकर खुश होते हैं ना। बस दादी की मुस्कराती मूरत और दृष्टि बहुत सुखदाई है। आप जब मुस्कराकर मिलती हो, दृष्टि देती हो ना तो सब बहुत खुश हो जाते हैं। मुस्करा रही है। बापदादा ने तो कहा है सदैव चेहरा मुस्कराना चाहिए सभी का। मुस्कराने के बिना कभी भी नहीं हो। देखो दादी कह रही है मुस्करायेंगे नहीं तो मुश्किलातें आ जायेंगी। (दादी सिर्फ इशारा करती है) दादी फरिश्ता बन रही है ना, फरिश्ते पन की स्टेज आ रही है। मुस्कराने में सब कुछ आ जाता है। बहुत भाषण किया है ना, जब से जन्म लिया है तब से भाषण किया है, क्लास कराये हैं, अभी स्लोगन मुआफिक बोलती है। फरिश्ता बनकर डांस करती है। फरिश्ता और क्या करता है? उड़ता है और डांस करता है। अच्छा।

डबल फारेनर्स ने कहा है कल से 85 परसेनट बन जायेंगे। दादी तो है 95 परसेन्ट। कापी करो बस। कोई सीरियस बने ना तो उसको टाइटल देना - गैस का गुब्बारा बन गया। गैस का गुब्बारा होता है ना, तो जब गम्भीर हो जाते हैं तो गैस भर जाता है व्यर्थ संकल्पों का। कोई को बोलना नहीं गुब्बारा, नहीं तो और गैस भर जायेगा। शुभ भावना रखना। इन्हों को ही तो बनना है और कौन बनेगा।

तीनों बड़े भाईयों से:- तीनों ही आपस में एक संकल्प करके चल रहे हैं, एक ही संकल्प तीनों का। हाँ जी, हाँ जी, सबकी दुआयें आपको मिल रही हैं। मिलती हैं ना। अच्छा है पाण्डवों में भी एक्जैम्पुल तो हैं ना। बहुत अच्छा।

सोमनाथ वालों की याद दी - वहाँ भी सेवा अच्छी हो रही है। उन्हों को भी सेवा के याद की मुबारक।

(प्रेजीडेंट हमेशा बाबा का सन्देश पूछता है कि बाबा ने क्या सन्देश दिया है) उनको याद रहता है कि सन्देश आया है। देखो यह एक ही प्रेजीडेंट हैं जिसमें तीन सत्ता हैं - साइंटिस्ट भी है, राजनेता भी है और धर्म में भी रूचि है। जितने भी प्रेजीडेंट आये हैं, और प्रेजीडेंट ऐसा नहीं हुआ है। तो इसका भी पार्ट है। आध्यात्मिक रास्ते में रूचि है इसीलिए आध्यात्मिक रास्ते का साथी है।

विदेश की बड़ी बहिनों से - अच्छा - यह डबल सेवाधारियों की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। अच्छा है बापदादा के पास समाचार तो आता ही रहता है और सभी अच्छी तरह से सम्भाल भी रहे हैं। चक्कर भी लगाते रहते हो। बापदादा को अच्छा लगता है, आपस में जब मिलते हो, प्लैन बनाते हो, तो संगठन

की शक्ति को प्रयोग करते हो, यह बहुत अच्छा है क्योंकि हर एक की विशेषता अपनी-अपनी है। विचार कोई समय किसी का बहुत अच्छा निकल आता है, तो आपस में मिलते रहते हो, मीटिंग करते हो यह बापदादा को अच्छा लगता है। अभी आप लोगों को पहले फरिश्तेपन के नजदीक आना पड़ेगा क्योंकि आप साकार रूप में एक्जैम्पल हो। साकार में अभी आप भी एक्जैम्पुल हो, निमित्त हो। तो जैसी आपकी रफ्तार होगी वैसे औरों को भी हिम्मत मिलेगी। उमंग आयेगा। सब पुराने हैं। साकार बाप की पालना का रिटर्न है फॉलो ब्रह्मा बाबा। सबमें अव्वल नम्बर, तभी तो अव्वल आत्मा बनी ना। सारे ड्रामा में अव्वल नम्बर आत्मा। तो फॉलो ब्रह्मा बाप। और सबका प्यार और दुआयें कितनी मिलती हैं। अपना पुरुषार्थ तो है लेकिन दुआयें भी मिलती हैं। जिसके निमित्त बनते हैं उनकी दुआयें मिलती हैं, यह भी लिफ्ट है, आप लोगों को ईश्वरीय गिफ्ट भी है। (मौरीशियस में रिट्रीट प्लेस बन रहा है) अच्छा बन रहा है, सेवा बहुत अच्छी होगी। अच्छा।

(डबल विदेशी भाई बहिनों ने बापदादा के पास निम्नलिखित 7 बातों का चार्ट सन्देशी द्वारा भेजा, जिसकी रिजल्ट पर आगे के पुरुषार्थ का इशारा दिया है)

(1) स्व परिवर्तन की रफ्तार क्या है?

(2) अपने स्वमान में निरन्तर स्थित रहकर दूसरों को सम्मान देता हूँ?

(3) सर्व से दुआयें ली और दी?

(4) सर्व खजानों का स्टॉक कहाँ तक जमा किया?

(5) अपने मन को सेकण्ड में एकाग्र और निरन्तर एकरस कर सकता हूँ?

(6) बिन्दू बन, बिन्दू को याद कर सेकण्ड में फुलस्टॉप लगा सकता हूँ?

(7) पिछले 6 महीनों से खुशी, शान्ति और शक्ति की किरणें फैलाके ज्ञान सूर्य बना?

''सच्चे दिल से बाप व परिवार के स्नेही बन मेहनत मुक्त बनने का वायदा करो और फायदा लो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ स्वराज्य अधिकारी, स्वमानधारी बच्चों को देख रहे हैं। बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा स्वमान दिया है। हर एक बच्चे को पांव में गिरने से छुड़ाए सिर का ताज बना दिया। स्वयं को सदा ही प्यारे बच्चों का सेवाधारी कहलाया। इतनी बड़ी अथॉरिटी का स्वमान बच्चों को दिया। तो हर एक अपने को इतना स्वमानधारी समझते हैं ? स्वमानधारी का विशेष लक्षण क्या होता है ? जितना जो स्वमानधारी होगा उतना ही सर्व को सम्मान देने वाला होगा। जितना स्वमानधारी उतना ही निर्मान, सर्व का स्नेही होगा। स्वमानधारी की निशानी है - बाप का प्यारा साथ में सर्व का प्यारा। हद का प्यारा नहीं, बेहद का प्यारा। जैसे बाप सर्व के प्यारे हैं, चाहे एक मास का बच्चा है, चाहे आदि रत्न भी है लेकिन हर एक मानता है मैं बाबा का, बाबा मेरा। यह निशानी है सर्व के प्यारेपन की, श्रेष्ठ स्वमान की, क्योंकि ऐसे बच्चे फालो फादर करने वाले हैं। देखो बाप ने हर वर्ग के बच्चों को, छोटे बच्चों से लेके, बुजुर्ग समान बच्चों को स्वमान दिया। यूथ को विनाशकारी से विश्व कल्याणकारी का स्वमान दिया। महान बनाया। प्रवृत्ति वालों को महात्मायें, बड़े-बड़े जगतगुरू उनसे भी ऊंचा, प्रवृत्ति में रहते, पर-वृत्ति वाले महात्माओं का भी सिर झुकाने वाला बनाया। कन्याओं को शिव शक्ति स्वरूप का स्वमान याद दिलाया, बनाया। बुजुर्ग बच्चों को ब्रह्मा बाप की हमजिन्स अनुभवी का स्वमान दिया। ऐसे ही स्वमानधारी बच्चे हर आत्मा को ऐसे स्वमान से देखेंगे। सिर्फ देखेंगे नहीं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे। क्योंकि स्वमान देह-अभिमान को मिटाने वाला है। जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह का अभिमान नहीं होगा। बहुत सहज साधन है, देह अभिमान को मिटाने का - सदा स्वमान में रहना। सदा हर एक को स्वमान से देखना। चाहे प्यादा है, 16 हजार की माला में लास्ट नम्बर भी है लेकिन लास्ट नम्बर में भी ड्रामानुसार बाप द्वारा कोई न कोई विशेषता है। स्वमानधारी विशेषता को देख स्वमान देते हैं। उनकी दृष्टि में, वृत्ति में, कृत्ति में, हर एक की विशेषता समाई हुई होती है। जो भी बाप का बना वह विशेष आत्मा है, चाहे नम्बरवार है लेकिन दुनिया के कोटों में कोई है। ऐसे अपने को सभी विशेष आत्मा समझते हो ? स्वमान में स्थित रहना है। देह-अभिमान में नहीं, स्वमान।

बाप को हर एक बच्चे से प्यार क्यों है ? क्योंकि बाप जानते हैं मेरे को पहचान, मेरे बने हैं ना। चाहे आज इस मेले में भी पहली बार आये हैं, फिर भी बाबा कहा, तो बाप के प्यार के पात्र हैं। बापदादा को चारों ओर के सर्व बच्चे सर्व से प्यारे हैं। ऐसे ही फालो फादर। कोई भी अप्रिय नहीं, सर्व प्रिय हैं। देखो, जो भी बच्चे मेरा बाबा कहते हैं, तो मेरापन किसने लाया ? स्नेह ने। जो भी यहाँ बैठे हैं, वह समझते हो कि स्नेह ने बाप का बना लिया। बाप का स्नेह चुम्बक है, स्नेह के चुम्बक से बाप के बन गये। दिल का स्नेह, कहने मात्र स्नेह नहीं। दिल का स्नेह इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। मिलने क्यों आते हो ? स्नेह ले आया है ना! जो भी सभी बैठे हैं, आये हैं, क्यों आये हो ? स्नेह ने खींचा ना। स्नेह भी कितना है ? 100 परसेन्ट है वा कम है ? जो समझते हैं स्नेह में हम 100 परसेन्ट हैं, वह हाथ उठाओ। स्नेह में 100 परसेन्ट। थोड़ा भी कम नहीं ? अच्छा। तो इतना ही स्नेह आपस में ब्राह्मणों में है ? इसमें हाथ उठायें ? इसमें परसेन्टेज है। जैसे बाप का सभी से स्नेह है, ऐसे ही बच्चों का भी सर्व से स्नेह, सर्व के स्नेही। दूसरे की कमजोरी को देखो नहीं। अगर कोई संस्कार के वशीभूत है, तो फालो किसको करना है ? वशीभूत वाले को ? आप वशीभूत मन्त्र देने वाले हो, वशीभूत से छुड़ाने वाला मन्त्र, छुड़ाने वाले हो ना! या देखने वाले हो ? कि दिखाई दे देता है ? अगर कोई खराब चीज़ दिखाई भी देती है, तो क्या करते हैं ? देखते रहते हैं या किनारा कर लेते हैं ? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। **दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की।** चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी। क्योंकि ज्ञान में स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को मेहनत करनी नहीं पड़ती याद करने की। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह

मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है।

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप सभी अपने को क्या समझते हैं ? स्नेही हैं ? हैं स्नेही ? जो समझते हैं दिल के स्नेही हैं, वह हाथ उठाओ। सर्व के स्नेही ? सर्व के स्नेही ? अच्छा - बाप के तो दिल के स्नेही हैं, सर्व के स्नेही हैं ? सर्व के ? हर एक समझता है - यह मेरा भाई बहन है ? हर एक समझता है यह मेरा है ? समझता है ? कि कोई-कोई समझता है ? जैसे बाप के स्नेह में सभी हाथ उठाते हैं, हाँ बाप के स्नेही हैं ऐसे आप हर एक के लिए हाथ उठायेंगे, कि हाँ यह सर्व के स्नेही हैं ? यह सर्टीफिकेट मिलेगा ? क्योंकि बापदादा ने पहले भी कहा था कि सिर्फ बाप से सर्टीफिकेट नहीं लेना है, ब्राह्मण परिवार से भी लेना है क्योंकि इस समय बाप धर्म और राज्य दोनों साथ-साथ स्थापन कर रहे हैं। राज्य में सिर्फ बाप नहीं होगे, परिवार भी होगा। बाप के भी प्यारे, परिवार के भी प्यारे।

ज्ञानी बने हो लेकिन साथ में स्नेही भी जरूरी है। स्वमान में रहना और सम्मान देना, यह दोनों जरूरी हैं। बाप ने ब्राह्मण जन्म लेते ही हर एक बच्चे को सम्मान दिया, तब तो ऊंचे बनें। इस एक जन्म में सम्मान देना है और सारा कल्प उसकी प्रालब्ध सम्मान प्राप्त होता है। आधाकल्प राज्य अधिकारी का सम्मान मिलता है, आधाकल्प भक्ति में भक्तों द्वारा सम्मान मिलता है। लेकिन इसका, सारे कल्प का आधार है इस एक जन्म में सम्मान देना, सम्मान लेना।

देखो आज इस सीजन का पहला मिलन है। चारों ओर से सब बच्चे स्नेह से इक्ट्ठे हुए हैं। तो जो पहले बारी आये हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत आये हैं। पहले बारी आये हैं और पहला चांस लिया है, तो पहले चांस लेने वालों को मुबारक है। सभी को अपने परिवार में वृद्धि देख करके खुशी होती है ना! वाह हमारे भाई! वाह हमारी बहिनें पहुंच गये! बापदादा को भी बहुत खुशी होती है। बिछुड़े हुए बच्चे फिर से अपना अधिकार लेने के लिए पहुंच गये हैं। तो सभी खुश हैं या बहुत-बहुत-बहुत खुश हैं ? बहुत-बहुत खुश।

अच्छा-डबल फारेनर्स भी आये हुए हैं। होशियार हैं डबल फारेनर्स। कोई भी टर्न छोड़ते नहीं हैं। अच्छा है। चांस लेने वाले को चांसलर कहते हैं। तो चांस लेने में होशियार हैं। डबल फारेनर्स को विशेष बापदादा एक बात की विशेष मुबारक देते हैं। कौन सी ? जो कहाँ-कहाँ बिखर गये, देश भी बदल गया, धर्म भी कईयों का बदल गया, कल्चर भी बदल गया लेकिन बदलते हुए पहचानने की आंख बहुत तेज निकली, जो भिन्न होते भी पहचानने में होशियार निकले। पहचान लिया, बाप को अपना बना दिया। परिवार को अपना बना लिया। ब्राह्मण कल्चर को अपना बना लिया। तो होशियार निकले ना! और बापदादा सदा यह विशेषता देखते हैं कि बाप से भी प्यार है लेकिन सेवा से भी बहुत प्यार है। सेवा से प्यार होने के कारण बहुत बिजी होते हो ना! डबल सेवा करते हो। डबल भी नहीं, तीन सेवा करते हो, एक लौकिक जॉब, एक ज्ञान की सेवा और साथ में बापदादा ने मैजारिटी को देखा है कि सेन्टर में भी कर्मणा सेवा में सहयोगी बनते हैं। तो बापदादा जब देखते हैं तीनों तरफ की सेवा में बच्चे बिजी रहते हैं, खुश होते हैं और दिल ही दिल में मुबारक देते रहते हैं। अभी-अभी भी बापदादा देख रहे हैं चारों ओर विदेश में कोई रात में, कोई दिन में मिलन मना रहे हैं। अच्छी पुरुषार्थ की गति को बढ़ाने के लिए आपको दादी भी अच्छी मिली है। है ना ऐसे ? जरा सी कोई कमी देखती है, फौरन क्लास पर क्लास कराती है। किसी भी बच्चे को, चाहे देश वाले चाहे विदेश वालों को, किसी भी सबजेक्ट में मेहनत लगती है, उसका मूल कारण है दिल का स्नेह। स्नेह माना लवलीन। याद करना नहीं पड़ता, याद भुलाना मुश्किल होता। अगर मेहनत करनी पड़ती है तो कारण है दिल के स्नेह को चेक करो। कहाँ लीकेज तो नहीं है ? चाहे लगाव कोई व्यक्ति से, चाहे व्यक्ति की विशेषता से, चाहे कोई साधन से, सैलवेशन से, एकस्ट्रा सैलवेशन, कायदे प्रमाण सैलवेशन ठीक है, लेकिन एकस्ट्रा सैलवेशन से भी प्यार होता है, लगाव होता है। वह सैलवेशन याद आती रहेगी। उसकी निशानी है - कहाँ भी लीकेज होगी तो सदा जीवन में किसी भी कारण से सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं होगी। कोई न कोई कारण असन्तुष्टता का अनुभव करायेंगे। और सन्तुष्टता जहाँ होगी उसकी निशानी सदा प्रसन्नता होगी। सदा रूहानी गुलाब के मुआफिक मुस्कराता रहेगा, खिला हुआ रहेगा। मूड आफ नहीं होगी, सदा डबल लाइट। तो समझा मेहनत से अभी बच जाओ। बापदादा को बच्चों की मेहनत नहीं अच्छी लगती। आधाकल्प मेहनत की है, अभी मौज करो। मुहब्बत में लवलीन हो, अनुभव के मोती ज्ञान

सागर के तले में अनुभव करो। सिर्फ डुबकी लगाकर निकल नहीं आओ सागर से, लवलीन रहो।

सभी ने वायदा तो किया है ना! कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे ? किया है, वायदा किया है ? साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे ? जो साथ चलने के लिए तैयार हैं वह हाथ उठाओ। तैयार हैं, सोचकर उठाओ, तैयार हैं अर्थात् बाप समान हैं। कौन साथ चलेगा ? समान साथ चलेगा ना! तो चलेंगे ? एवररेडी ? पहली लाइन एवररेडी ? एवररेडी ? कल चलने के लिए आर्डर करें, चलेंगे ? अच्छा प्रवृत्ति वाले चलेंगे ? बच्चे नहीं याद आयेंगे ? मातायें चलेंगी ? मातायें तैयार हैं ? याद नहीं आयेगी ? टीचर्स को सेन्टर याद आयेगा, जिज्ञासु याद आयेंगे ? नहीं याद आयेगा ? अच्छा। सभी निर्मोही हो गये हो ? फिर तो बहुत अच्छी बात है। फिर तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी ना।

आज बापदादा सभी को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे भी बाप के दिल में बैठे हैं, सभी को आज का दिन मेहनत मुक्त बनाने चाहते हैं। बनेंगे ? ताली तो बजा दी, बनेंगे ? कल से कोई दादियों के पास नहीं आयेगा। मेहनत नहीं करायेंगे ? मौज से मिलेंगे। ज़ोन हेड के पास नहीं जायेंगे, कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट। ठीक है ? अभी हाथ उठाओ। देखो सोच के हाथ उठाना, ऐसे नहीं उठा लेना। पहली लाइन नहीं उठा रही है। आप लोगों ने उठाया। कोई कम्पलेन नहीं। कोई मेरा मेरा नहीं, कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म। देखो वायदा तो किया है, अच्छा है मुबारक हो लेकिन क्या है, वायदे का फायदा नहीं उठाते हो। वायदा बहुत जल्दी कर लेते हो लेकिन फायदा उठाने के लिए रोज़ एक तो रियलाइजेशन दूसरा रिवाइज करो, वायदे को रोज़ रिवाइज करो क्या वायदा किया ? अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। वायदा क्या किया ? और फायदा क्या उठा रहे हैं ? रियलाइज़ करो, रिवाइज करो, बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा।

बापदादा को पता है मीटिंग वालों ने वायदा किया है। मीटिंग वाले उठो। अच्छा पक्का वायदा किया ? या फाइल के लिए वायदा किया ? फाइल के लिए किया या फाइनल किया ? फाइनल किया ? ताली बजाओ। अच्छी तरह से बजाओ। बहुत अच्छा किया, बैठ जाओ। देखो, इतने भी फाइनल हो जायेंगे तो पीछे नम्बर तो जरूर फाइनल हो जायेंगे क्योंकि आप विशेष सेवा के आधारमूर्त निमित्त हो और सेवा की सफलता स्व सेवा से ही होती है। स्व की सेवा विश्व की सेवा का आधार है। तो इतने सब वायदा और फायदा उठाने वाले ही हैं, तो आपका निमित्त भाव औरों को भी सहयोग देगा। बार-बार रियलाइज़ करना। दिल से रियलाइज करना, क्या करना है, क्या नहीं करना है। `ना' को 21 जन्म के लिए आलमाइटी गवर्मेन्ट की सील लगा देना। और हाँ जी, हाँ जी करते रहना। मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, जो चाहे वह कर सकते हैं, इतनी अथॉरिटी बाप द्वारा मिली हुई है। पहले कोई भी संकल्प, बोल, कर्म करने के पहले बाप समान है या नहीं ? यह चेक करो फिर प्रैक्टिकल में लाओ। जब आपका विवेक हाँ करें, हाँ जी तभी प्रैक्टिकल में लाओ। समान बनना है तो समान करना भी है। चलना भी है। बापदादा तो हर बच्चे को बहुत-बहुत बड़ी बड़ी उम्मीदों से देखते हैं कि यही बनने हैं, बने थे और अवश्य बनना ही है। सिर्फ दो शब्द याद रखना - निमित्त और निर्मान। इसमें मैं, मेरा दोनों ही खत्म हो जायेगा। निमित्त हूँ और निर्मान बनना ही है।

आप जो 70 वर्ष मना रहे हो, यह समाचार भी सुना। विदेश भी तैयारी कर रहे हैं और देश वाले भी कर रहे हैं। यही मीटिंग की ना! तो बापदादा इस 70 वें वर्ष को किस विधि से मनाने चाहते हैं। सभी को उमंग है ना मनाने का ? उमंग है ? माताओं को है, डबल विदेशियों को है ? मनाना है ? सेवा का प्रोग्राम तो आप बनाते ही हो और बनायेंगे भी, इसमें तो होशियार हो। बापदादा ने देखा है प्लैन बहुत अच्छे अच्छे बनाते हैं बापदादा को पसन्द हैं। बापदादा क्या चाहते हैं ? बापदादा सिर्फ एक शब्द चाहता है - एक शब्द है - सफल करो, सफल बनो। जो भी खजाने हैं, शक्तियां हैं, संकल्प हैं, बोल हैं, कर्म भी शक्ति है, यह समय भी खजाना है, शक्ति है, खजाना है। सबको सफल करना है। चाहे स्थूल धन, चाहे अलौकिक खजाने, सबको सफल करना है। सफलता मूर्त का सर्टीफिकेट लेना ही है। सफल करो और सफल कराओ। अगर कोई असफल करता है, तो बोल द्वारा शिक्षा द्वारा नहीं, अपने शुभ भावना, शुभ कामना और सदा शुभ सम्मान देने द्वारा सफल कराओ। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, अगर शिक्षा देनी भी पड़ती है लेकिन क्षमा और शिक्षा, क्षमा रूप बनकर शिक्षा दो। मर्सीफुल बनो, रहमदिल बनो। आपका मर्सीफुल रूप अवश्य शिक्षा का फल दिखायेगा। देखो आजकल साइंस वाले भी पहले आपरेशन करते हैं, लेकिन पहले क्या करते हैं ? पहले सुला देते हैं। पीछे काटते हैं, पहले ही नहीं काटते हैं, टिंचर भी लगाते हैं, पहले फूंक देते हैं फिर टिंचर लगाते

हैं। तो आप भी पहले मर्सीफुल बनो, फिर शिक्षा दो तो प्रभाव डालेगी नहीं तो क्या होता है ? आप शिक्षा देने लगते हो वह पहले ही आपसे ज्यादा शिक्षक है। तो शिक्षक, शिक्षक की शिक्षा नहीं मानता। जो प्वाइंट आप देंगे, ऐसे नहीं करो, ऐसे करो, उसके पास कट करने की 10 प्वाइंट होंगी। इसीलिए क्षमा और शिक्षा साथ-साथ हो, तो इस 70वें वर्ष का थीम है - सफल करो, सफल कराओ। सफलता मूर्त बनो। सब सफल करो। डबल लाइट बनना है ना तो सफल कर लो। संस्कार को भी सफल करो। जो ओरीज्नल आपके आदि संस्कार, देवताई संस्कार, अनादि संस्कार आत्मा के उसको इमर्ज करो। उल्टे संस्कारों का संस्कार करो। आदि अनादि संस्कार इमर्ज करो। अभी सभी की कम्पलेन विशेष एक ही रह गई है, संस्कार नहीं बदलते, संस्कार नहीं बदलते। तो 70वें वर्ष में कुछ तो कमाल करेंगे ना। तो यह परिवर्तन की विशेषता दिखाओ। ठीक है ना! 70वें वर्ष में करना है ना ? करना है, करेंगे ? करेंगे या हुआ ही पड़ा है ? सिर्फ निमित्त बनना है। अच्छा -

बापदादा सभी बच्चों को देख गीत गाते हैं - वाह! बच्चे वाह! अच्छा - अभी क्या करना है ?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है:- बहुत सेवाधारी आये हैं। संगठन अच्छा है। जो सेवा की, दिल के स्नेह से सेवा की है, उसका प्रत्यक्ष फल भी खुशी अनुभव की ? खुशी मिली ? सेवा का फल है प्रत्यक्षफल है खुशी और भविष्य सेवा का फल पुण्य जमा हुआ। पुण्य का खाता बढ़ गया। तो वर्तमान भी फल मिला और भविष्य भी जमा हो गया। अच्छा है हर ज़ोन को चांस मिलता है, विशेष चांस मिलने से वायुमण्डल का फायदा, यज्ञ सेवा के पुण्य का खाता और सेवा से सर्व ब्राह्मणों से सम्बन्ध-सम्पर्क का ईश्वरीय प्यार का नाता बढ़ता है। तो बहुत अच्छा कर रहे हैं और कल से तो समाप्ति भी शुरू हो जायेगी। तो बहुत अच्छा किया, सेवा का बल सदा के लिए भरके जाना। अच्छा है। मातायें भी हैं, कुमारियां भी हैं, सब सेवाधारी हैं। पाण्डव तो हैं ही हैं। पाण्डव हाथ उठाओ। पाण्डव ज्यादा हैं, मातायें हाथ उठाओ। कुमारियां हाथ उठाओ।

जो सेवा का चांस लिया है, तो जो वायदा करके जा रहे हो उसका फायदा विशेष सेवा के रिटर्न में देते रहना। वायदे का फायदा उठाना। सिर्फ वायदा नहीं, फायदा। अच्छा।

इन्दौर-नडियाद होस्टल की कुमारियां भी हैं:- नडियाद की थोड़ी हैं। नडियाद की कुमारियां ठीक हैं। स्व-उन्नति सेवा की उन्नति दोनों ही हो रही है ? अच्छा है, कुमारियां ट्रेनिंग करती हैं और भी ट्रेनिंग की कुमारियां आई हैं ना! नडियाद वाली भी आगे आ जाओ। अच्छा - इन सभी कुमारियों ने चाहे नडियाद में हैं, चाहे मधुबन में हैं, अभी तो मधुबन की हैं ना। तो सभी ने लक्ष्य पूरा रखा है ? लक्ष्य क्या रखा है ? सफलता मूर्त बनने का। समस्या नहीं बनना है, समाधान मूर्त बनना है। वायुमण्डल के प्रभाव में नहीं आना है। अपने वायुमण्डल का प्रभाव डालना है, इतनी ताकत भरी है। आपको वायुमण्डल की मदद नहीं मिले तो क्या करेंगी ? अपना वायुमण्डल दिखायेंगी ? इतनी ताकत है ? फिर तो ताली बजाओ, मुबारक हो। बहुत अच्छा, देखो आपका चित्र तो इसमें आ रहा है, यह फोटो निकल रहा है। तो बापदादा हर मास आपके निमित्त से रिपोर्ट लेगा। मुबारक भी देगा। क्योंकि सफलता मूर्त, सफलता के अधिकारी हैं। तो सफलता के अधिकारी बनना है ना। अच्छा है, एक बात की तो मुबारक है अभी, कि हिम्मत रख करके आ गई हो। तो आपकी हिम्मत के कदम पर बापदादा की पदमगुणा मदद है ही है। दिलशिकस्त नहीं होना, दिलखुश। अगर कोई भी समस्या आवे ना, तो उसी समय बाप के आगे रख देना, अपने दिल में नहीं रखना। बाबा आप लो, हम तो समाधान स्वरूप हैं। ठीक है ? अच्छी हिम्मत वाली हो, और हिम्मत सदा रखती रहना। अच्छा।

कटक में बहुत अच्छा मेगा प्रोग्राम रहा, पुरी में भी बहुत अच्छा प्रोग्राम रहा:-

प्रोग्राम तो सब अच्छे कर रहे हो, सन्देश का जो कार्य करना है वह सन्देश तो सबको पहुंच रहा है, सबको पता पड़ता है कि ब्रह्माकुमारियां भी हैं और ब्रह्माकुमारियां यह कार्य करने चाहती हैं, यह भी मालूम पड़ता जाता है। लेकिन बापदादा की जो पुराने-पुराने बड़े-बड़े सेन्टर चल रहे हैं, उनके प्रति जो शुभ आशा है वह अभी तक पूर्ण नहीं की है। यह बापदादा का उल्हना है। वारिस क्वालिटी वा सेवा से भी ऐसे पुरुषार्थ में तीव्र क्वालिटी, वह बापदादा के सामने और अधिक आनी चाहिए। वी.आई.पी. भी आते हैं लेकिन वी.आई.पी. भी वी.वी.आई.पी. बन जायें, वी.आई.पी., वी.आई.पी. नहीं रहें, आई.पी., आई.पी. नहीं रहें, ब्राह्मण जीवन का अनुभव करें। क्वान्टिटी तो हो रही हैं अभी क्वालिटी का गुलदस्ता हर एक ज़ोन में निकलना चाहिए। हर एक ज़ोन को चारों ओर के ऐसे उम्मींदवार आत्माओं

की विशेष पालना कर समीप सम्बन्ध में लाना है। प्लैन तो बनाते हो अभी इस प्लैन को तीव्र गति दो। क्योंकि कम से कम अपने राज्य के पहले जन्म की पावरफुल संख्या, कभी-कभी आने वाले, कभी-कभी नियम वाले नहीं, पक्के जो विन करने वाले वन तारीख, वन जन्म में आने वाले हों, ऐसा गुलदस्ता तैयार करो। चाहे प्रजा भी बने लेकिन प्रजा भी विशेष होगी। प्रजा भी मालिक का अधिकार रखेगी क्योंकि पहले जन्म की शोभा पहले जन्म का भभका तो अलग होता है ना। तो हर एक ज़ोन अपनी रिजल्ट निकाले, प्रोग्राम तो बहुत किया है, उसकी मुबारक हो। बापदादा उसको अच्छा समझते हैं, सफल करते हैं, उमंग-उत्साह में आते हैं, और बड़ों-बड़ों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, यह अच्छा कर रहे हैं लेकिन रिजल्ट निकालो। कम से कम डेढ लाख, लाख आते हैं उनमें से कुछ तो विन करने वाले हों। तो ऐसा प्रोग्राम बनाओ और पुराने सेन्टर वारिस क्वालिटी नये-नये निकालो, जो पुराने हैं उनको तो मुबारक मिलती है, नये-नये वारिस क्वालिटी तैयार करो। रॉयल फैमिली, रॉयल सम्बन्ध-सम्पर्क वाले भी तो चाहिए ना। अच्छा।

अभी एक मिनट, एक मिनट मशहूर है ना! तो एक मिनट जो सभी ने मेहनत मुक्त का वायदा किया है, किया है ना! किया है ? फोटो निकालो। तो अभी एक मिनट के लिए अपने दिल से इस वायदे को दृढ़ता का अण्डरलाइन लगाओ। अपने मन में पक्का करो। अच्छा।

सर्व चारों ओर के स्वमानधारी बच्चों को, सदा बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा मेहनत मुक्त, जीवनमुक्त अनुभव करने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को सदा वायदा और वायदे का फायदा लेने वाले, बैलेन्स रखने वाले ब्लिसफुल बच्चों को, सदा मौज में रहने वाले, मौज में औरों को भी रहाने वाले, ऐसे संगमयुगी श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिलाराम के दिल की दुआयें स्वीकार हों। यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:– ठीक है ना। सभी आप लोगों को देखकर खुश होते हैं। बाप और बच्चों, दोनों को देखकर खुश होते हैं। दोनों समान। सभी के सिकीलधे हो। सभी का दादियों से विशेष प्यार है ना! बहुत प्यार है। क्योंकि जो निमित्त बनते हैं, तो निमित्त बनने वालों के ऊपर जिम्मेवारी भी होती है, तो स्नेह भी इतना होता है क्योंकि सबके प्यार और दुआओं की उनके जीवन में लिफ्ट मिल जाती है। आप भी जो निमित्त बनते हो उन्हों को भी लिफ्ट मिलती है लेकिन लिफ्ट की गिफ्ट को कायम रखें तो बहुत फायदा हो सकता है। यह एकस्ट्रा वरदान मिलता है। किसी भी कार्य के लिए, ईश्वरीय कार्य में, यज्ञ सेवा में, विशेष निमित्त बनता है उसको दुआयें और प्यार दोनों की लिफ्ट मिलती है। प्यार एक ऐसी चीज़ है जो क्या से क्या बना देती है। आज दुनिया में भी किसी से पूछो क्या चाहिए ? कहेंगे प्यार चाहिए। शान्ति चाहिए, वह भी प्यार से मिलेगी। तो प्यार, आत्मिक प्यार सबसे श्रेष्ठ है।

(फ्रांस वालों ने बहुत याद दी है) बापदादा भी बच्चों को विशेष सेवा में परिवर्तन की मुबारक देते हैं। (मार्क ने बहुत मेहनत की है) खास मुबारक हो, ताली बजाओ। देखो जो पुराना गवर्मेन्ट का रिकार्ड था, कल्ट का, वह सभी जगह मिट जायेगा। अच्छी हिम्मत रखी। हिम्मत की मदद मिलती है। योग किया ना दिल से, तो योग का फल मिला, बल मिला। बापदादा भी खुश है। परिवार भी खुश है तब तालियां बजाई ना।

दादी जी से बाबा पूछ रहा है:– तबियत खराब है, बुखार है क्या ? यह तो बहादुर है, देखो ठण्डा है या गर्म है ? खेल दिखा रही है। तबियत की कमजोरी हो जाती है। अभी तो ताकत आ रही है। सभी को कहो मैं ठीक हूँ। बोलो, ठीक हूँ। (मैं बिल्कुल ठीक हूँ) सभी का प्यार है ना, देखो साकार, अव्यक्त हुए और व्यक्त में निमित्त बनाया। ऐसे टाइम पर निमित्त बनना, कितनी हिम्मत की बात है। ऐसे टाइम पर हिम्मत दिखाने वाले को सारे आयु तक मदद मिलती है। अच्छा।

समय की समीपता प्रमाण स्वयं को हद के बन्धनों से मुक्त कर सम्पन्न और समान बनो

आज चारों ओर के सम्पूर्ण समान बच्चों को देख रहे हैं। समान बच्चे ही बाप के दिल में समाये हुए हैं। समान बच्चों की विशेषता है वह सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निर्मान और निर्मल होंगे। ऐसी आत्मायें सदा स्वतन्त्र होती हैं, किसी भी प्रकार के हद के बन्धन में बंधायमान नहीं होती। तो अपने आप से पूछो ऐसी बेहद की स्वतन्त्र आत्मा बने हैं! सबसे पहली स्वतन्त्रता है देहभान से स्वतन्त्र। जब चाहे तब देह का आधार ले, जब चाहे देह से न्यारे हो जाए। देह की आकर्षण में नहीं आये। दूसरी बात - स्वतन्त्र आत्मा कोई भी पुराने स्वभाव और संस्कार के बन्धन में नहीं होगी। पुराने स्वभाव और संस्कार से मुक्त होगी। साथ-साथ किसी भी देहधारी आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आकर्षित नहीं होगी। सम्बन्ध-सम्पर्क में आते न्यारे और प्यारे होंगे। तो अपने को चेक करो - कोई भी छोटी सी कर्मेन्द्रियां बन्धन में तो नहीं बांधती? अपना स्वमान याद करो - मास्टर सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, स्वदर्शन चक्रधारी, उसी स्वमान के आधार पर क्या सर्वशक्तिवान के बच्चे को कोई कर्मेन्द्रिय आकर्षित कर सकती? क्योंकि समय की समीपता को देखते अपने को देखो - सेकण्ड में सर्व बन्धनों से मुक्त हो सकते हो? कोई भी ऐसा बन्धन रहा हुआ तो नहीं है? क्योंकि लास्ट पेपर में नम्बरवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है, सेकण्ड में जहाँ, जैसे मन-बुद्धि को लगाने चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाये। हलचल में नहीं आये। जैसे स्थूल शरीर द्वारा जहाँ जाने चाहते हो, जा सकते हो ना! ऐसे बुद्धि द्वारा जिस स्थिति में स्थित होने चाहो उसमें स्थित हो सकते हो? जैसे साइंस द्वारा लाइट हाउस, माइट हाउस होता है, तो सेकण्ड में स्विच आन करने से लाइट हाउस चारों ओर लाइट देने लगता है, माइट देने लगते हैं। ऐसे आप स्मृति के संकल्प का स्विच आन करने से लाइट हाउस, माइट हाउस होके आत्माओं को लाइट, माइट दे सकते हो? एक सेकण्ड का आर्डर हो अशरीरी बन जाओ, बन जायेंगे ना! कि युद्ध करनी पड़ेगी? यह अभ्यास बहुतकाल का ही अन्त में सहयोगी बनेगा। अगर बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय अशरीरी बनना, मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए बापदादा यही इशारा देते हैं - कि इस अभ्यास को सारे दिन में कर्म करते हुए भी अभ्यास करो। इसके लिए मन के कन्ट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। अगर मन कन्ट्रोल में आ गया तो कोई भी कर्मेन्द्रिय वशीभूत नहीं कर सकती।

अभी सर्व आत्माओं को आपके द्वारा शक्ति का वरदान चाहिए। आत्माओं की आप मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के प्रति यही शुभ इच्छा है कि बिना मेहनत के वरदान द्वारा, दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा हमें मुक्त करो। अभी मेहनत करके सब थक गये हैं। आप सब तो मेहनत से मुक्त हो गये हो ना! कि अभी भी मेहनत करनी पड़ती है? सुनाया था - मेहनत से मुक्त होने का सहज साधन है दिल से बाप के अति स्नेही बन जाना। आप ब्राह्मण आत्माओं का जन्म का वायदा है, याद है वायदा? जब बाप ने अपना बनाया, ब्राह्मण जीवन दी तो ब्राह्मण जीवन का आप सबका वायदा क्या है? एक बाप दूसरा न कोई। याद है वायदा? याद है? कांध हिलाओ। अच्छा हाथ हिला रहे हैं। याद है पक्का या कभी-कभी भूल जाता है? देखो 63 जन्म तो भूलने वाले बने, अब यह एक जन्म स्मृति स्वरूप बने हो। तो बाप बच्चों से पूछ रहे हैं बचपन का वायदा याद है? कितना सहज करके दिया है - एक बाप में संसार है। एक बाप से सर्व सम्बन्ध हैं। एक बाप से सर्व प्राप्तियां हैं। एक ही पढ़ाने वाला भी है और पालना करने वाला भी है। सबमें एक है। चाहे परिवार भी है, ईश्वरीय परिवार लेकिन परिवार भी एक बाप का है। अलग-अलग बाप का परिवार नहीं है। एक ही परिवार है। परिवार में भी एक दो में आत्मिक स्नेह है, स्नेह नहीं आत्मिक स्नेह।

बापदादा याद दिला रहे हैं, जन्म के वायदे। और क्या वायदा किया? सभी ने बड़े उमंग-उत्साह से बाप के आगे दिल से कहा, सब कुछ आपका है। तन-मन-धन सब आपका है। तो दी हुई चीज़ बाप की अमानत के रूप में बाप ने कार्य में लगाने के लिए दिया है, आपने बाप को दे दी, दे दी है ना? या वापस थोड़ा-थोड़ा ले लेते हो? वापस लेते हो तो अमानत में ख्यानत हो जाती है। कोई-कोई बच्चे कहते हैं, रूहरिहान करते हैं ना तो कहते हैं मेरा मन परेशान रहता है, मेरा मन आया कहाँ से? जब मेरा तेरे को अर्पण किया, तो मेरा मन आया कहाँ से? आप सभी तो बिन कौड़ी बादशाह हो गये, अभी आपका कुछ नहीं रहा, बिन कौड़ी हो गये लेकिन बादशाह हो गये। क्यों? बाप का खजाना वह आपका खजाना हो गये, तो बादशाह हो गये ना! परमात्म खजाना वह बच्चों का खजाना। तो बापदादा वायदे याद दिला रहे हैं। तेरे में मेरा नहीं करो। बाप कहते हैं - जब बाप ने आप सबको परमात्म खजानों से मालामाल कर दिया, जिम्मेवारी बाप ने ले ली, किन शब्दों में? आप मुझे याद करो तो सर्व प्राप्ति के अधिकारी हो ही। सिर्फ याद करो। और आपने कहा हम आपके, आप हमारे। यह वायदा है ना! तो बाप कहते हैं खजानों को सदा स्व प्रति और सर्व आत्माओं के प्रति कार्य में लगाओ। जितना कार्य में लगायेंगे उतना ही खजाना बढ़ता जायेगा। सर्वशक्तियों का खजाना, सर्व शक्तियां कार्य में लगाओ। सिर्फ बुद्धि में नॉलेज नहीं रखो मैं सर्वशक्तिवान हूँ, लेकिन सर्व शक्तियों को समय प्रमाण कार्य में लगाओ और सेवा में लगाओ।

बापदादा ने मैजॉरिटी बच्चों के पोतामेल में देखा है दो शक्तियां अगर सदा याद रहें और कार्य में समय पर लगाओ तो सदा ही निर्विघ्न रहो। विघ्न की ताकत नहीं है आपके आगे आने की। यह बाप की गैरन्टी है। वैसे तो सर्व शक्तियां चाहिए लेकिन मैजारिटी देखा गया कि सहनशक्ति और रियलाइजेशन की शक्ति, रियलाइज करते भी हो लेकिन उसको प्रैक्टिकल में स्वरूप में लाने में अटेन्शन कम है। इसलिए जिस समय रियलाइज करते हो उस समय चलन और चेहरा बदल जाता है। बहुत अच्छे उमंग-उत्साह में आते हो, हाँ रियलाइज किया लेकिन फिर क्या हो जाता है? अनुभवी तो सभी हैं ना! फिर क्या हो जाता है? उसको हर समय स्वरूप में लाना, उसकी कमी हो जाती है। क्योंकि यहाँ स्वरूप बनना है। सिर्फ बुद्धि से जानना अलग चीज़ है, लेकिन उसको स्वरूप में लाना, इसकी आवश्यकता है। कभी-कभी बापदादा को कोई-कोई बच्चों पर रहम भी आता है, बाप समझते हैं बच्चे से मेहनत नहीं होती है तो बच्चे के बजाए बाप ही कर ले। लेकिन ड्रामा का राज़ है जो करेगा वह पायेगा। इसलिए बापदादा सहयोग जरूर देता है लेकिन करना फिर भी बच्चे को ही पड़ता है।

बापदादा ने देखा है बच्चे संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे करते हैं। अमृतवेले बापदादा के पास अच्छे-अच्छे संकल्पों की बहुत-बहुत मालायें आती हैं। यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे...., बापदादा भी खुश हो जाते हैं, वाह! बच्चे वाह! फिर करने में कमजोर क्यों बन जाते हैं? इसका कारण देखा गया - ब्राह्मण परिवार में संगठन का वायुमण्डल। कहाँ-कहाँ वायुमण्डल कमजोर भी होता है, उसका असर जल्दी पड़ जाता है। फिर उन्हों की भाषा बतायें क्या होती है? भाषा बड़ी मीठी होती है, भाषा होती है यह तो चलता है, यह तो होता है.. ऐसे समय पर क्या संकल्प करो! यह होता है, यह चलता है, यह अलबेलापन लाता है लेकिन उस समय इस भाषा को परिवर्तन करो कि बाप का फरमान क्या है? बाप की पसन्दी क्या है? बाप किस बात को पसन्द करता है? बाप ने यह कहा है? किया है? अगर बाप याद आ गया तो अलबेलापन समाप्त हो, उमंग-उत्साह आ जायेगा। अलबेलापन भी कई प्रकार का आता है। आप लोग आपस में क्लास करना, लिस्ट निकालना, एक है साधारण अलबेलापन, एक है रॉयल अलबेलापन। तो अलबेलापन दृढ़ता नहीं लाता है और दृढ़ता सफलता का साधन है। इसलिए संकल्प तक रह जाता है लेकिन स्वरूप में नहीं आता।

तो आज क्या सुना? वायदे याद कराये हैं ना! वायदे इतने अच्छे अच्छे करते, बापदादा इतना खुश हो जाते

वायदे सुनके। लेकिन जितने वायदे करते हो ना उतना फायदा नहीं उठाते। तो बापदादा यही चाहते हैं, पूछते हैं ना बाप क्या चाहते हैं हमसे? तो बापदादा यही चाहते हैं कि **समय से पहले सब एवररेडी बन जाओ। समय आपका मास्टर नहीं बने।** समय के मास्टर आप हो इसलिए यही बापदादा चाहता है कि समय के पहले सम्पन्न बन विश्व की स्टेज पर बाप के साथ-साथ आप बच्चे भी प्रत्यक्ष हो। अच्छा।

जो नये नये बच्चे आये हैं मिलने के लिए, वह हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ, लम्बा। अच्छा - बापदादा नये-नये बच्चों को देख खुश होते हैं कि भाग्यवान बच्चे अपना भाग्य लेने के लिए पहुंच गये हैं। इसलिए मुबारक हो, मुबारक हो। अभी जो भी नये बच्चे आये हैं उनमें से देखेंगे कमाल कौन करके दिखाता है? भले आये पीछे हैं लेकिन आगे जाके दिखाओ। बापदादा के पास तो सब रिजल्ट पहुंचती है। अच्छा।

सेवा का टर्न दिल्ली-आगरा का है:- अच्छा दिल्ली वाले उठो हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा किया है, चांस लिया है। टीचर्स भी बहुत आई हैं। अच्छा है। टीचर्स को देखकर बापदादा खुश होते हैं। क्यों? बाप की गद्दी के अधिकारी बने हो। बापदादा टीचर्स को सदा भाई कहते हैं। बाप समान सेवाधारी बने और प्रवृत्ति में रहने वाले जो भी आये हैं, कुमारियां भी आई हैं, कुमार भी आये हैं। अभी देहली में कोई नवीनता करके दिखाओ। मेगा प्रोग्राम भी हो गये, कान्फ्रेन्स भी बहुत हुई, वर्गों के प्रोग्राम भी बहुत हुए हैं, अभी नवीनता क्या करनी है? कोई नया प्लैन बनाया है दिल्ली वालों ने? बनाया है? बना रहे हैं? बापदादा के पास वर्गो की सेवा की रिपोर्ट आती है लेकिन हर एक वर्ग ने जो इतना वर्ष सेवा की है, उसमें फास्ट तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप कितना निकला हर वर्ग का, वह नहीं लाया है। गुलदस्ता नहीं लाया है अभी। चलो बड़ी माला को छोड़ो, गुलदस्ता तो लाओ। हर एक वर्ग के कोई ऐसे एक्जैम्पुल चाहिए जो माइक भी हो और माइट भी हो सिर्फ माइक नहीं, माइट भी हो माइक भी हो। जिसका अनुभव सुनकर औरों में भी उमंग आ जाए। बापदादा हर वर्ग का चाहता है। जो ग्रुप वर्ल्ड में सेवा के योग्य बन जाये। अच्छा है, दिल्ली वाले दिल्ली को राजधानी बनाना है, तो पहले तो दिल्ली में ऐसा वायुमण्डल पैदा करो। दिल्ली का आवाज तो चारों ओर सहज ही फैलता है, यह तो बात है ही। अच्छा किया है, चांस लिया है। आधा क्लास तो दिल्ली दिखाई दे रहा है। अभी नवीनता, दूसरे बारी कोई नवीनता लेके ही आना, सिर्फ दिल्ली को ही नहीं कह रहे हैं, कोई भी ज़ोन कोई नया प्लैन बनाके आये उसको बापदादा एक्स्ट्रा स्नेह शक्ति का वरदान देंगे। जो कर रहे हैं वह तो कर रहे हैं, नया कोई प्लैन हो। यह यात्रा निकालना, फार्म भराना, यह बहुत हो चुका। अभी कोई नया प्लैन बनाओ। कान्फ्रेन्स भी बहुत हो गई, प्रोग्राम भी बहुत हो गये। सोचो। दिल्ली को नम्बरवन होना चाहिए क्योंकि दिल्ली में सबकी नज़र है। और देखो ड्रामानुसार सेवा का आदि स्थान दिल्ली रहा। चाहे जमुना किनारा ही था लेकिन आरम्भ तो हुआ ना। जमुना किनारे पर राज्य करना है, तो जमुना किनारे पर ही सेवा आरम्भ की। अभी इसमें भी नम्बरवन लो। हैं, अच्छे अच्छे हैं, नया प्लैन बनाने वाले हैं, बापदादा देखते हैं, है। देख रहे हैं। तो मुबारक हो दिल्ली वालों को, लेकिन नया प्लैन लगायेंगे तो पदमगुणा मुबारक देंगे।

950 यूथ आये हैं:- अच्छा, बड़ा ग्रुप आया है। बापदादा ने समाचार तो सुना। यात्रा का प्लैन बना रहे हैं। लेकिन बापदादा यह चाहते हैं कि जो भी सब ज़ोन हैं, जहाँ तहाँ ज़ोन हैं और सारे ब्राह्मण परिवार के यूथ कितने हैं, और क्या-क्या उन्हों में परिवर्तन आया है, वह प्रैक्टिकल नाम, स्थान और परिवर्तन, उसका प्रैक्टिकल लिखत हो जो गवर्मेन्ट को दिया जाए। गवर्मेन्ट तो खुद यूथ को बुलायेगी लेकिन पहले चारों ओर के यूथ के नाम स्थान और परिवर्तन शार्ट में, लम्बा चौड़ा नहीं, परिवर्तन का बुक नाम स्थान का बुक हो, जो उन्हों को दिखाया जाए। फिर वह यूथ को आपेही निमन्त्रण देंगे। तो ऐसा प्लैन बनाओ। अभी कितने आये हैं? (950) तो थोड़े हैं ना! हजारों के करीब यूथ होंगे। उनका एक बुक बनाओ अच्छा, परिवर्तन सहित क्योंकि लोग सिर्फ यह नहीं देखते परिवर्तन क्या हुआ

और उसमें परिपक्व हैं? यह रिजल्ट चाहिए। क्योंकि गवर्मेन्ट यूथ के पीछे खर्चा भी बहुत कर रही है। परिवर्तन की कोई कमाल दिखाओ। अच्छा है, फिर भी बापदादा ने देखा है कि यूथ वर्ग कुछ न कुछ कार्य करता रहता है। अटेन्शन है सेवा का। इसलिए परिवर्तन करके दिखाओ। ट्रेनिंग की है ना! यह सब ट्रेनिंग में आये हैं ना! तो ट्रेनिंग को प्रैक्टिकल में रिजल्ट में दिखाना फिर सारा परिवार आपको मुबारक देगा। अच्छा।

डबल विदेशी:- अच्छा है डबल विदेशी स्व पर और सेवा पर अटेन्शन अच्छा दे रहे हैं। लेकिन सिर्फ इसमें एक मात्रा लगानी है। अण्डरलाइन करनी है, जो परिवर्तन का संकल्प लेते हो और अच्छा उमंग-उत्साह, हिम्मत से लेते हो, सिर्फ इसको अण्डरलाइन करते जाओ, करना ही है। बदलना ही है। बदलकर विश्व को बदलना है। यह दृढ़ता की अण्डरलाइन बार-बार करते जाओ। बाकी बापदादा खुश है, वृद्धि भी कर रहे हैं और सेवा और स्व के ऊपर अटेन्शन भी है। लेकिन पूरा टेन्शन नहीं गया है, अटेन्शन है थोड़ा बीच-बीच में टेन्शन भी है, वह समाप्त करना ही है। बाकी हिम्मत अच्छी है। हिम्मत की मुबारक है, सभी जो भी बैठे हैं बाप सहित आपके हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। ताली बजाओ। अच्छा।

आप तो यहाँ बैठे हो लेकिन बापदादा को दूर बैठे बहुत बच्चों का यादप्यार मिला है, और बापदादा एक-एक बच्चे को नयनों में समाते हुए बहुत-बहुत दिल की दुआयें दे रहे हैं। चाहे भारत से, चाहे विदेश से, बहुत बच्चों की याद आ रही है, पत्र आते हैं, ईमेल आते हैं, सब बाबा के पास पहुंच गये हैं। अच्छा।

बापदादा एक सेकण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखने चाहते हैं, अगर अन्त में पास होना है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ। कोई आकर्षण आकर्षित नहीं करे। (ड्रिल) अच्छा।

चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन की सेवा में तत्पर रहने वाले विशेष आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी, कर्म की, कर्मेन्द्रियों की आकर्षण से मुक्त आत्माओं को, सदा दृढ़ता को हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म में स्वरूप में लाने वाले बाप के समीप और समान बच्चों को बापदादा का दिल की दुआयें और दिल का यादप्यार स्वीकार हो और नमस्ते।

दादी जी से:- तन्दरूस्त हो गई। अभी बीमारी गई। बीमारियां महारथियों से विदाई लेने के लिए आती हैं। अन्दर ही अन्दर कर्मातीत बनने का रिहर्सल कर रही है। (दादी जानकी कह रही हैं दादी बेफिकर बादशाह है)

आप फिकर वाली हैं क्या? आप भी बेफिकर। दोनों ही पार्ट अच्छा बजा रही हैं। देखो, सबसे बड़े ते बड़ा जिम्मेवारी का ताज पहनने वाली निमित्त तो बनी ना। यह सब साथी हैं, पूंछ नहीं हैं। आप लोगों को देखके उमंग-उत्साह आता है ना। (अभी क्या नया करना है? बाबा ही कुछ प्रेरणा दे) बापदादा ने सुनाया कि हर वर्ग का गुलदस्ता जो माइक भी हो और माइट भी हो। सिर्फ माइक और सम्पर्क वाला नहीं, सम्बन्ध में भी नजदीक हो, ऐसा गुलदस्ता निकालो। फिर वह ग्रुप निमित्त बनेगा सेवा करने के। वह माइक बनेगा और आप माइट बनेंगी। उनके जिगर से निकले बाबा, तभी प्रभाव पड़ेगा। उन्हों को सम्बन्ध में नजदीक लाओ। कभी-कभी होता है ना, तो नशा थोड़ा कम हो जाता है। सम्बन्ध सम्पर्क में जहाँ भी आवें वहाँ सम्बन्ध और सम्पर्क रहे तो ठीक हो जायेंगे। अच्छा।

(मोहिनी बहन के घुटने का आपरेशन बहुत अच्छा हो गया है, आपको बहुत-बहुत दिल से याद दी है) उसको कहना कि बापदादा ने भी आपकी हिम्मत पर बहुत-बहुत दिल से दुआयें और यादप्यार दी है। सबका प्यार भी है। अच्छा।

''नये वर्ष में स्नेह और सहयोग की रूपरेखा स्टेज पर लाओ, हर एक को गुण और शक्तियों की गिफ्ट दो''

आज परमात्म बाप अपने चारों ओर के परमात्म प्यार के अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। यह परमात्म प्यार विश्व में कोटों में से कोई को प्राप्त होता है। यह परमात्म प्यार निःस्वार्थ प्यार है क्योंकि एक परमात्मा पिता ही निराकार, निरहंकारी है। मनुष्य आत्मा शरीर धारी होने के कारण कोई न कोई स्वार्थ में आ ही जाती है। परमात्म बाप ही अपने बच्चों को ऐसा निःस्वार्थ प्यार देते हैं। परमात्म प्यार ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है। ब्राह्मण जीवन का जीयदान है। अगर ब्राह्मण जीवन में परमात्म प्यार का अनुभव कम है, तो प्यार के बिना जीवन रमणीक नहीं, सूखा जीवन हो जाता है। परमात्म प्यार ही जीवन में सदा साथ भी देता और साथी बन सदा सहयोगी रहता। जहाँ प्यार है, साथ है वहाँ सब कुछ बहुत सहज और सरल हो जाता है। मेहनत का अनुभव नहीं होता है। ऐसा अनुभव है ना! परमात्म प्यारे कोई भी व्यक्ति वा साधनों की आकर्षण में नहीं आ सकते क्योंकि परमात्म आकर्षण, परमात्म प्यार ऐसा अनुभव कराता जो सदा प्यार के कारण लवलीन रहते हैं, जिसको लोगों ने परमात्मा में लीन होना समझ लिया। परमात्मा में लीन नहीं होता लेकिन परमात्म प्यार में लवलीन हो जाता।

बापदादा चारों ओर के बच्चों को देखते हैं - परमात्म प्यारे तो सभी बने हैं लेकिन एक हैं लवली बच्चे, दूसरे हैं लवलीन बच्चे। तो अपने आपसे पूछो लवली तो सभी हैं, लेकिन लवलीन कहाँ तक रहते हैं ? लवलीन बच्चों की निशानी है वह सदा परमात्म फरमान में सहज चलते हैं। फरमान में भी रहते और देहभान से कुर्बान भी रहते हैं क्योंकि प्यार में कुर्बान होना मुश्किल नहीं है। सबसे पहला फरमान है - योगी भव, पवित्र भव। बाप का बच्चों से प्यार होने के कारण बाप बच्चों को मेहनत करते देख नहीं सकते क्योंकि बाप जानते हैं 63 जन्म बहुत मेहनत की, अभी यह अलौकिक जन्म मेहनत से मुक्त हो अतीन्द्रिय सुख की मौज मनाने का है। तो मौज मना रहे हो कि मेहनत करनी पड़ती है ? प्यार में फरमान पर चलना मेहनत नहीं लगती। अगर मेहनत करनी पड़ती है तो प्यार की परसेन्टेज कम है। कहाँ न कहाँ प्यार में कुछ न कुछ लीकेज है। दो बातों की लीकेज मेहनत कराती है - एक पुराने संसार की आकर्षण, संसार में सम्बन्ध, पदार्थ सब आ जाता है। और दूसरा - पुराने संस्कार की आकर्षण। यह पुराना संसार और पुराने संस्कार अपने तरफ आकर्षित कर देते हैं। तो परमात्म प्यार में परसेन्टेज हो जाती है। चेक करो - इन दोनों लीकेज से मुक्त हैं ? याद करो आप आत्मा के अनादि संस्कार और आदि संस्कार क्या थे और अभी अन्त के ब्राह्मण जीवन के संस्कार क्या हैं ? अनादि भी हैं, आदि भी हैं और अन्त में भी श्रेष्ठ संस्कार हैं। यह पुराने संस्कार मध्य के हैं, न अनादि हैं, न आदि हैं, न अन्त के हैं। लेकिन लक्ष्य क्या है सभी का ? किसी भी बच्चे से पूछो तो एक ही उत्तर देते हैं लक्ष्य है बाप समान बनने का। यही है ना! है तो हाथ उठाओ। यही लक्ष्य है पक्का ? या बीच-बीच में बदली हो जाती है ?

तो बाप बच्चों से पूछते हैं कि बाप और दादा दोनों के समान संस्कार कौन से हैं ? सदा बाप हर आत्मा के प्रति उदारचित रहे हैं। हर आत्मा के प्रति स्नेह और सम्मान स्वरूप में सहयोगी रहे हैं। ऐसे स्वयं भी अपने को हर आत्मा के प्रति सहयोगी अनुभव करते हो ? सहयोग दे तो सहयोगी बनें, नहीं। स्नेह दे तो स्नेही बनें, नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप हर बच्चे के प्रति सहयोगी बनें, स्नेही बनें, ऐसे सर्व के सदा स्नेही और सहयोगी। इसको कहा जाता है समान बनना। अगर कोई भी बच्चे को मेहनत करनी पड़ती है, संस्कार परिवर्तन करने में, उसका कारण क्या है ? ब्रह्मा बाप ने अपने ऊपर अटेन्शन रखा लेकिन मेहनत नहीं की, **संस्कार परिवर्तन में मेहनत का कारण है - लवली बने हैं, लवलीन नहीं बने हैं।**

बापदादा तो हर बच्चे को लवली बच्चे समझते हैं, जानते भी हैं, जन्मपत्री हर एक की जानते हैं फिर भी क्या कहेंगे ? लवली हैं। बापदादा हर बच्चे को एक ही पढ़ाई, एक ही पालना, एक ही वरदान सदा देते हैं। चाहे लास्ट नम्बर भी जानते हैं फिर भी बापदादा किसी भी बच्चे का अवगुण, कमजोरी संकल्प में भी नहीं रखते। लाडला है, सिकीलधा है, मीठा-मीठा है.... इसी दृष्टि और वृत्ति से देखते क्योंकि बापदादा जानते हैं इसी वृत्ति और श्रेष्ठ दृष्टि से कमजोर महावीर बन जायेगा। ऐसे ही अपने श्रेष्ठ वृत्ति और शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी का भी परिवर्तन कर सकते हो। जब आपने चैलेन्ज किया है कि प्रकृति को भी परिवर्तन करके दिखायेंगे तो क्या आत्माओं का परिवर्तन नहीं कर सकते! प्रकृतिजीत बनते हो तो आत्मा, आत्मा की श्रेष्ठ भावना से, कल्याण की कामना से परिवर्तन नहीं कर सकते हो!

अभी नया वर्ष शुरू होने वाला है ना - तो नये वर्ष में सर्व बेहद के ब्राह्मण परिवार के बीच एक दो के प्रति अपने शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना द्वारा हरेक एक दो के परिवर्तन करने में सहयोगी बनो, चाहे कमजोर है, जानते हो इसके संस्कार में यह कमजोरी है लेकिन आप स्नेह और सहयोग की शक्ति द्वारा सहयोगी बनो। एक दो को सहयोग का हाथ मिलाओ। इस सहयोग के हाथ मिलाने का दृश्य ऐसा बन जायेगा जैसे हाथ में हाथ स्नेह का मिलाना, सहयोग का मिलाना, माला बन जाये। शिक्षा नहीं दो, स्नेह भरा सहयोग दो। न्यारा नहीं बनो, किनारा नहीं करो, सहारा बनो क्योंकि आपका यादगार विजयमाला है। हर एक मणका, मणके के साथी सहयोगी है तब माला का चित्र बना है।

तो सभी बापदादा से पूछते हैं नये साल में क्या करना है ? सन्देश देने का कार्य तो बहुत किया, कर रहे हैं, करते रहेंगे। अब सन्देश-वाहकों के सहयोग और स्नेह की रूपरेखा स्टेज पर लाओ। महादानी बनो, अपने गुणों का सहयोगी बनो, बनाओ। ऐसे अपने गुणों का, हैं तो परमात्म गुण लेकिन जो अपने में बनाया है, उस गुण की शक्ति से उन्हों की कमजोरी दूर करो। यह कर सकते हैं ? कर सकते हैं या मुश्किल है ? टीचर्स बताओ, कर सकते हैं ? कर सकते हैं या करना ही है ? करना ही है ? कोई कमजोर नहीं रहे, क्योंकि कोटों में कोई है ना! चाहे लास्ट दाना भी है, है तो कोटों में कोई। आपका टाइटिल ही है - मास्टर सर्वशक्तिवान। तो सर्वशक्तिवान का कर्तव्य क्या है ? शक्ति की लेन-देन करना। बाप द्वारा मिला हुआ गुण आपस में लेन-देन करो। यही सहयोग की गिफ्ट एक दो में दो। नये वर्ष में एक दो को गिफ्ट देते हैं ना! तो इस वर्ष में एक दो में गुणों की गिफ्ट दो। अगर कल्याण की भावना रखेंगे तो जैसे भाषण करके सन्देश देते हो ना, वाणी द्वारा वैसे अपने कल्याण की भावना द्वारा, कल्याण की वृत्ति द्वारा, कल्याण के वायुमण्डल द्वारा यह गुणों की गिफ्ट दो, शक्तियों की गिफ्ट दो। कमजोर को सहयोग देना, यह समय पर गिफ्ट देना है, गिरे हुए को गिराओ नहीं, चढ़ाओ, ऊंचा चढ़ाओ। यह ऐसा है, यह ऐसा है..., नहीं। यह प्रभु प्यार के पात्र है, कोटों में कोई आत्मा है, विशेष आत्मा है, विजयी बनने वाली आत्मा है, यह दृष्टि रखो। अभी वृत्ति, दृष्टि, वायुमण्डल चेंज करो। कुछ नवीनता करनी चाहिए ना! कमजोरी देखते, देखो नहीं, उमंग दो, सहयोग दो। ऐसा ब्राह्मण संगठन तैयार करो तो बापदादा विजय की ताली बजायेगा। आप भी बार-बार तालिया बजाते हो ना, बापदादा मुबारक हो, बधाई हो, ग्रीटिंग्स हो, उसकी तालियां बजायेगा। आप भी साथ में ताली बजायेंगे ना। अभी ताली बजाई तो अच्छा किया लेकिन विश्व के आगे ताली बजे। सबके मुख से यह आवाज निकले, हमारे ईष्ट आ गये। हमारे पूज्य आ गये। लक्ष्य पक्का है ना! पक्का है लक्ष्य, करना ही है ? या देखेंगे, प्लैन बनायेंगे! करना ही है, प्लैन क्या, करना ही है। अभी सभी इन्तजार कर रहे हैं, अभी इन्हों का इन्तजार समाप्त करो। प्रत्यक्ष होने का इन्तजाम करो। देखो प्रकृति भी अभी कितनी तंग हो रही है। तो प्रकृति को भी शान्त बना दो। आप प्रत्यक्ष हो जायेंगे तो विश्व शान्ति स्वतः हो जायेगी। अच्छा।

इस बारी भी नये-नये बच्चे बहुत आये हैं। अच्छा है। बापदादा खुश होते हैं कि जो भी कोने-कोने में छिपे हुए कल्प पहले वाले बच्चे हैं, वह पहुंच रहे हैं। अभी पीछे आने वाले भी ऐसा लक्ष्य रखो समय कम है इसलिए तीव्र पुरुषार्थ द्वारा नम्बर आगे ले सकते हो। अभी भी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है। इसलिए जितना पुरुषार्थ करने चाहो

उतना आगे बढ़ सकते हो। तो पहले बारी आने वाले हाथ उठाओ। अच्छा। सभी ने, जिन्होंने भी हाथ उठाया है, तीव्र पुरुषार्थ करना है ना! अभी ढीले पुरुषार्थ का समय गया, चलने का गया, अभी उड़ने का समय है। तो डबल लाइट बनके उड़ो। जो भी बनने चाहो, बन सकते हो। उल्हना नहीं देना - बाबा हमको पीछे बुलाया, अभी भी डबल लाइट बनके उड़ सकते हो। इतना उमंग है ? जिन्होंने हाथ उठाया, इतना उमंग है ? जिसको इतना उमंग है, आगे जाकर ही दिखाना है वह हाथ उठाओ। बापदादा तो इनएडवांस मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

गुजरात की ही सेवा है, गुजरात वाले ही मिलन मनाने आये हैं:– गुजरात वाले जो भी हैं, चाहे आये हैं, चाहे सेवा में आये हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत हैं, बहुत अच्छा। अच्छा चांस लिया है। गुजरात को बापदादा कहते हैं, सिन्धी में कहावत है जो चुल पर वह दिल पर। तो सबसे नजदीक में नजदीक गुजरात है। जो नजदीक होता है ना, उसको कहा जाता है शडपंथ पर है, बुलाओ और पहुंच जाये। तो ऐसे एवररेडी है ना गुजरात, कभी भी बुलायें आ जाओ, तो आ जायेंगे ? ऐसे है ? परिवार को नहीं देखेंगे क्या करेंगे, आ जायेंगे ? एवररेडी हैं। अच्छा है गुजरात, साकार ब्रह्मा के प्रेरणा से स्थापन हुआ है। गुजरात ने गुजरात को निमन्त्रण नहीं दिया, ब्रह्मा बाप ने गुजरात को खोला है। तो गुजरात के ऊपर विशेष ब्रह्मा बाप की नज़र पड़ी हुई है। और गुजरात ने पुरुषार्थ भी किया है, सेन्टर अच्छे खुले हैं। कितने सेन्टर हैं ? 300 सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र हैं और 3 हजार गीता पाठशालाये हैं। अच्छा सबसे ज्यादा सेन्टर किस ज़ोन के हैं ? (बम्बई-महाराष्ट्र) अच्छा - महाराष्ट्र वाले आये हैं ? (आज नहीं आये हैं) सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में हैं। गुजरात सेवा तो अच्छी कर रहे हैं, गुजरात का विस्तार तो अच्छा है। अभी क्या करना है ? विस्तार तो है, विस्तार तो अच्छा किया है, अभी गुजरात वाले नम्बरवन वारिस तैयार करें। कम से कम जो बड़े सेवाकेन्द्र हैं, जो पुराने वारिस हैं, वह तो हैं ही लेकिन नया कोई वारिस निकालो। चलो एक एक तो निकालो, क्योंकि माला में मणके वही बनेंगे जो वारिस क्वालिटी होंगे। तो माला तो तैयार करना है ना! 16108 की भी माला बनी हुई है। अभी अगर बापदादा बोले 108 की माला बनाओ, तो बना सकते हो ? बन सकती है ? दादियां बतावें, 108 की माला बन सकती है ? (दादी जी ने कहा बन सकती है।) तैयार हैं ? 108 की माला तैयार हो गई है ? (हाँ बाबा तैयार है) अच्छा लिखकर दिखाना। तैयार है तो बहुत अच्छा, मुबारक है। अच्छा 16 हजार की, आधे तक बनी है ? (आधा तो क्या उनसे भी ज्यादा बनी है) अच्छा है ना। देखो गुप्त रूप में बनी है और आपकी दादी ने देख ली है। अच्छा है। अभी आपसे सभी पूछेंगे कि मेरा माला में नाम है ? अच्छा है। ऐसी शुभ भावना, शुभ उम्मीदें तैयार ही कर लेती हैं। अभी सभी ने सुना ना, अपने को चेक करना मैं उस माला में एवररेडी हूँ ? अच्छा। और क्या करना है ?

कैड ग्रुप:– अच्छा है, यह भी आवाज फैलाने का साधन बहुत अच्छा है क्योंकि प्रैक्टिकल सबूत देखते हैं ना और बिना खर्चे के मेडीटेशन द्वारा ठीक हो जाना, तो सबको बहुत अच्छा लगता है अभी धीरे-धीरे इसकी वृद्धि करते जाओ। सुना है, कर रहे हैं और सफलता भी मिल रही है और भी मिलती रहेगी बाकी बापदादा इस कार्य के लिए निमित्त बनने वालों को मुबारक दे रहे हैं। आफीशियल गवर्मेन्ट तक पहुंच रही है और भी फैलाते रहेंगे तो मेडीटेशन का महत्व बढ़ता जायेगा। बाकी बापदादा को यह विधि पसन्द है। अच्छा।

डबल विदेशी:- डबल विदेशी तो सदा डबल पुरूषार्थ करते होंगे ना! पुराना संसार और पुराने संस्कार का नामनिशान नहीं रहे, यह है डबल पुरुषार्थ। तो ऐसा डबल पुरुषार्थ चल रहा है ? चलता है ? कांध तो हिलाओ। जिसका अटेन्शन है इस डबल पुरुषार्थ पर वह हाथ उठाओ। अच्छा-फिर तो प्रत्यक्षता विदेश से होगी। डबल पुरुषार्थ करने वालों की विजय प्रत्यक्ष हो जायेगी। बापदादा को खुशी है कि डबल फारेनर्स सेवा और पुरुषार्थ दोनों तरफ अटेन्शन दे आगे बढ़ रहे हैं। बढ़ रहे हैं इसकी मुबारक है लेकिन आगे इस अटेन्शन में और भी तीव्रता लाओ। जिस भी सेन्टर पर जायें वहाँ ऐसा अनुभव हो जैसे मधुबन का वायुमण्डल। अब हर एक स्थान ऐसे वायुमण्डल का अनुभव करावे। जैसे मधुबन में कोई भी आता है, प्रभावित होकर ही जाता है किसी भी बात में, ऐसे कोई भी आत्मा आवे, किसी न

किसी बात में ऐसे प्रभावित होके जाये जो बार-बार आता ही रहे। आगे बढ़ता रहे। बाकी अटेन्शन है, पुरुषार्थ भी है, लक्ष्य भी है अब प्रैक्टिकल ऐसा प्रभावित हो जो कोई भी आने के बिना, बनने के बिना रह नहीं सके। अच्छा है, हर टर्न में विदेशी आते हैं, इससे भी मधुबन अच्छा सुन्दर लगता है। इन्टरनेशनल हो जाता है ना! विजयी हैं और विजय का तिलक सदा अपने मस्तक पर प्रत्यक्ष दिखाई दे यह और थोड़ा विजय का तिलक स्पष्ट करो। जो भी देखे विजय का चमकता हुआ तिलक दिखाई दे। कितने बार विजयी बने हैं ? अनेक बार बने हैं, अभी भी बने हैं, फिर भी बनते रहेंगे। तो दोनों बातों में विजयी भव का वरदान चलन और चेहरे से दिखाई दे। निश्चय और नशा तो है ही! हम नहीं विजयी बनेंगे तो कौन बनेगा, यह नशा है ना! निश्चय भी है, नशा भी है। अभी एक दो के सहयोगी बन विजय का झण्डा विश्व के आगे लहराओ। क्योंकि डबल विदेशियों के संस्कार हैं जो करना है वह पूरा करना है, अधूरा नहीं। तो इसमें भी सम्पन्न बनना ही है। ठीक है। पक्का है ना! कच्चा तो नहीं ना! अच्छा।

आजकल विश्व में दो बातें विशेष चलती हैं - एक एक्सरसाइज़ और दूसरा भोजन के ऊपर अटेन्शन। तो आप भी यह दोनों बातें करते हो ? आपकी एक्सरसाइज कौन सी है ? शारीरिक एक्सरसाइज तो सब करते हैं लेकिन मन की एक्सरसाइज अभी-अभी ब्राह्मण, ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह मन्सा ड्रिल का अभ्यास सदा करते रहो। और शुद्ध भोजन, मन का शुद्ध संकल्प। अगर व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प चलता है तो यह मन का अशुद्ध भोजन है। तो मन में सदा शुद्ध संकल्प रहे, दोनों करना आता है ना! जितना समय चाहो उतना समय शुद्ध संकल्प स्वरूप बन जाओ। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म प्यार के अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा एक दो के सहयोगी बनने वाले बाप के स्नेही और सहयोगी आत्माओं को, सदा विजयी है और विजय का झण्डा विश्व में फैलाना है, इस लक्ष्य को प्रैक्टिकल में लाने वाले विजयी बच्चों को, सदा इस पुराने संसार और संस्कार के आकर्षण से परे रहने वाले बाप समान बच्चों को दिलाराम बाप का दिल से यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- (**दादी जी से**) अच्छी खुशखबरी सुनाई। (मोहिनी बहन से) अच्छा है, मुक्त होकर आ गई। सहज हो गया ना! सब ब्राह्मणों की दुआयें भी थी। सूली से कांटा करके आ गई। बापदादा खुश है, आपकी मन्सा शक्ति का प्रमाण अच्छा है।

दादी जी से- बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। आपको देखकर सभी को फरिश्ता लाइफ याद आती है। न्यारा और प्यारा।

गुजरात की मुख्य 13 बहिनों से:- अच्छे-अच्छे महावीर हैं। महावीरों का काम है विजयी बन विजयी बनाना। तो सभी अच्छी सेवा कर रहे हैं और आगे भी सेवा होती रहेगी। बापदादा बच्चों के उमंग-उत्साह को देख खुश होते हैं। अच्छा गुजरात में फैला रहे हो। और भी आगे फैलाते रहेंगे। बापदादा को सभी बच्चे आशाओं के दीपक लग रहे हैं। अच्छा है। संगठन भी अच्छा है। एक-एक की विशेषता है। अच्छा। खुश, खुशी बांटने वाले। (सरला दीदी पूछ रही हैं, दादी ने माला में किसको रखा है) आप क्या समझती हो ? हम तो होंगे ही ना, ऐसे समझती हो। थोड़ा बहुत एक दो को सहयोग दे और जो कुछ भी रहा हुआ है, वह खत्म हो जायेगा। सब बाप समान बनने वाले ही हैं। (नवीनता क्या करें) सुनाया ना - एक एक सेन्टर कम से कम एक वारिस तो तैयार करे। तो इस वर्ष वह लेकर आना, 21 वारिस तो लेके आना। यह शुरू करो। पहला नम्बर आओ। सभी हाँ कर रहे हैं। वारिस की क्वालिफिकेशन जानते हैं ना। यह सब बाबा के ही बनायेंगे ना, अपना तो बनायेंगी नहीं। अच्छा।

''नये वर्ष में अपने पुराने संस्कारों को योग अग्नि में भस्म कर ब्रह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा में नम्बरवन बनो''

आज बापदादा चारों ओर के चाहे सम्मुख हैं, चाहे दूर बैठे दिल के समीप हैं, सर्व को तीन मुबारक दे रहे हैं। एक नव जीवन की मुबारक है, दूसरी नव युग की मुबारक है और तीसरी आज के दिन वर्ष की मुबारक है। आप सभी भी नये वर्ष की मुबारक देने और मुबारक लेने आये हो। वास्तव में सच्ची दिल के खुशी की मुबारकें आप ब्राह्मण आत्मायें लेते भी हो, देते भी हो। आज के दिन का महत्व है। विदाई भी है और बधाई भी है। विदाई और बधाई का संगमयुग है। आज के दिन को कहेंगे संगम का दिन है। संगम की महिमा बहुत बड़ी है। आप सभी जानते हो कि संगमयुग की महिमा के कारण आजकल पुराने और नये वर्ष के संगम को कितना धूमधाम से मनाते हैं। संगमयुग की महिमा के कारण ही इस पुराने नये वर्ष के संगम की महिमा है। जहाँ दो नदियां मिलती हैं, संगम होता है, उनकी भी महिमा है। जहाँ नदी सागर का संगम होता है उसकी भी महिमा है। लेकिन सबसे बड़ी महिमा इस संगमयुग की है, पुरुषोत्तम युग की है, जहाँ आप ब्राह्मण भाग्यवान आत्मायें बैठे हो। यह नशा है ना! अगर आपसे कोई पूछे आप किस समय पर हो ? क्या कलियुग में रहते हो, सतयुग में रहते हो ? तो क्या फलक से कहेंगे ? हम इस समय पुरुषोत्तम संगमयुग में रहते हैं। आप कलियुगी नहीं हो, संगमयुगी हो। और इस संगमयुग की विशेष महिमा क्यों है ? क्योंकि भगवान और बच्चों का मिलन होता है, मेला होता है, मिलन होता है, जो किसी भी युग में नहीं होता। तो मेला मनाने आये हो ना! आप कहाँ-कहाँ से आये हो मिलन मेला मनाने के लिए। कभी स्वप्न में भी सोचा था कि ड्रामा में मुझ आत्मा का ऐसा भी भाग्य नूंधा हुआ है। था और है - आत्मा का परमात्मा से मिलने का। बाप भी हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित होते हैं। वाह! भाग्यवान बच्चे वाह! अपने भाग्य को देख दिल में अपने प्रति वाह! मैं वाह! वाह! मेरा भाग्य वाह! वाह! मेरा बाबा वाह! वाह! मेरा ब्राह्मण परिवार वाह! यह वाह, वाह के गीत ऑटोमेटिक दिल में गाते रहते हो ना!

तो आज इस संगम के समय अपने अन्दर सोच लिया है कि किस-किस बातों को विदाई देनी है ? सोचा है सभी ने ? सदाकाल के लिए विदाई देनी है क्योंकि सदाकाल के लिए विदाई देने से सदाकाल की बधाईयां मना सकेंगे। ऐसी बधाई दो जो आपके चेहरे को देख जो भी आत्मा सामने आये वह भी बधाईयां प्राप्त कर खुश हो जाए। जो दिल से बधाई देते हैं वा लेते हैं वह सदा ही कैसे दिखाई देते हैं ? संगमयुगी फरिश्ता। सभी का यही पुरुषार्थ है ना - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता! क्योंकि बाप को सब प्रकार के संकल्प वा जो भी कुछ प्रवृत्ति का, कर्म का बोझ है वह दे दिया है ना! बोझ दिया है या थोड़ा सा रह गया है ? क्योंकि थोड़ा भी बोझ फरिश्ता बनने नहीं देगा और जब बाप आये हैं बच्चों का बोझ लेने के लिए तो बोझ देना मुश्किल है क्या! मुश्किल है या सहज है ? जो समझते हैं बोझ दे दिया है वह हाथ उठाओ। दे दिया है ? देखना सोच के हाथ उठाना। बोझ दे दिया है ? अच्छा। दे दिया है ? मुबारक हो। दे दिया है तो बहुत मुबारक हो। और जिन्होंने नहीं दिया है वह किसलिए रखा है ? बोझ से प्रीत है क्या ? बोझ अच्छा लगता है ? देखो बापदादा हर बच्चे को क्या कहते हैं ? ओ मेरे बेफिकर बादशाह बच्चे। तो बोझ का फिकर होता है ना! तो बोझ लेने के लिए बाप आये हैं क्योंकि 63 जन्म से बाप देख रहे हैं बोझ उठाते-उठाते सभी बच्चे बहुत भारी हो गये हैं। इसलिए जब बाप बच्चों को प्यार से कह रहे हैं बोझ दे दो। फिर भी क्यों रख लिया है ? अच्छा लगता है बोझ ? सबसे सूक्ष्म बोझ है पुराने संस्कार का। बापदादा ने हर बच्चे के इस वर्ष का, क्योंकि वर्ष पूरा हो रहा है ना, तो इस वर्ष का चार्ट देखा। आप सबने भी अपना-अपना वर्ष का चार्ट चेक किया होगा ? तो बापदादा ने क्या देखा कि कई बच्चों को इस पुराने संसार की आकर्षण कम हुई है ? पुराने सम्बन्ध की भी आकर्षण कम हुई है लेकिन पुराने संस्कार, उसका बोझ मैजारिटी में रहा हुआ है। किसी न किसी रूप में चाहे मन्सा

अशुद्ध संकल्प नहीं लेकिन व्यर्थ संकल्प का संस्कार अभी भी परसेन्ट में दिखाई देता है। वाचा में भी दिखाई देता है। सम्बन्ध-सम्पर्क में भी कोई न कोई संस्कार अभी भी दिखाई देता है।

तो आज बापदादा सभी बच्चों को मुबारक के साथ-साथ यही इशारा देते हैं कि यह रहा हुआ संस्कार समय पर धोखा देता भी है और अन्त में भी धोखा देने के निमित्त बन जायेगा। इसीलिए आज संस्कार का संस्कार करो। हर एक अपने संस्कार को जानता भी है, छोड़ने चाहता भी है, तंग भी है, लेकिन सदा के लिए परिवर्तन करने में तीव्र पुरुषार्थी नहीं हैं। पुरुषार्थ करते हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी नहीं हैं। कारण ? तीव्र पुरुषार्थ क्यों नहीं होता ? कारण यही है, जैसे रावण को मारा भी लेकिन सिर्फ मारा नहीं, जलाया भी। ऐसे मारने के लिए पुरुषार्थ करते हैं, थोड़ा बेहोश भी होता है संस्कार, लेकिन जलाया नहीं तो बेहोशी से बीच-बीच में उठ जाता है। इसके लिए **पुराने संस्कार का संस्कार करने के लिए इस नये वर्ष में योग अग्नि से जलाने का दृढ़ संकल्प का अटेन्शन रखो।** कहते हैं ना क्या करना है इस नये वर्ष में ? सेवा की तो बात अलग है लेकिन पहले स्वयं की बात है - योग लगाते हो, बापदादा बच्चों को योग में अभ्यास करते हुए देखते हैं। अमृतवेले भी बहुत पुरुषार्थ करते हैं लेकिन योग तपस्या, तप के रूप में नहीं करते हैं। प्यार से याद जरूर करते हैं, रूहरिहान भी बहुत करते हैं, शक्ति भी लेने का अभ्यास करते हैं लेकिन याद को इतना पावरफुल नहीं बनाया, जो जो संकल्प करो विदाई, तो विदाई हो जाए। योग को योग अग्नि के रूप में कार्य में नहीं लगाते। इसलिए योग को पावरफुल बनाओ। एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक है। जिस स्वरूप में एकाग्र होने चाहो, जितना समय एकाग्र होने चाहो, ऐसी एकाग्रता संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग अग्नि। नामनिशान समाप्त। मारने में फिर भी लाश तो रहता है ना! भस्म होने के बाद नामनिशान खत्म। तो इस वर्ष योग को पावरफुल स्टेज में लाओ। जिस स्वरूप में रहने चाहो मास्टर सर्वशक्तिवान, आर्डर करो, समाप्त करने की शक्ति आपके आर्डर से नहीं माने, यह हो नहीं सकता। मालिक हो। मास्टर कहलाते हो ना! तो मास्टर आर्डर करे और शक्ति हाजिर नहीं हो तो क्या वह मास्टर है ? तो बापदादा ने देखा कि पुराने संस्कार का कुछ न कुछ अंश अभी भी रहा हुआ है और वह अंश बीच-बीच में वंश भी पैदा कर देता है, जो कर्म तक भी काम हो जाता है। युद्ध करनी पड़ती है। तो बापदादा को बच्चों का समय प्रमाण युद्ध का स्वरूप भाता नहीं है। बापदादा हर बच्चे को मालिक के रूप में देखने चाहता। आर्डर करो जी हजूर।

तो सुना इस वर्ष स्व के प्रति क्या करना है ? शक्तिशाली, बेफिकर बादशाह क्योंकि सभी का लक्ष्य है, किसी से भी पूछो तो क्या कहते हैं ? हम विश्व का राज्य प्राप्त करेंगे, राज्य अधिकारी बनेंगे। अपने को राजयोगी कहलाते हैं। प्रजायोगी है क्या ? कोई है सारी सभा में जो प्रजायोगी हो ? है ? जो प्रजा योगी हो राजयोगी नहीं हो। टीचर्स कोई है ? आपके सेन्टर पर कोई प्रजायोगी है ? कहलाते तो सब राजयोगी हैं। हाथ कोई नहीं उठाता प्रजा योगी में। अच्छा नहीं लगता ना! और बाप को भी फखुर है। बापदादा फखुर से कहते हैं कि संगम पर भी हर बच्चा राजा बच्चा है। कोई बाप ऐसे फलक से नहीं कह सकता कि मेरा एक-एक बच्चा राजा है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि हर एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा है। प्रजायोगी में तो हाथ नहीं उठाया ना, तो राजा हो ना! लेकिन ऐसा ढीलाढाला राजा नहीं बनना जो आर्डर करो और आवे नहीं। कमजोर राजा नहीं बनना। पीछे वाले कौन हो ? जो समझते हैं राजयोगी हैं वह हाथ उठाओ। ऊपर भी बैठे हैं, (गैलरी में, आज हॉल में 18 हजार भाई-बहनें बैठे हैं) बापदादा देख रहे हैं, हाथ उठाओ ऊपर वाले। तो अभी यह लास्ट टर्न में शुरू हो जायेगा। तो तीन मास बापदादा देते हैं, ठीक है देवें। होमवर्क देंगे। क्योंकि यह बीच-बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा। तो तीन मास में हर एक अपना चार्ट चेक करना तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान होकर किसी भी कर्मेन्द्रिय को, किसी भी शक्ति को जब आर्डर करें, जो आर्डर करें वह प्रैक्टिकल में आर्डर माना या नहीं माना ? कर सकते हो ? पहली लाइन वाले कर सकते हो ? हाथ उठाओ। अच्छा। तीन मास कोई भी पुराना संस्कार वार नहीं करे। अलबेले नहीं बनना, रॉयल अलबेलापन

नहीं लाना, हो जायेगा। बापदादा से बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं, कहते हैं बाबा आप फिकर नहीं करो, हो जाऊंगा। बापदादा क्या करेगा ? सुनकर मुस्कुरा देता है। लेकिन बापदादा इन तीन मास में अगर ऐसी बात की तो मानेगा नहीं। मंजूर है। हाथ उठाओ। दिल से हाथ उठाना, सभा के कारण हाथ नहीं उठाना। करना ही है, चाहे कुछ भी सहन करना पड़े, कुछ छोड़ना पड़े, कोई हर्जा नहीं। करना ही है। पक्का ? पक्का ? पक्का ? टीचर्स करना है ? अच्छा, यह ताज वाले बच्चे क्या करेंगे ? ताज तो अच्छा पहन लिया है ? करना पड़ेगा। अच्छा। देखना बच्चे हाथ उठा रहे हैं। अगर नहीं करेंगे तो क्या करें ? वह भी बता दो। फिर बापदादा की सीजन में एक बार आने नहीं देंगे क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इन्तजार कर रहा है। आप समय का इन्तजार करने वाले नहीं हो, आप इन्तजाम करने वाले हो, समय आपका इन्तजार कर रहा है। प्रकृति भी, सतोप्रधान प्रकृति आपका आह्वान कर रही है। तो तीन मास में अपनी शक्तिशाली स्टेज में रहे हुए संस्कार को परिवर्तन करना। अगर तीन मास अटेन्शन रखा ना तो उसका आगे भी अभ्यास हो जायेगा। एक बारी विधि आ गई ना परिवर्तन की तो काम में आयेगा बहुत। समय का आप इन्तजार नहीं करो, कब विनाश होगा, कब विनाश होगा, सब रूहरिहान में पूछते हैं, बाहर से नहीं बोलते लेकिन अन्दर बात करते हैं पता नहीं कब विनाश होगा, दो साल में होगा 10 साल में होगा, कितना साल में होगा ? आप क्यों समय का इन्तजार करो, समय आपका इन्तजार कर रहा है। बाप से पूछते हैं तारीख बता दो, थोड़ा सा वर्ष बता दो, 10 वर्ष लगेंगे, 20 वर्ष लगेंगे, कितना वर्ष लगेंगे ?

बापदादा बच्चों से प्रश्न पूछते हैं कि आप सब बाप समान बन गये हो ? पर्दा खोलें कि पर्दा खोलेंगे तो कोई कंघी कर रहा है, कोई फेस को क्रीम लगा रहा है, अगर एवररेडी हो, संस्कार समाप्त हो गये तो बापदादा को पर्दा खोलने में क्या देरी लगेगी। एवररेडी तो हो जाओ ना! हो जायेंगे, हो जायेंगे कहके बाप को बहुत समय खुश किया है। अभी ऐसा नहीं करना। होना ही है, करना ही है। बाप समान बनना है इसमें तो सभी हाथ उठा देते हैं, उठाने की जरूरत नहीं। ब्रह्मा बाप ने देखो साकार में तो ब्रह्मा बाप को फालो करना है ना! ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल दिखाया। अपनी ड्युटी शिव बाप द्वारा महावाक्य उच्चारण की ड्युटी लास्ट दिन तक निभाई। याद है ना ? लास्ट मुरली। तीन शब्द का वरदान, याद है ? जिसको याद है वह हाथ उठाओ। अच्छा सभी को याद है, मुबारक हो। त्याग भी लास्ट दिन तक किया, अपना पुराना कमरा नहीं छोड़ा। बच्चों ने कितना प्यार से ब्रह्मा बाप को कहा लेकिन बच्चों के लिए बनाया, स्वयं नहीं यूज़ किया। और सदा अढ़ाई तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत अव्यक्त बने, फरिश्ता बने। जो सोचा वह करके दिखाया। कहना, सोचना और करना तीनों समान। फालो फादर। लास्ट तक अपने कर्तव्य में पूर्ण रहे, पत्र भी लिखे, कितने पत्र लिखे ? सेवा भी नहीं छोड़ी। फॉलो फादर। अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड महादानी का प्रैक्टिकल रूप दिखाया, अन्त तक। लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे। अभी बच्चे तो आधार लेते हैं ना, बैठने का। लेकिन ब्रह्मा बाप ने आदि से अन्त तक तपस्वी रूप रखा। आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है। निराधार। शरीर पुराना है, दिनप्रतिदिन प्रकृति हवा पानी दूषित हो रहा है इसलिए बापदादा आपको कहते नहीं हैं, क्यों आधार लेते हो, क्यों चश्मा पहनते हो, पहनो भले पहनो, लेकिन शक्तिशाली स्थिति जरूर बनाओ। सारी विश्व का कार्य समाप्त किया है ? बापदादा आपसे प्रश्न पूछता है, आप सभी सन्तुष्ट हो कि विश्व कल्याण का कार्य पूरा हो गया है ? है, जो समझते हैं कि विश्व कल्याण का कार्य समाप्त हो गया है, वह हाथ उठाओ। एक भी नहीं ? तो कैसे कहते हो विनाश होगा ? काम तो पूरा किया नहीं।

सभी पूछते हैं नये वर्ष में क्या करें ? क्वेश्चन है। बापदादा कहते हैं सन्देश देने के मेगा प्रोग्राम तो बहुत किये हैं, बापदादा मुबारक देते हैं, किया है अच्छा किया है लेकिन सन्देश दिया है, अनुभव नहीं कराया है। इसके लिए जैसे अभी जहाँ तहाँ एक दो को उमंग उत्साह दिलाते या उमंग-उत्साह देखकरके भी उमंग उत्साह से किया है, रिजल्ट

भी अच्छी है लेकिन अब ऐसा प्लैन बनाओ जिसमें रॉयल प्रजा तो बन जाये। रॉयल प्रजा अर्थात् नजदीक कनेक्शन में आने वाले। सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं, पहले तो 9 लाख तैयार करो, अभी 9 लाख हो गये हैं ? हुए हैं ? 9 लाख हुए हैं ? कौन लिस्ट निकालता है ? (लिस्ट अभी आयेगी, पिछले साल की 8 लाख 12 हजार है) लेकिन 9 लाख अगर तैयार हुए हैं तो किस प्रकार के तैयार हुए हैं, क्या नजदीक रॉयल प्रजा के योग्य हैं ? यह भी तो चेक करना पड़ेगा ना। अच्छा, अभी पोतामेल निकालना। एक तो 9 लाख पहले जन्म की प्रजा, रॉयल फैमिली तो चाहिए ना। अगर विनाश कल कर दें तो रॉयल प्रजा तैयार है ? है तैयार ? कि तैयार करना पड़ेगा ? ऐसे मिलायेंगे तो मिल भी जायेंगे 9 लाख, लेकिन क्वालिटी भी चाहिए, संबंध सम्पर्क वाले मिलायेंगे तो 9 लाख हो जायेगा। लेकिन बापदादा कहते हैं पहले जन्म वाली प्रजा तो अच्छे नम्बर वाली होगी ना। क्योंकि उन्हों को भी सब वन वन नम्बर मिलना है, वन नम्बर तारीख वन होगी, संवत वन होगा, राजाई वन होगी, तो ऐसी क्वालिटी पहले यह चेक करो 9 लाख तैयार हैं ? रॉयल प्रजा तैयार है ? रॉयल फैमिली तो तैयार होनी चाहिए। है भी, थोड़ा सिर्फ इस वर्ष में संस्कार को खत्म करना। बापदादा का यह संकल्प है कि हर सेन्टर इस योग अभ्यास का आफीशल प्रोग्राम अपने अपने सेन्टर में रखे और लक्ष्य रखे एक ही तारीख पर देश विदेश का समय मिलाकर अखबार में निकले कि ब्रह्माकुमारियों के इतने सेन्टर्स में एक ही समय यह प्रोग्राम होना है। और एम रखो सिर्फ कामेन्ट्री से योग नहीं कराओ, अनुभव कराओ। अनुभव पक्का बनाती है। एक ही समय पर हर सेन्टर पर एक ही प्रोग्राम हो। और हर एक सेन्टर अनुभव क्या किया, वह रिजल्ट लिखे। चाहे 3 दिन का प्रोग्राम कराओ चाहे एक दिन का कराओ लेकिन इक्ट्ठा चारों ओर जैसे थर्ड सण्डे सभी जगह रखते हो ना, अभी अनुभव कराने का प्रोग्राम चारों ओर एक समय लक्ष्य एक हो, लक्ष्य एक समय एक और चारों ओर हो। तो देश वाले भी समझेंगे कि यह विश्व में पीस के लिए इतना इक्ट्ठा एक समय प्रोग्राम रखा है। लक्ष्य रखो अनुभवी बनाने का। सिर्फ सुनकर चले नहीं जायें, कुछ अनुभव करके जायें। आप लोग भी बाप के बने कैसे ? कुछ न कुछ अनुभव किया, चाहे प्यार किया, चाहे टोली खाके भी प्यार का अनुभव किया। बहनों के व्यवहार का अनुभव किया, बहिनों के मुस्कराने का, आजयान (खातिरी) करने का अनुभव किया, कुछ न कुछ अनुभव किया तभी बने हो। तो ऐसे अनुभवी बनाओ, अभी अखण्ड सेवा करो। बहुत सेवा रही हुई है। अच्छा।

आज के दिन मुबारक तो एक दो को दे दी ना। दूसरा क्या करते हैं ? गिफ्ट देते हैं। बापदादा के पास भी कितनी गिफ्ट आई है, कार्ड आये हैं बहुत, सुन्दर-सुन्दर गिफ्ट भेजी है, आप लोग उठकर देखना। तो वास्तव में जो भी आपके पास आये खाली नहीं जाये। चाहे मन्सा से शक्ति देने की गिफ्ट दो। चाहे वाणी द्वारा ज्ञान की गिफ्ट दो, कर्म द्वारा गुणों की गिफ्ट दो। लेकिन हर एक जो भी सम्बन्ध सम्पर्क में आते हैं उनको गिफ्ट जरूर दो। खाली हाथ नहीं भेजो, आप मास्टर दाता हो, मास्टर दाता के पास आवे और खाली हाथ जावे, यह नहीं हो। अखण्ड महादानी बनो। अखण्ड कह रहे हैं, कोई न कोई सेवा करते रहो चाहे मन्सा करो, चाहे वाणी करो, चाहे कर्म करो, चाहे सम्बन्ध सम्पर्क से करो। अखण्ड सेवाधारी।

कई बच्चों को बाप से रूहरिहान करते कई बच्चे सुनाते हैं कि अमृतवेले सुस्ती का वायब्रेशन थोड़ा होता है। उठते जरूर हैं लेकिन पावरफुल शक्तिशाली रूप से स्व के प्रति वा विश्व के प्रति शक्ति देना, वह थोड़ा सा थकावट की रेखा होती है। उस समय ऐसे नहीं समझो हम अपने सेन्टर के योग के कमरे में बैठे हैं, बाबा के कमरे में बैठे हैं, क्लास रूम में बैठे हैं, लेकिन ऐसे समझो विश्व की स्टेज पर बैठे हैं। हीरो पार्टधारी हैं और स्टेज पर बैठे हैं। अगर हीरो पार्टधारी थका हुआ पार्ट बजायेगा तो कैसा बजायेगा ? वायुमण्डल कैसे फैलेगा ? तो अमृतवेला भी पावरफुल बनाओ। नियम अच्छा निभाते हो लेकिन सुनाया ना अभी, योग सर्वशक्तियों से पावरफुल हो, योग अग्नि हो। ज्वालामुखी हो। तो यह तीन मास विशेष अमृतवेला भी नोट करना। बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हैं, प्यार के स्वरूप में भी होते हैं लेकिन ज्वालारूप कम होता है। अभी संस्कार का अंश मात्र भी नहीं रहे तब कहेंगे ज्वाला रूप योगी तू आत्मा। और साथ-साथ इस नये वर्ष में जो भी खजाने हैं, ज्ञान का खजाना, शक्तियों का, गुणों का, श्रेष्ठ

संकल्प का खजाना, एक तो सफल करो और दूसरा जमा करो। जमा भी करो, सफल भी करो। क्योंकि आपका टाइटल है, वरदान है सफलता के सितारे। है ना आपका टाइटल सफलता के सितारे ? सभी फलक से कहते हो सफलता हमारे गले का हार है। सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो सफलतामूर्त हो, सफल करो और जमा भी करो। सेवा कितनी भी करते हो लेकिन जमा का खाता हुआ या नहीं हुआ, उसकी निशानी या उसकी गोल्डन चाबी है - निमित्त भाव और निर्मान भाव, निर्मल वाणी। तीनों हैं ? तीनों में से एक भी कम है, तो सेवा कितनी भी करो जमा का खाता नहीं होता। बहुत थोड़ा, नाम मात्र। तो बापदादा ने यह भी चेक किया तो सेवा तो बहुत करते लेकिन जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं उसका कारण, कारण तो समझते हो ना! एक तो तीन विशेषतायें, निमित्त भाव, मैं पन का भाव मिक्स हो जाता है। मैं-पन आया, जमा नहीं हुआ। कितनी भी मेहनत करो, रात दिन भागदौड़, दिमाग चलाओ लेकिन निमित्त भाव, निर्मान स्वभाव, निर्मल वाणी, यह तीन नहीं है तो जमा नहीं। बहुत में बहुत 5 परसेन्ट जमा होता है। तो यह भी चेक करना तो जमा हुआ ? बापदादा बहुत सहज रास्ता बताते हैं, किसी से भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक पहले अपने शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो, आत्मा से बात करते हैं, कोई अलौकिक परिवार से बात करते हो, खुशी होनी चाहिए यह कल्प पहले वाली, हर कल्प भाग्य बनाने वाली कोटों में कोई आत्मा है। उस भाव से देखो। चाहे प्यादा हो, लेकिन है तो कोटों में कोई। मेरा बाबा तो कहता है। चाहे क्रोधी भी हो, स्वभाव अच्छा नहीं हो, लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो, श्रेष्ठ आत्मा के स्वरूप में देखो। तभी कार्य अच्छा होगा, जमा होगा। तो होमवर्क बहुत मिला है इस वर्ष का। सभी पूछते हैं ना क्या करें, क्या करें, क्या करें। बहुत होम वर्क मिला है। फिर बापदादा नम्बरवन सब होम वर्क में पास उसको सौगात देंगे। चाहे हजार भी हों तो भी देंगे, तैयार करायेंगे सौगात। करेंगी ना ? लेकिन सर्टीफिकेट लेंगे, ऐसे नहीं आप कहेंगे बाबा मान जायेगा, नहीं। साथियों से सर्टीफिकेट भी लेंगे। पहले मन का सर्टीफिकेट फिर ब्राह्मण परिवार के साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा है बाप का सर्टीफिकेट। तो लेंगे ना सर्टीफिकेट। हिम्मत है ना! जो समझते हैं हम सर्टीफिकेट लेकर ही छोड़ेंगे, दृढ़ निश्चय है, यह तो यूथ भी उठा रहा है। यूथ ग्रुप भी उठा रहा है। अच्छा है। डबल फारेनर्स भी उठा रहे हैं। यह सामने वाले नहीं उठा रहे हैं। हाथ लम्बा उठाओ, करके दिखायेंगे। फिर तो बहुत सौगातें तैयार करनी पड़ेंगी। आपकी तैयारी के पीछे सौगात तो कुछ भी नहीं है। पहले तो परमात्म दिलतख्त मिलेगा। लेकिन सौगात देंगे। अच्छा। अभी क्या करना है ?

सेवा का टर्न, ईस्टर्न, नेपाल और तामिलनाडु ज़ोन का है:- बापदादा ने देखा है कि जिस भी जोन को टर्न मिलता है, बड़े उमंग उत्साह से और बहुत बड़ी संख्या में इक्ट्ठे होते हैं, खुशी होती है, गोल्डन चांस मिलता है ना। तो देखो कितने हैं ? आधा लश्कर हाल में वही है। तीनों ज़ोन मिलाकर 5 हजार है। देखो एरिया भी बहुत बड़ी है। 3-4 स्टेट अलग-अलग एक ही जोन में हैं। 7 स्टेट का एक ज़ोन। अच्छा कितने भी हो लेकिन ईस्टर्न ज़ोन की विशेषता है कि सूर्य ईस्ट से ही निकलता है। निकलता है ना ? और ज्ञान सूर्य की प्रवेशता भी ईस्ट से हुआ है। अच्छा अभी बाकी क्या रहा है ? एक काम रह गया है। जब दो बातें कर ली हैं, सूर्य भी उदय हुआ, ज्ञान सूर्य भी उदय हुआ लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा ईस्टर्न से होना चाहिए। हाँ उसके लिए कुछ करो। ऐसा प्लैन बनाओ जो प्रत्यक्षता का झण्डा आरम्भ ही ईस्टर्न से हो, फैलेगा तो विश्व में ही। यहाँ बैठकर मीटिंग करना, क्या करें, हर एक ज़ोन समझता है हम निमित्त बनेंगे, प्रत्यक्षता का झण्डा फहराने के लिए। करो सब प्रयत्न करो लेकिन बापदादा कहते ईस्टर्न को नम्बरवन जाना चाहिए। जायेंगे ? प्रत्यक्ष करना पड़ेगा। आवाज फैलाना पड़ेगा। अच्छा है, है कर सकते हैं। एक-एक स्टेट में ग्रुप बनाओ, जो मन वाणी कर्म सम्बन्ध सम्पर्क में तीव्र पुरुषार्थी हो। फिर उन्हों का संगठन करो, एक दो में राय लो, दो तो हो जायेगा। करना तो पड़ेगा। तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। ऐसे नहीं ठीक

चल रहा है, जिज्ञासु आ रहे हैं, नहीं। लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का विशेष प्रोग्राम करना पड़ेगा। यह मेगा प्रोग्राम नहीं कह रहे हैं, वह तो किया बहुत अच्छा हुआ। लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा हो। बहुत स्टेट हैं, मिलके कर सकते हो। करेंगे पीछे वाले ? जो भी आये हैं करेंगे ? कितने टाइम में करेंगे ? प्लैन तो बनाओ। बापदादा प्लैन देखेगा ना। दिल्ली वाले भी सोचते हैं कि दिल्ली से प्रत्यक्षता का झण्डा हो। धरनी तो है। लेकिन प्लैन बनाओ। कैसे प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। उसके लिए क्या सोचा है ? प्रोग्राम तो करते हो, वह तो करना ही है लेकिन यह आवाज कोई भी रेडियो खोले, कोई भी टी.वी. का स्विच खोले तो यह आवाज आवे **''हमारा शिवबाबा आ गया''।** तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराया। अच्छा मीडिया वाले सोच रहे हैं कि हम करेंगे, कोई भी करो लेकिन सभी रेडियो में, चाहे विदेश में, चाहे देश में जहाँ भी खोलें स्विच यही आवाज आवे। इसको कहते हैं प्रत्यक्षता का झण्डा। कौन करेगा ? विदेश करेगा, विदेश में होगा ? करो, कोई भी करो, फर्स्ट प्राइज लो। यह धूम मचनी चाहिए, आ गया, आ गया, आ गया। अच्छा है संख्या तो बहुत है, अभी करना कमाल। नम्बर तो फर्स्ट लेना अच्छा है ना। सेकण्ड थर्ड में क्या मजा। फर्स्ट। अच्छा। बहुत अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। बापदादा ने देखा है सहयोगी एक दो के बहुत अच्छे हैं। समाचार मिलता है, जहाँ भी प्रोग्राम होता है वहाँ एक दो के सहयोगी बनके कार्य सफल कर देते हैं इसकी बापदादा विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी जलवा दिखाओ। एक गीत है ना आप लोगों का - जलवा देखा वह तेरा हो गया। अभी यह गीत मुख से गावें, दुनिया गावे। अच्छा।

ज्युरिस्ट विंग: अच्छा - प्लैन बना रहे हैं ? (गीता का भगवान सिद्ध करेंगे) प्लैन बहुत अच्छा है लेकिन गीता का भगवान सिद्ध करने के लिए पहले आपस में राय करो, प्वाइंटस निकालो, यह अच्छा है लेकिन कोई ऐसे अथॉरिटी वालों को भी साथ में मिलाओ। उनको पहले सैटिस्फाय करके उन्हों को साथी बनाओ। दो चार ऐसे साथी हों जो इस बात को सिद्ध करने में साथी बनें। गीता की अथॉरिटी रखने वालों को साथी बनाओ। (इसके लिए दो जज तैयार हैं) अच्छा है, प्लैन बनाओ, फिर दिखाना।

डबल विदेशी 45 देशों से आये हैं:- अच्छा बच्चे भी हैं, यूथ भी हैं। डबल विदेशी को बापदादा टाइटल देते हैं डबल तीव्र पुरुषार्थी क्योंकि विदेशियों के संस्कार हैं जो सोचते हैं वह करते हैं, चाहे उल्टा हो, चाहे सुल्टा हो। करने में हिम्मत रखते हैं। तो इसी हिम्मत को आध्यात्मिक पुरुषार्थ में और सेवा में कार्य में लगाओ। बापदादा ने देखा है कि प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में लक्ष्य अच्छा रखते हैं। तो हो सकता है कि इन्डिया को जगाने के लिए पहले आवाज विदेश से निकले। विदेश का आवाज इन्डिया में आवे यह भी हो सकता है ना! बापदादा को याद है पहले शुरू शुरू में जब इन्डिया में बड़े प्रोग्राम होते थे तो विदेश का कोई न कोई अथॉरिटी वाला आता था और वह भाषण करता था अखबारों में आता था। अभी बहुत समय से ऐसे विशेष सभा के बीच में नहीं आये हैं। अलग आये हैं। रिट्रीट होता है प्रोग्राम भी चलता है लेकिन जैसे पहले विशेष आत्मायें संगठन में बोलती थी, ऐसा अच्छा होता है। अभी 70 साल का प्रोग्राम बनायेंगे ना, उसमें कोशिश करो। क्योंकि अखबार वाले इन्ट्रेस्ट से लेते हैं। बाकी वृद्धि अच्छी हो रही है, प्रोग्राम्स भी अच्छे कर रहे हो उसकी मुबारक है। पहले संख्या वहाँ भी प्रोग्राम में कम आती थी, अभी संख्या अच्छी आती है। और अच्छे-अच्छे वारिस क्वालिटी भी निकल रही है। लेकिन तीन मास में विदेश वाले नम्बरवन लेंगे ? फर्स्ट नम्बर लेंगे ? जो लेंगे वह हाथ उठाओ। तीन सर्टीफिकेट लेने पड़ेंगे। हिम्मत रखो। विदेशियों के लिए सोचते हैं इन्हों का कल्चर अलग है लेकिन विदेश वाले इन्डिया से भी आगे नम्बर ले सकते हैं। महान तपस्वी बनने में नम्बरवन। हो सकता है ना! होना ही है। हो सकता है। क्योंकि विदेशियों में दृढ़ता का संस्कार है, अभी इसमें सिर्फ दृढ़ता का संस्कार यूज़ करो, हो जायेगा। ठीक है ना! नम्बरवन लेना है ना! अच्छा। विदेशी हर टर्न में आते हैं तो सभा सज जाती है, इन्टरनेशनल हो जाती है ना। बहुत अच्छा। अच्छा यह सामने वाला ग्रुप (सिन्धी ग्रुप) क्या करेगा ? लाइन में तो अच्छे खड़े हो, वृद्धि भी अच्छी कर रहे हो इसकी तो मुबारक है, अच्छा,

बापदादा पूछते हैं कुछ समय पहले इसी ग्रुप ने कहा था, कि हम एक-एक एक ऐसा तैयार करके लायेंगे, याद है ? एक-एक ने एक को तैयार किया है, अपने से भी आगे ? जिसने किया है वह हाथ उठाओ और यहाँ तक लाया है वह हाथ उठाओ। अच्छा। निभाया है, मुबारक हो, उसकी बहुत बहुत मुबारक हो लेकिन अभी और भी लाना पड़ेगा। वृद्धि तो चाहिए ना और जहाँ सिन्ध में बाप आया, वहाँ के देश वाले हमजिन्स को तो जगाना है ना! तरस तो पड़ता है ना! फलक से आप कहते हो ना, शिवबाबा आया तो सिन्ध में ना! तो करना, कमाल करके दिखाना। अच्छे अच्छे हैं, कर सकते हैं। क्या कहते हैं ? (अभी नहीं करेंगे तो कभी करेंगे, बाबा की बहुत बहुत दुआयें हैं तो जरूर करेंगे) ब्राह्मण परिवार में टोटल कितने सिन्धी होंगे ? हिसाब में तो थोड़े हैं। (इस ग्रुप में 32 आये हैं) अभी कम से कम 100 के करीब तो लाओ। 100 नहीं ला सकते हो ? (108 लायेंगे) छोटे बच्चे, छोटे बच्चों को अपने दोस्तों को लाओ। बापदादा खुश है। हिम्मत रख रहे हैं और मदद भी मिल रही है। इसलिए आप भी खुश, बाप भी खुश।

कलचरल विंग:– क्या प्लैन बनाया है ? कोई ऐसे निकालो जिसका आवाज फैले। हर एक ग्रुप को माइक, माइट वाला तैयार करना है। हो जायेगा। क्योंकि आजकल तो बहुत चारों ओर कलचरल बहुत अच्छा चलता है, सभी का इन्ट्रेस्ट भी है। सिर्फ ऐसा आवाज फैलाने वाला कोई निमित्त बनेगा तो अनेकों का कल्याण हो जायेगा। बाकी अच्छा है प्रोग्राम बनाते रहते हो, करते रहते हो, जितना प्यार से करते हैं उतना अच्छा ही होता है, रिजल्ट भी अच्छी। अभी ऐसा कोई माइक निकालके लाना, जिसकी आवाज सुन करके अनेकों का कल्याण हो। बहुत अच्छा और आगे बढ़ते चलो।

इन्टरनेशन यूथ ग्रुप :– अच्छा यूथ वाले भी आवाज फैलाने के लिए प्रोग्राम अच्छे बना रहे हैं। और स्व पुरुषार्थ के लिए भी अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं। बापदादा ने समाचार सुना है, खुशखबरी भी सुनी कि परिवर्तन किया है और आगे भी परिवर्तन कायम रखेंगे। फरिश्ता स्वरूप के धारणा के समीप आ रहे हैं। तो जो अपने में परिवर्तन किया, वह वहाँ जाके भी रहेगा या थोड़ा-थोड़ा कम हो जायेगा ? रहेगा। जो समझते हैं सदा रहेगा, वह हाथ उठाओ। क्योंकि बापदादा ने रिजल्ट सुनी है, कि परिवर्तन रीयलाइजेशन अच्छी की है और यूथ ग्रुप ऐसा हो जाए सदा के लिए तो बहुत विश्व में नाम करेंगे। अच्छा उमंग-उत्साह दिखाया है। बापदादा बच्चों की हिम्मत और उमंग-उत्साह पर खुश है लेकिन सदा शब्द याद रखना। ब्राह्मण आत्मायें जो चाहे वह कर सकती हैं। और अभी तो बापदादा ने होम वर्क दे दिया है, देखेंगे, कितने यूथ ग्रुप इसमें नम्बर लेते हैं, प्राइज लेते हैं। लेंगे ना प्राइज़ ? अच्छा। (33 देशों के 150 यूथ ने भाग लिया है) अच्छा है। हर वर्ष करते रहते हैं यह बहुत अच्छा है। आगे बढ़ रहे हैं यह भी अच्छा। अच्छी मेहनत की है।

इन्टरनेशनल चिल्ड्रेन ग्रुप: (बच्चों ने गीत गाया बाबा आपने कमाल कर दिया) आप भी कमाल करके दिखाना। बाप ने कमाल की, अभी आपको करनी है। बैठ जाओ।

तामिलनाडु ज़ोन भी सेवा में आया है:– अच्छा है, है छोटा लेकिन शक्ति अच्छी है। तामिलनाडु ने एक ऐसा वी.आई.पी निकाला, निकाला तो तामिलनाडु ने, जो आज प्रेजीडेंन्ट है वह कनेक्शन में तो तामिलनाडु से आया, तो अच्छा जैसे एक निकाला ना ऐसे अभी और निमित्त बनाओ। उसका आवाज भी कुछ तो काम कर रहा है ना तो ऐसे अगर निमित्त बनाते रहेंगे तो छोटा सुभान अल्ला हो जायेगा। वैसे संख्या तो काफी है, अच्छी संख्या है। टोटल कितने हैं (12 हजार भाई बहिनें हैं) अच्छा है, छोटा भले हो लेकिन कमाल तो अच्छी की है ना, तो बापदादा को अच्छा लगता है। प्लैन बनाते जाओ, करते जाओ। सेवा में भी सहयोग अच्छा दिया है। गोल्डन चांस लिया है और गोल्डन दुनिया लाने के निमित्त बनना ही है। बहुत अच्छा। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के कार्ड, पत्र और ईमेल द्वारा भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा मुबारक के समाचार पहुंचे हैं, बापदादा, जिन्होंने भी मुबारक भेजी है, उन सभी को पदम-पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। बापदादा तो दूर बैठे बच्चों को सम्मुख ही देख रहे हैं। कितने उमंग उत्साह से अपने अपने स्थानों पर बैठे हैं, सुन रहे हैं, यह देख करके बापदादा भी खुश है, बच्चे भी खुश हैं, और मुबारक ले रहे हैं, दे रहे हैं। बापदादा ने समाचार सुना कि रात को भी दिन बना देते हैं। तो ऐसे बच्चों को कितने बार दिल की दुआयें और प्यार दें। उमंग उत्साह अच्छा है और अच्छे ते अच्छा रहेगा। अभी दूर बैठे वाले सभी अपने को प्राइज में नम्बरवन बनाना। अच्छा।

जो पहली बार आये हैं वह उठो, अच्छा है बापदादा सभी बच्चों को देख देख हर्षित हो रहे हैं। जो नये आये हैं वह और ही लास्ट सो फास्ट, फर्स्ट जाके दिखाना। अच्छा है, वृद्धि तो हो रही है। हर टर्न में नये-नये आते हैं। अभी सिर्फ अमर रहना औरों को भी अमर बनाना, अमरभव का वरदान सदा अपने आपको देते रहना। अच्छा। मातायें ज्यादा हैं, संगम पर माताओं का टर्न है। पाण्डव भी कम नहीं हैं, अच्छे हैं। अच्छा, पाण्डव बैठ जाओ, मातायें खड़ी रहो। मातायें ज्यादा हैं। अच्छा। आज तो सभी को बैठना ही है।

चारों ओर के सदा उमंग-उत्साह में आगे बढ़ने वाले, सदा हिम्मत से बापदादा की पदमगुणा मदद के पात्र बच्चों को, सदा विजयी रत्न हैं, हर कल्प में विजयी बने थे, अब भी हैं और हर कल्प में विजयी हैं ही हैं। ऐसे विजयी बच्चों को सदा एक बाप दूसरा न कोई, न संसार की आकर्षण, न संस्कार की आकर्षण, दोनों आकर्षण से मुक्त रहने वाले, सदा बाप समान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- (दादी जी से) सबको दृष्टि द्वारा, अपने योगयुक्त स्थिति द्वारा सन्तुष्ट कर देती हो। सभी थोड़े टाइम में भी खुश होके जाते हैं। यह बहुतकाल की जो कमाई जमा की है ना, उसका फल मिल रहा है। (हजारों से मिलती है) अच्छा पार्ट बजा रही हो। (मोहिनी बहन ठीक होती जा रही है) होना ही है। (परदादी से) आपका ज़ोन सबसे बड़ा है। और अच्छा ज़ोन बड़ा भाग्यशाली है। (बेटी किसकी हूँ) नशा है इसको। और सब आपको देखकर खुश हो जाते हैं। आपकी खुशी को देखकर सब खुश हो जाते हैं। आपको मूर्ति के रूप में देखते हैं। बहुत अच्छा। (शान्तामणी दादी से) सभी अपना-अपना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। कुछ भी नहीं करो ना, आप लोगों की हाजिरी सब कुछ करती है। बाप का रूप देखने में आता है ना आप द्वारा तो सभी खुश हो जाते हैं। (मनोहर दादी ने मौन धारण किया है) बहुत भाषण किये हैं, सर्विस में आलराउन्ड में इनका नाम पहले था, बापदादा ने मुरलियों में भी वर्णन किया है। थोड़ा ट्रीटमेंट करा लो ठीक हो जायेंगी, ऐसी कोई बड़ी बात नहीं है। सब याद तो करते हैं ना, आपका विशेष पार्ट कोई नहीं बजा सकता, हिस्ट्री कोई नहीं सुनाता है जैसे आप सुनाती हो, तो अपना पार्ट बजाओ। सब ठीक हो जायेगा, कोई बात नहीं। (रतनमोहिनी दादी से) यह चक्र लगाने वाली चक्रवर्ती है, अच्छा पार्ट बजा रही है, क्योंकि आदि रत्न है ना, आदि रत्न की वैल्यु होती है। आप लोगों का हाजिर होना ही बापदादा की याद दिलाता है।

2006 वर्ष के शुभ-आगमन पर रात्रि 12 बजे प्यारे अव्यक्त बापदादा ने नये वर्ष की सब बच्चों को बधाईयां दी

सभी बच्चों ने बहुत-बहुत प्यार से नये वर्ष को मनाया। मनाया भी और साथ में बापदादा से वायदा भी किया कि संस्कार मिटायेंगे भी। तो मिटाना भी है और सभी को शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वायब्रेशन से मिलाना भी है। मिटाना, मिलाना और मनाना। सभी बातें हुई। अभी खूब सारा साल हर्षित रहना और सभी को हर्षित करना। मैं सन्तुष्ट आत्मा हूँ, सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। यही मनाना है, यही बाप का प्यार है, यही दुआयें हैं। यही यादप्यार है। सभी को नमस्ते।